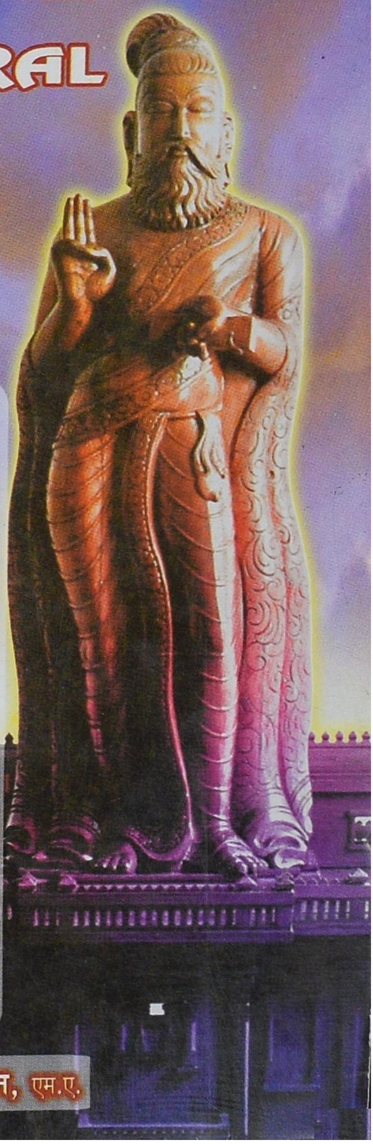
तिरुक्कुरळ
திருக்குறள்
THIRUKKURAL



तमिल वेद के नाम से, तिरुक्कुरळ विख्यात ।
वल्लुव-वाणी सब ओर, नादित हो दिनरात ॥

नर-नारी सब के लिए, कुरळ सदा पठनीय ।
ग्रंथालय में कुरळ की, शोभा है कमनीय ॥

कुरळ पढ़े बिनु मनुज का, जीवन हो बेकार ।
धर्म अर्थ औ काम का, उसमें प्रकटित सार ॥

बस-विमान औ रेल में, कुरळगीत उत्कीर्ण ।
आम स्थान में कुरळ के, गाने हैं उत्कीर्ण ॥

पुत्र, मित्र, गृहिणी, अधिप, आदि कुरळ में ज्ञेय ।
राजनीति, धन, कामना, प्रभृति कुरळ में ज्ञेय ॥

विद्यालय कॉलेज में, कुरळ-पाठ हो गेय ।
जीवन के हर क्षेत्र में, कुरळ-विषय विज्ञेय ॥

... कुरळ गीत मशहूर ।
...खती कुरळ-वाक् मशहूर ॥

... : विद्वान टी.ई.एस. राघवन, एम.ए.

तिरुक्कुरल
திருக்குறள்
THIRUKKURAL

लेखक व गीतकार:
विद्वान टी.ई.एस. राघवन, एम.ए.

VASANTHA BOOK PUBLISHER
1, Hanumantharayan Koil Street,
Triplicane, Chennai - 5.
Phone : 28442126

Edition : 2003

Price Rs. **100.00**

Available at :

VASANTHA BOOK PUBLISHER
1, Hanumantharayan Koil Street,
Triplicane, Chennai - 600 005.
Phone : 28442126

Printed at :

Sri Maruthy Laser Printers
173, Peters Road,
Chennai - 600 014. ✆ 28524256

This book was released
at the function "**Manjari**"
of the Dept. of Hindi,
M.O.P. Vaishnav College
for Woman, Chennai
on 11th August 2003
by
His Holiness Jagadguru
Sri Mathureshwarji Maharaj
of Vadodara.

The first copy was
received by
Sri. P. Haridas,
Secretary of the College.

BIO-DATA

Name	:	T.E.S. RAGHAVAN
Address	:	1, H.R. Kovil Street, Triplicane, Madras - 600 005. Phone : 28442126
Age	:	70 Years
Qualifications	:	Well-versed in Tamil, Sanskrit, Hindi and English Languages. Meemamsa Siromani, Vidwan, M.A. from Mysore University, (Hindi). Hindi Pandit (Retd.) S.M.B. Jain Hr. Sec. School. Madras - 600 005. Honorary principle, Triplicane Hindi Vidyalaya, Madras - 600 005.
Award	:	"RATNA DEEPA" by Basha Sangam, Madras - 600 017. Also honoured by D.B.H.P. Sabha, Madras - 600 017.

मडल - रीति - दोहा - 1131

प्रियतमा के घरवालों और गाँववालों पर दवाब डालने का प्रियतम द्वारा अपनाया जानेवाला एक विशेष कष्टदायक उपाय। ताड के नुकीले पत्तों से बने घोडे की नंगी पीठ पर बैठकर प्रियतम गाँव की वीथियों में घूमता हुआ अपने प्यार को ज्ञापित करता था। उसके सच्चे दृढ प्यार के आगे लोगों को झुकना पड़ता और लडकी की शादी लडके से कर दी जाती थी ॥

SYNOPSIS OF THE BOOK ENTITLED

Saint Thiruvalluvar is the author of the ancient Tamil Classic known as THIRUKURAL. It consists of three part containing in all 1330 verses.

The first part deals with righteous conduct (Arathupal) of Dharma, the second part deals with wealth (polity), Porutpal or Artha and the third with Love (Kamathupal) or Kama which are the three of the four Purusharthas that mankind should strive for in life.

The fourth Purushartha viz. Moksha is not separately dealt with by the author in the treatise. However, if a person should steadfastly adheres inlife to the code of moral and ethical coduct elaborately dealt with in the first part he can, surely expect (Moksha) liberation from the cycle of birth and death. The second part extensively deals with the rights and duties of sovereigns, ministers and citizens and also the ways and means to be accepted for ensuring economic prosperity of the people. The third part shows the ways and methods for obtaining the maximum good in conjugal life.

It may be stated that the author's ideas and ideals propagated in his work are quite in conformity with the essential fundamental moral ethical, philosophical truths and tenets enshrined in the ancient religious and secular Treasures like the Manu and other Smrithis, Kautilyas's Artha Sastra Vatsayana's Kama Sutras.

·The topics dealt with in the Kural such as the classification of people in four castes, the four ashramas, the law of Karma, rebirth, destiny or fate, free wills, heaven, hell etc. lend credence to the view that Thirukkural is a pleasing blend of all that is good in the various religious like Hinduism, Budhism, Jainism. etc. and the moral and ethical principle Centaned in Kural are intended for Universal application.

I shall feel happy if all the govt. Depts State and Central make available to their employees copies of Tirukkural So that they may be benifited by the ethical and moral messages contained therein.

Chennai **T.E.S. RAGHAVAN, M.A.**

28-1-2003 *Author*

तमिलवेद तिरुक्कुरळ

हमारे राष्ट्रीय चिंतन, दर्शन, धर्म, विचार व्यवहार की सुदीर्घ परंपरा की एक महत्वपूर्ण इकाई तिरुवळ्ळुवर है। तमिलनाडु में जन जन के हृदय पर इस मुनि के काव्य और विचार की छाप है। वे आदर्शोन्मुख तथा व्यावहारिक ज्ञान के आधार हैं। इस तरह के विद्वान की विचार-धारा को राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने का यह छोटा प्रयास है। जिन्दकी की व्याख्या अर्थात् गार्हस्थ्य, सन्यास, राजनीति, मान- इन सब के लक्षणों को तिरुक्कुरळ में प्रतिपादित किया गया है। वल्लुवर का साहित्य मानव-जीवन का विवेचन है। तिरुवळ्ळुवर का काव्य मुस्तक है। यह क्रमबद्ध रचना है। यह मुक्ति-प्राप्ति के लिए एक प्रशस्त सोपान है। तिरुक्कुरळ मनुष्य समाज के हित के लिए एक आदर्श रचना है। इस रचना के अद्भुत सौन्दर्य तथा गहन विचारों के कारण इसे "तमिल वेद" कहा जाता है।

टी.ई.एस. राघव



The Simple, unassuming scholars have been the inspiration and strength of our country, Bharat. Valluvar, a great scholar who lived about 2000 years ago has contributed to the rich literary heritage of our country "Bharat", more particularly in the southern India, by his Magnum Opus "Thirukural". Written in simple language, the poetry touches the heart of the most common man. Kural has answers for all the questions of a questioning mind, even in todays context a compendium of wisdom, it is, indeed.

I congratulate Sri T.E.S. Raghavan for undertaking the task of translating "Thirukural" into Hindi. Knowledge can have no limits. It is appropriate that the wisdom of Thirukural reaches the Hindi speaking multitudes of people in the country. Mr. Raghavan has several books and translations to his credit including "Tees Din me sikho Tamil" which was reprinted 33 times. Yet he is a very simple, unassuming person, does not have the knack of pushing himself up. It is a tragedy that scholars are very rarely recognised during their life times but encomiums are paid after the life times.

As proud Indians, let us recognise, appreciate and applaud the efforts of scholars like these during their life times and make our country proud.

Yours in the cause of Bharat.

P. HARIDAS

वाङ्मय - जगत्

हैदराबाद

तिरुक्कुरळ: वंदनीय प्रयास ''दक्षिण समाचार''

तिरुक्कुरळ तमिल साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नीतिग्रंथ माना जाता है । जिसका रचनाकाल ई. प्रथम शताब्दी में पड़ता है । इस काव्य के रचियता सुप्रसिद्ध संत तिरुवल्लुवरजी हैं ।

तिरुक्कुरळ के तीन भाग हैं - धर्म, अर्थ तथा काम । धर्मकांड में 38, अर्थकांड में 70 तथा कामकांड में 25 अध्याय हैं । प्रत्येक अध्याय में 10 कुरळ के हिसाब से संपूर्ण रचना में 1330 कुरळ हैं । 'तिरु' आदर सूचक विशेषण है । जैसे हिंदी में 'श्री' कहते हैं 'कुरळ' तमिल के एक छंद का नाम है। जैसे हिंदी में 'दोहा' । तिरुक्कुरळ में वर्णित विषय सर्वकालीन तथा सर्वदेशीय है । हाल में श्री टी.ई.एस. राघवन द्वारा हिंदी में प्रस्तुत तिरुक्कुरळ ग्रंथ पढ़कर व्यक्ति ज्ञानवान और सुशीलता के लक्षणों को ग्रहण कर सकता है ।

जो शिक्षा कंठस्थ हो जाए तो वह चिरकाल तक अधिक उपयोगी सिद्ध होती है । अत एव पद्य शैली में यह ग्रंथ अनूदित है । इस सुंदर कार्य को हिंदी के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित करने के लिए वास्तव में लेखक व गीतकार श्री टी.एस. राघवन बधाई के पात्र हैं । इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने एक स्मरणीय योगदान हिंदी को दिया है । इसका प्रचार-प्रसार सभी प्रदेशों में होना चाहिए ।

''दक्षिण समाचार'' पत्रिका 23-4-2003 - हैदराबाद

ஹிந்தி குறள் பயனுள்ளது

'வள்ளுவன் தன்னை உலகினுக்கே தந்து வான் புகழ் கொண்ட தமிழ்நாடு' என்றான் பாரதி. அந்த வள்ளுவப் பெருந்தகையின் 1330 குறட்பாக்களையும் ஹிந்தி மொழிக் காரர்களுக்கு அறிமுகப்படுத்த பகீரத முயற்சி செய்திருக்கிறார். சமஸ்கிருதம், தமிழ், ஹிந்தி ஆகிய மூன்று மொழிகளிலும் புலமை பெற்ற ஹிந்தி ஆசிரியராக பணிபுரிந்த இந்நூலாசிரியர் தி.ஈஎஸ். இராகவன்.

கடுரகந் துளைந்து ஏழ்கடலைப் புகுத்திய திருக்குறளின் கருத்துக்களை பிறமொழிகளில் விரிந்துரைக்கத்தான் முடியுமே தவிர, குறளைப் போலவே ஈரடி வெண்பாக்களாக அமைப்பது மிகவும் கடினம். இந்நூலாசிரியர் துளஸிதாஸ், கபீர்தாஸ், நானக், சூர்தாஸ் ரஹீம் போன்ற ஹிந்தி கவிஞர்களின் ஈரடி வெண்பா முறையான 'தோஹா' பாணியைக் கையாண்டு எளிய ஹிந்தியில் சிறப்பாக மொழி பெயர்த்திருக்கிறார். கருத்துக்கள் சிதையாமல் ஓசை நயமும் கெடாமல் புதுமையான முறையில் குறள் பாக்களை மொழி பெயர்த்திருப்பது போற்றத்தக்கது. சமஸ்கிருதம், ஹிந்தி, ஹிந்துஸ்தானி சொற்களை தாராளமாகக் கையாண்டு பொருத்த மாகச் சேர்த்து ஈரடியின் அழகு நடையைக் கொண்டு வந்திருக் கிறார். குறிப்பாக ஊடலுக்கு 'பிரணய கலஹம்' என்றும், 'நோய் நோக்கு', 'மருந்தாகும் நோக்கு' என்பதற்கு 'ரோக்கா முல்' 'ரோக்ஹரன் காமூல்' என்றும், 'இல்லாள்', மனையாள் என்பதற்கு பத்தினி, 'கிரஹினி' என்று பொருத்தமான சொற்களை கருத்தாழம் சிதையாமல் கையாண்டிருக்கிறார். 'அணிச்சம்' என்பதை குறிப்பிலாவது விளக்கியிருக்கலாம்.

ஹிந்தி அறிஞர்கள் இப்புத்தகத்தைப் படித்து ஆக்கபூர்வ மான யோசனைகளைக் கூறி தமிழரின் ஹிந்தி ஆர்வத்திற்கு ஊக்கமளிப்பதுடன், கேந்திரீய வித்தியாலங்களும் கல்வி நிறுவனங்களும், நூலகங்களும் இந்நூலை வாங்கி உற்சாகமூட்ட வேண்டும். பரிசுகள் வழங்குவதற்கும் பயனுள்ள நூல் இது.

மதிப்புரை : தினமணி - **ஹரி**

धर्म काण्ड में वर्णित विषय

1. देव स्तुति, बरसात औ सन्यासी-गुण गान ।
किया गया है खूब ही, तथैव धर्म-बयान ।।

2. गृहस्थ, गृहिणी, सुत तथा, प्रेम, अतिथि सत्कार ।
मीठीबात, कृतज्ञता, तटस्थ का आचार ।

3. संयम, शिष्टाचार, औ, परदाराननुराग ।
सह्यय-भाव, अनसूयता, उत्कठ ही अनुराग ।।

4. अपिशुनगुण, बकवाद के, निराकरण का वाद ।
पाप-भीरूता और की, सहायता का वाद ।।

5. दानी का गुण-गान, यश, दयालु का आचार ।
आमिष-वर्जन, तप तथा, मिथ्या का आचार ।।

6. स्तेयरहितता, सत्य, औ अमन्यु, अवध्य भाव ।
हनन-रोध, चिरहीनता, सन्यासी का भाव ।।

7. तत्व ज्ञान, तृष्णामयी गुण का निरसन वाद ।
भाग्यवाद का जिक्र भी, धर्मकाण्ड में ज्ञात ।।

अर्थ काण्ड में वर्णित विषय

8. नृप-गरिमा, शिक्षा तथा, अनध्ययन का भाव ।
श्रवण, बुद्धिसमवेतता, दोष-निवारण भाव ।।

9. सज्जन-संगति श्रेष्ठता, दुर्जन संगनिषेध ।
सुविचारित कृति निपुणता, अविमर्शन प्रतिषेध ।।

10. अपना बल का बोध, औ, सुसमय का उद्बोध ।
स्थान-बोध, विश्वास दृढ, रखना करके शोध ।।

11. कार्य सौंपना परख कर, बांधव का परिपाल ।
अप्रमाद, शासन उचित, कटु शासन विकराल ।।

12. ना करना कृति भयकरी, दया-दृष्टि, चर गुप्त ।
उत्साही की भावना, आलस गुण, अरि गुप्त ।।

13. उद्यम, दुख में बिन व्यथा, रहना, अमात्यभाव ।
वच पटुता कृति-दक्षता, कर्म-शुद्धि का भाव ।।

14. दृढ रहना है कर्म में, कार्य-करण की रीति ।
दूत तथा भूनाथ से सदाचार की रीति ।।

15. इंगितविद की भावना, जनसंसद का ज्ञान ।
संसद में निर्भीकता, राष्ट्र, दुर्ग का ज्ञान ।।

16. वित्त, सैन्य की श्रेष्ठता, सैनिक का धृति भाव ।
मैत्री, मैत्री की परख, चिर मैत्री का भाव ।।

17. बुरी मित्रता, नेह छल, मूढ भाव अभिमान ।
विभेद, रिपु को श्रेष्ठता, शत्रु शक्ति का ज्ञान ।।

18. अन्तर रिपुता, वृद्ध का, ना करना अपचार ।
वश होना है रमणि का, वेश्या का आचार ।।

19. सुरा पान वर्जित सदा, जुआ, चिकित्सा भाव ।
कुलीनना, गौरव तथा, महानता का भाव ।।

20. सभी गुणों की पूर्णता, सभ्यों का आचार ।
निष्फल धन, लज्जा तथा, कुल गौरव आचार ।।

21. कृषि, निर्धनता, याचना, भीख माँग की भीति ।
ओछापन ये विषय सब, वर्णित विस्तृत रीति ।।

22. अर्थकाण्ड में राज्यके, सभी अंग निर्णीत ।
अर्थ विषय इस काण्ड में, सर्वोपरि निर्णीत ।।

काम काण्ड में वर्णित-विषय

23. सुन्दरता की वेदना, इंगित का पटु-ज्ञान ।
सुयोग का आनन्द औ, शुभ लावण्य-बयान ।।

24. प्रेम-प्रशँसा, लाज के, उत्सर्जन की उक्ति ।
प्रवाद कहना, विरह की, पीडा सुजनित उक्ति ।।

25. विरह-निशा की कटु व्यथा, दृग के आतुर भाव ।
पीलापन की वेदना, विरह जनित दुख-भाव ।।

26. सुमिरण में एकान्तता, पीडा स्वप्न विभाव ।
संध्या दर्शन से व्यथित, होना विवर्ण भाव ।।

27. मनसे कहना, धैर्य का, भंजन, उत्कट चाह ।
इंगित से उद्‌बोध औ, पुनर्मिलन की चाह ।।

28. अपने दिल से रूठना, मान, मान का भेद ।
प्यार लोक में मान का, तोष, नहीं है खेद ।।

29. बाहर भीतर गेह के तिरूक्कुरळ का घोष ।
सुनकर जनता रोज़ ही पावे असीम तोष ।।

कुरळ की गरिमा

30. प्रसिद्ध "उत्तरवेद" से तिरूक्कुरळ है ग्रंथ ।
"तमिल वेद" से ख्यात भी तिरूक्कुरळ है ग्रंथ ।।

31. लखने में तो "कुरळ" है धरता छोटा रूप ।
भावबोध में यह बड़ा, साबित हुआ अनूप ।।

32. "देव ग्रंथ" के नाम से तिरूक्कुरळ विख्यात ।
"आम निगम" के नाम से तिरूक्कुरळ विख्यात ।।

33. "सत्य उक्ति" के नाम से तिरूक्कुरळ मशहूर ।
पुराण-पुस्तक नाम से तिरूक्कुरळ मशहूर ।।

34. दैव सुधी, प्राचीनकवि, महामहिम विद्‌वान ।
वल्लुव के अभिधान ये आदिम कवि धीमान ।।

35. आदि पुत्र, भगवनतनय, वल्लुव थे पटकार ।
उनकी पत्नी वासुकी, साध्वी रही उदार ।।

36. तिरूक्कुरळ को बौद्ध-कृति कहते हैं कुछ लोग ।
तिरूक्कुरळ को जैन-कृति कहते हैं औ लोग ।।

37. शिवपूजक का कथन है सन्त शैव का ग्रंथ ।
हरिपूजक का कथन है यह वैष्णव का ग्रंथ ।।

38. जो भी हो हम बोलते नीति शास्त्र का ग्रंथ ।
तिरूक्कुरळ को जगत में सब से उत्तम ग्रंथ ।।

39. राजनीतिविद के लिए, यह है परम सहाय ।
सब नर इससे खूब हैं, करते प्राप्त सहाय ।।

40. मेरू मंथर पुराण औ तिरूक्कुरळ की बात ।
दोनों ही हैं एक-सी "नायनार" का वाद ।।

41. क्या बालक, क्या नवयुवा, समाज का हर अंग ।
क्या ना जाने कुरल से, हित या अनहित रंग ।।

42. "कुरळ" "कुरळ" यों कूजते, मधुर शब्द समवेत ।
वल्लुव-पिक को नमन हो, आगत कविता-खेत ।।

43. कविता-वन में विचरते वल्लुवसिंहनिनाद ।
सुनकर हरेक आदमी, पाता है आह्लाद ।।

44. जो पीता है कुरळगत, विषयसिन्धु की धार ।
उस वल्लुव मुनि देव को, मम सलाम शत बार ।।

45. पानी बरसें समय पर, भूमि शस्य से युक्त ।
क्षोभ रहित हो देश यह, जीव भीति से मुक्त ।।

46. मुनि मनुकी स्मृति-नीति से उद्धृत हैं बहु भाव ।
मनु-वल्लुव में साम्य के विद्यमान हो भाव ।।

47. कालिदास के काव्य हैं उपमाओं से ख्यात ।
उपमा-पद-लालित्य से कुरळ काव्य तो ख्यात ।।

48. सद्गुण अवगुण बन्धुता, विरह मिलन के भाव ।
तिरूक्कुरळ में उल्लिखित, सभी रसों के भाव ।।

49. महासुधी वाल्मीकि-से, वल्लुव भी विद्वान ।
महापुरूष शुकदेव-से, वल्लुव भी धीमान ।।

50. कर्ण मधुर है कुरळ कृति, इसमें नहि संदेह ।
वल्लुव की वाणी सदा, गूँज उठें हर गेह ।।

51. जीवन भर नर के लिए कुरळ ग्रंथ पठनीय ।
कुरळ-उक्ति हर बात में मानस में मननीय ।।

52. भाषण देने के लिए, कुरळ-शास्त्र उपयुक्त ।
लेखन-परचा के लिए, कुरळ वाक्य उपयुक्त ।।

53. विद्यार्थी-समुदाय को कुरळ नीति सुख देय ।
अध्यापक-समुदाय को कुरळ तत्व आदेय ।।

54. विद्यालय में कुरळ का ज्ञात मुख्य हो स्थान ।
ग्रंथालय में कुरळ का सुविदित ऊँचा स्थान ।।

55. जीवन के हर क्षेत्र में, वल्लुव का अभिधान ।
दुनिया के साहित्य में, माना कुरळ महान ।।

56. सरल कुरळ है समझने, सरस तमिल का वेद ।
यह पढ़कर स्त्री-पुरूष को, सुख मिलता, नहि खेद ।।

57. ग्रंथ कुरळ में कामरस, वर्णित है विस्तार ।
पढ़कर मन में हर्ष का, होता है संचार ।।

58. कुरळ-दीप से चित्त का दूर हुआ अज्ञान ।
कुरळ-शास्त्र से देह का, खूब हुआ है त्राण ।।

59. हर मानव को चाहिए, धर्म अर्थ औ काम ।
तीन काण्ड-युत कुरळ से, मिलता है आराम ।।

60. इस जग में अनुवाद से, विदित हुई है बात ।
राघव-कृत अनुवाद से, कुरल-तत्व हो ज्ञात ।।

61. भट्टबाण कवि के सदृश, वल्लुव का आख्यान ।
वल्लभाचार्य के सदृश, वल्लुव पुरुष महान ।।

62. ज्ञानी शंकर के सदृश, वल्लुव दर्शी तत्व ।
जीव-तत्वविद् बुद्धसम, वल्लुव रागी सत्व ।।

63. महावीर-सम जन्तुहित, कारक वल्लुव वीर ।
व्यासराजसम वादरत, ज्ञानी वल्लव धीर ।।

64. वेदांती देशिक-सदृश, वल्लुव हो निष्काम ।
माणिक्कवाचक-सदृश, वल्लुव आत्माराम ।।

65. विदुरनीति के सदृश है, कुरळ ग्रंथ उत्कृष्ट ।
भर्तृ-नीति के सदृश है, कुरळ नीति उत्कृष्ट ।।

66. काम कांड में कुरळ के है श्रृंगार-वियोग ।
अर्थ-कांड में कुरळ के है धन का संयोग ।।

67. मुक्ति कांड नहि कुरळ में, तो भी नर हो मुक्त ।
धर्म-कांड से कुरळ के, नर भव से हो मुक्त ।।

68. रामायण - ऋगवेद के भाव कुरळ में ज्ञेय ।
भारत औ भागवत के आशय उसमें ज्ञेय ।।

69. शुक्रनीति-चाणक्य के, भावकुरळ में ज्ञेय ।
वात्स्यायण के रति-भाव, कामकांड में ज्ञेय ।।

70. दूत, गुप्त के भाव सब, अर्थ कांड में गेय ।
प्यारी-प्यारे के भाव, कामकांड में गेय ।।

71. वल्लुव-कबीर उभय में, साम्यभाव ठहराय ।
वल्लुव-केशवदास में भावसाम्य बतलाय ।।

72. तुलसी-वल्लुव उभय के कर्मवाद हैं एक।
कविवल्लुव औ सूर में प्रेमभाव हि अनेक ॥

73. माँगन मरणसमान है वल्लुव-कबीर-उक्ति ।
"दंभ-दर्प का नाश हो" कबीर-वल्लुव-सूक्ति ॥

74. ज्ञान-सूर है वल्लुवर, कुरळ-सिंधु ही ज्ञेय ।
अंधकारहर वल्लुवर कुरळ-दीप विज्ञेय ॥

75. कुमित्र-सुमित्र कुरळ से अवगत ही हो जाय ।
सुपुत्र-कुपुत्र कुरळ से, खूब विदित हो जाय ॥

76. कुकर्म-सुकर्म कुरळ से सम्यक हो मालूम ।
गुप्त-सैन्य-बल कुरळ से, सम्यक हो मालूम ॥

77. राजा-परजा-कर्म क्या? खूब कुरळ से ज्ञात ।
कुदार-सुदार-पहचान खूब कुरळ से ज्ञात ॥

78. सदाचार व दुराचार, इसमें दर्शित खूब ।
कोप, काम की वासना, इसमें वर्णित खूब ॥

79. परम धर्म है अहिंसा, प्रतिपादित विस्तार ।
इसमें वर्णित विशद से, सुखदायक उपकार ॥

80. वल्लुव-वाणी भाव की वाणी मानी जाय ।
वल्लुव का साहित्य तो, अमिट अतुल हो जाय ॥

81. "नवीन" वल्लुव सदृश हो काव्य सृजन में वीर ।
"माखन" वल्लुव सदृश हो काव्यसृष्टि में धीर ।।
(नवीन-बालकृष्णशर्मा, माखन-माखनलाल चतुर्वेदी ।)

82. वल्लुव-सम "हरि औध" को माना कविसम्राट ।
वल्लुव-समान "शुक्लजी" स्रष्टा काव्य विराट ।।
(हरि औध-अयोध्या प्रसाद सिंह, शुक्ल-रामचन्द्रशुक्ल)

83. मैथिलीशरण विरह में, वल्लुवसम स्मरणीय ।
"प्रसाद शंकर" काम में, वल्लुवसम स्तवनीय ।।

84. वर्मा नन्दन काव्य में वल्लुवसम हो गेय ।
उग्र-निराला गीति में कुरळकार सम गेय ।।
(वर्मा-महादेवी वर्मा, नन्दन, सुमित्रानंदन, उग्र पांडेयजी)

85. मधु-सेवन के पक्ष में, हो "बच्चन" की राय ।
मधु-निषेध के पक्ष में, कुरळकार की राय ।।
(बच्चन-हरिवंशराय बच्चन, कुरळकार-वल्लुवर)

86. चतुरानन के नाम से, कवि वल्लुव विख्यात ।
दैव सुधी के नाम से, पट्टु वल्लुव सुख्यात ।।

87. द्रविड-आर्य का सेतु है, कवि वल्लुव का ग्रंथ ।
प्रांत-भाव का नाशकर, सुधी दैव का ग्रंथ ।।

88. कुरळ काव्य ससार में, शब्द शक्ति से युक्त ।
ग्रंथ कुरळ है जगत में, छंद-अर्थ से युक्त ॥

89. कुरळ-दीप संसार में तमस नाशकर, जान ।
श्राव्य वाच्य औ आस्वाद्य, कुरळगीत, पहचान ॥

90. वेद्य विषय हैं जगत में धर्म अर्थ औ काम ।
तीनों बातें जानकर, नर पाता आराम ॥

91. कुरळ सीखने योग्य है, कुरळ-गीत पठनीय ।
जीवन के संग्राम में, कुरळ-गान स्मरणीय ॥

92. पढ़ता है श्रुति-रव कौन? पढ़ता है स्मृति कौन ।
संस्कृत में हैं ये सभी, आम मनुज हो मौन ॥

93. राम-कथा है बहु बड़ी, भारत-कथा विशाल ।
कुरळ-गीत हैं बहुत लघु, भाव नहीं विकराल ॥

94. प्रेम-तत्व से जगत में, बढ़ नहि कोई तत्व ।
अपनावे केवल प्यार, हर कोई भी सत्व ॥
सत्व =जीव ।

95. कुसुमों में वर कमल हो, मृगगण में वर गाय ।
देवों में वर विष्णु हो, कवि में वल्लुवराय ॥

96. नित वल्लुव का वाङ्मय, उपयोगी ठहराय ।
सदैव वल्लुव का वाक, सत्ययुक्त कहलाय ॥

97. चार वेद के तत्व को, तीन कांड से ज्ञेय ।
दिल से वच से कुरळ के, गाने हो नित गेय ॥

98. कपिल-भरण-नक्कीर से पूजित प्रशंसमान ।
औवै-कुलपति-वीथि से, कुरळ प्राप्त संमान ॥

99. मामूलन - कल्ला प्रमुख, कहते कुरळ महान ।
पुरुष-अर्थ, को तीन भी कांडों से पहचान ॥

100. षट दर्शन से जो विदित, वही कुरळ से ज्ञेय ।
लघु वाणी के द्वार से, परम तत्व विज्ञेय ॥

101. इक हज़ार शत तीन औ, तीस कुरळ समवेत ।
पढ़कर ऐसे ग्रंथ को कौन न हर्षसमेत ॥

102. क्या नारी? क्या नर सभी? बनते दैवसमान ।
धर्म-अर्थ सौ आठ में, शेष कामयुत गान ॥
दैव = वल्लुवर, सौआठ - 108 अधिकार (अध्याय)
शेष - 25 अध्याय

103. महिमा-गरिमा कुरळ की मानी है निस्सीम ।
वल्लुव की महिमा जगत, जानें अतुल असीम ॥

ACKNOWLEDGEMENT

I acknowledge with profound gratitude the assistance rendered by the under mentioned persons in bringing out this book and offer my thanks to them.

1. "Vaishnava Ratna"
   Shri Krishnadasajee Purusothamdasjee
   Chairman
   Vaishnav group of Institutions
   Chennai

2. "Vaishnava Bhooshan"
   Shri Govinddasjee Purushathamdasjee
   Correspondent
   Vaishnav group of Institutions
   Chennai

3. Shri P. Haridasjee
   Senior Advocate
   Secretary, M.O.P. Vaishnav College for Women
   Chennai - 600 034.

T.E.S. RAGHAVAN, M.A.
Praveen Pracharak
Siromani, Vidwan
Meemamsa Kesari
1, H.R. Kovil Street
Chennai - 5

भूमिका

तिरुक्करळ तमिल-साहित्य का सर्वोत्कृष्ठ नीतिग्रंथ माना जाता है, जिसका रचनाकाल ईसवीं प्रथम शताब्दी में पड़ता है। प्रस्तुत काव्य के रचयिता सुप्रसिद्ध संत तिरूवल्लुवरजी है।

जाति न पूछे संत की पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करें तलवार का, पड़ा रहें तो म्यान।।

इस कथन के अनुसार हमें संत से जाति के बारे में चर्चा करना बेकार है तिरुक्करळ के तीन भाग हैं-धर्म, अर्थ तथा काम। धर्मकांड में 38, अर्थ कांड में 70 तथा कामकांड में 25 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में 10 कुरल के हिसाब से संपूर्ण रचना में 1330 कुरल हैं। "तिरु" आदर सूचकविशेषण है जैसे हिन्दी में "श्री" कहते हैं। कुरल तमिल के एक छन्द का नाम है, जैसे हिन्दी में दोहा है। तिरुक्कुरल में वर्णित विषय सार्वकालीन तथा सार्वदेशीय है। प्रस्तुत "तिरुक्कुरळ" ग्रंथ पढ़कर व्यक्ति ज्ञानवान और सुशील बन सकता है।

जो शिक्षा कंठस्थ हो जाय तो चिरकाल तक वह शिक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। अत एव पद्य-शैली में यह ग्रंथ अनूदित है। अनुवाद करते समय मूल का भाव ज्यों का त्यों रहने की चेष्ठा की गयी। राष्ट्र की राजभाषा हिन्दी में अनुवाद करने से ग्रंथ की उपयोगिता व्यापक होगी। विभिन्न शिक्षण-संस्थाओं के शिक्षाधिकारी प्रस्तुत ग्रंथ को पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। पुस्तकालय तथा शिक्षण केन्द्रों में "तिरुक्कुरळ" की प्रतियाँ अधिक मात्रा में खरीद कर हम जैसे हिन्दी सेवकों को प्रोत्साहित करने की कृपा करें। भगवान की वन्दना में कभी भी कवि ने ऐसी विशेषताओं का प्रयोग कही नहीं किया है, जिन से यह धारणा हो जाय कि कुरल किसी संप्रदाय-विशेष की रचना है, किन्तु इससे भी बड़ी खूबी तथा चमत्कार की बात यह है कि जिन विशेषताओं और नामों का प्रयोग उनसे किया गया है उन्हीं को सब मतावलंबि योंने मान लिया है और घोषित करने लगे कि कुरल अपने अपने मत को ही समर्थन करता है। धर्म कांड के प्रत्येक दोहे का भाव भी गद्य में दिया गया है।

आशा है कि पाठक गण यह ग्रंथ पढ़कर लाभान्वित हो जाय तथा राष्ट्र की एकता एवं भावात्मक एकता सुदृढ़ हो जाय।

श्रुति-कुरान-बाइबिल में विद्यमान जो सार।
सो है प्रस्तुत कुरल में बुध का यही विचार।।

चेन्नई — विनीत

28-1-2003 — **टी.ई.एस. राघवन**

(1) धर्मकांड - आदि भगवान की वंदना

1. सब अक्षर का आदि तो ही है यथा अकार ।
सर्व जगत का आदि है भगवन उसी प्रकार ।।

2. विद्या का अर्जन भला क्या आयेगा काम ।
वरपद पर सत्यज्ञ के अगर न किया प्रणाम ।।

3. चित्त-पद्म-गत ईश के चरण-पद्म जो पाय ।
उन्नतिकर वह जगत में चिरजीवित रह जाय ।।

4. प्यार-वैर से रहित के पादाश्रित जो लोग ।
दर्द न दे उनको कभी जग-बाधा का रोग ।।

5. जो रहते हैं ईश के सत्य-भजन में लीन ।
पाप-पुण्यमय कर्म में वे रहते नहिं लीन ।।

6. पंचेन्द्रिय-निरोध किये, अज का किया विधान ।
धर्म-मार्ग के पथिक जो हो चिर शतायुमान ।।

7. उपमाविहीन ईश का नहीं पदाश्रय-युक्त ।
तो अवश्य संभव नहीं होना चिन्ता-मुक्त ।

3. धर्म-उदधि करुणेश के शरणागत है धन्य ।
उसे त्याग दुख सिंधु को तरता नहिं है अन्य ।।

9. निष्क्रिय इन्द्रिय ही यथा "सिर" है सिर्फ हि नाम ।
अष्टगुणी के पाद पर अगर न किया प्रणाम ।।

10. ईश्वर-सेवी जगत में करते भव को पार ।
ईश्वर-सेवक जो नहीं वे नहिं करते पार ।।

1. ON THE LORD (ADORATION)

1, கடவுள் வாழ்த்து

அகர முதல எழுத்தெல்லாம் ஆதி
பகவன் முதற்றே உலகு. 1

கற்றதனா லாய பயனென்கொல் வாலறிவன்
நற்றாள் தொழாஅர் எனின். 2

மலர்மிசை ஏகினான் மாணடி சேர்ந்தார்
நிலமிசை நீடுவாழ் வார். 3

வேண்டுதல் வேண்டாமை இலான்அடி சேர்ந்தார்க்கு
யாண்டும் இடும்பை இல. 4

இருள்சேர் இருவினையும் சேரா இறைவன்
பொருள்சேர் புகழ்புரிந்தார் மாட்டு. 5

பொறிவாயில் ஐந்தவித்தான் பொய்தீர் ஒழுக்க
நெறிநின்றார் நீடுவாழ் வார். 6

தனக்குவமை இல்லாதான் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
மனக்கவலை மாற்றல் அரிது. 7

அறவாழி அந்தணன் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
பிறவாழி நீந்தல் அரிது. 8

கோளில் பொறியில் குணமிலவே எண்குணத்தான்
தாளை வணங்காத் தலை. 9

பிறவிப் பெருங்கடல் நீந்துவர் நீந்தார்
இறைவன் அடிசேரா தார். 10

वर्षा की महत्ता

11. उचित काल की वृष्टि से जग है जीवनदार ।
समझी जाती है तभी वृष्टि सुधा की धार ।।

12. उत्पादक है वृष्टि ही अन्नमयी आहार ।
भक्षक जन को वृष्टि खुद बनती है आहार ।।

13. यदि पानी बरसें नहीं समुचित सम्यक् काल ।
सिंधु-घिरे संसार में पड़ताभूख-अकाल ।।

14. वृष्टिमयी यदि आय की कभी कमी हो जाय ।
तो किसान से खेत में हल न चलाया जाय ।।

15. वृष्टि बली है बहुत ही अनावृष्टि क्षतिमूल ।
बिगड़े जन को वृष्टि फिर बनती हैं सुखमूल ।।

16. आसमान से मेघ की बूँदे गिर नहि जाय ।
हरा भरा तृण भूमि पर ना तो ही उग जाय ।।

17. यदि पानी नहि बरसता सागर पर बहु काल ।
बड़ा सिंधु तो शुष्क बन हो जाता बेहाल ।।

18. वृष्टि नहीं तो जगत में सुर-वन्दन हो मंद ।
वृष्टि रहें तो जगत में सुर-पूजन सानन्द ।।

19. इस महान संसार में दान तथा तप-कर्म ।
वृष्टि नहीं तो ना रहें सदैव दोनों धर्म ।।

20. बिनु पानी संसार का चलता नहि व्यापार ।
वृष्टि नहीं तो जगत में टिकता नहि आचार ।।

2, THE GLORY OF RAIN

2. வான் சிறப்பு

வான்நின்று உலகம் வழங்கி வருதலால்
தான்அமிழ்தம் என்றுணரற் பாற்று. 11

துப்பார்க்குத் துப்பாய துப்பாக்கித் துப்பார்க்குத்
துப்பாய தூஉம் மழை. 12

விண்இன்று பொய்ப்பின் விரிநீர் வியனுலகத்து
உள்நின்று உடற்றும் பசி. 13

ஏரின் உழாஅர் உழவர் புயலென்னும்
வாரி வளங்குன்றிக் கால். 14

கெடுப்பதூஉங் கெட்டார்க்குச் சார்வாய்மற் றாங்கே
எடுப்பதூஉம் எல்லாம் மழை. 15

விசும்பின் துளிவீழின் அல்லால்மற் றாங்கே
பசும்புல் தலைகாண்பு அரிது. 16

நெடுங்கடலும் தன்நீர்மை குன்றும் தடிந்தெழிலி
தான்நல்கா தாகி விடின். 17

சிறப்பொடு பூசனை செல்லாது வானம்
வறக்குமேல் வானோர்க்கும் ஈண்டு. 18

தானம் தவம்இரண்டும் தங்கா வியன்உலகம்
வானம் வழங்கா தெனின். 19

நீர்இன்று அமையாது உலகெனின் யார்யார்க்கும்
வான்இன்று அமையாது ஒழுக்கு. 20

यति की महिमा

21. श्रेष्ठग्रंथका लक्ष्य है जो हैं यतिवरशील ।
फैलाना है जगत में उनका ही गुण-शील ।।

22. यति-महिमा को जानना कभी नहीं है साध्य ।
मृत-जन-गणना जगत में कब होती है साध्य ।।

23. जन्म-मुक्ति के ज्ञान से जो धरता यति-रूप ।
उसकी महिमा जगत में सबसे श्रेष्ठ अनूप ।।

24. धिषणा-रूपी अँकुश से इन्द्रिय-नागारूढ ।
मोक्ष भूमि का हेतु है इसमें नहीं निगूढ ।।

25. इन्द्रिय-विजयी व्यक्ति का बल है अधिक महान ।
सुरजगनायक इन्द्र ही इसका रहा प्रमाण ।।

26. कठिन काम जो संतजन करते है दुस्साध्य ।
वही काम करते नहीं अधम समझ दुस्साध्य ।।

27. रूप गंध रस शब्द औ'' स्पर्शमिलाकर पंच ।
जानें इनकेतत्व जो जानें वही प्रपंच ।।

28. सार्थक भाषी संत की महिमा है विख्यात ।
गूढ मंत्र उसके कहे जग में भी विख्यात ।।

29. शील-शैल पर जो चढ़े वे हैं जगविख्यात ।
उनका गुस्सा क्षणिक भी कारक है आघात ।।

30. हिंसा तजकर जीव पर जो हैं करूणावान ।
वे कहलाते है सदा भूसुर-जातीयान ।।

3. GLORY OF NON ATTACHMENT

3. நீத்தார் பெருமை

ஒழுக்கத்து நீத்தார் பெருமை விழுப்பத்து
வேண்டும் பனுவல் துணிவு. 21

துறந்தார் பெருமை துணைக்கூறின் வையத்து
இறந்தாரை எண்ணிக்கொண் டற்று. 22

இருமை வகைதெரிந்து ஈண்டுஅறம் பூண்டார்
பெருமை பிறங்கிற்று உலகு. 23

உரனென்னும் தோட்டியான் ஓரைந்தும் காப்பான்
வரனென்னும் வைப்பிற்கோர் வித்து. 24

ஐந்தவித்தான் ஆற்றல் அகல்விசும்பு உளார்கோமான்
இந்திரனே சாலுங் கரி. 25

செயற்கரிய செய்வார் பெரியர் சிறியர்
செயற்கரிய செய்கலா தார். 26

சுவைஒளி ஊறுஓசை நாற்றமென்று ஐந்தின்
வகைதெரிவான் கட்டே உலகு. 27

நிறைமொழி மாந்தர் பெருமை நிலத்து
மறைமொழி காட்டி விடும். 28

குணமென்னும் குன்றேறி நின்றார் வெகுளி
கணமேயும் காத்தல் அரிது. 29

அந்தணர் என்போர் அறவோர்மற் றெவ்வுயிர்க்கும்
செந்தண்மை பூண்டொழுக லான். 30

धर्म पर ज़ोर देना

31. मुक्तिद तथैव अर्थ भी देनेवाला धर्म ।
उससे बढ़कर जीव को श्रेयस्कर नहिं कर्म ।।

32. श्रेयस्कर है जीव को करना अपना कर्म ।
धर्म भूलना अहितकर, समझो तुम यह मर्म ।।

33. भरसक करना चाहिये धर्म सहित ही कर्म ।
चित्त-देह औ'' वचनसे अजस्र करें सुधर्म ।।

34. पूत चित्त से जो रचा वही धर्म कहलाय ।
चित्त-शुद्धि बिनु जो रचा वही दंभ कहलाय ।।

35. ईर्ष्या, गुस्सा, कटुवचन और लोभ से हीन ।
जो कुछ कृत है धर्म वह, बाकी धर्म-विहीन ।।

36. मरण-काल में सोच मत धर्म-कर्म की बात ।
दैनिक कृत है धर्म ही आता अपने साथ ।।

37. धर्म-कार्य के सफल का जरूरी नहि सबूत ।
शिबिका-रोही-धरी में इसका स्पष्ट सबूत ।।

38. बिना बिताये व्यर्थ दिन करना ही है धर्म ।
जनम मार्ग को रोकता शिला भूत वह धर्म ।।

39. धर्म कर्म से प्राप्त जो वह है सुख का मूल ।
और कर्म तो सुखद नहि नापि कीर्ति का मूल ।।

40. धर्म-कर्म ही मनुज को पग-पग पर करणीय ।
दुनिया में दुष्कर्म हैं कभी नहीं करणीय ।।

4. GLORY OF VIRTUE

4. அறன் வலியுறுத்தல்

சிறப்புஈனும் செல்வமும் ஈனும் அறத்தினூஉங்கு
ஆக்கம் எவனோ உயிர்க்கு. 31

அறத்தினூஉங்கு ஆக்கமும் இல்லை அதனை
மறத்தலின் ஊங்கில்லை கேடு. 32

ஒல்லும் வகையான் அறவினை ஓவாதே
செல்லும்வா யெல்லாம் செயல். 33

மனத்துக்கண் மாசிலன் ஆதல் அனைத்துஅறன்
ஆகுல நீர பிற. 34

அழுக்காறு அவாவெகுளி இன்னாச்சொல் நான்கும்
இழுக்கா இயன்றது அறம். 35

அன்றறிவாம் என்னாது அறஞ்செய்க மற்றது
பொன்றுங்கால் பொன்றாத் துணை. 36

அறத்தாறு இதுவென வேண்டா சிவிகை
பொறுத்தானோடு ஊர்ந்தான் இடை. 37

வீழ்நாள் படாஅமை நன்றாற்றின் அஃதொருவன்
வாழ்நாள் வழியடைக்குங் கல். 38

அறத்தான் வருவதே இன்பம்மற் றெல்லாம்
புறத்த புகழும் இல. 39

செயற்பால தோரும் அறனே ஒருவற்கு
உயற்பால தோரும் பழி. 40

(II) On home and duty गार्हस्थ्य - धर्म

41. आश्रमवासी तीन हैं लेते गृहस्थ-योग ।
गृहस्थ-जीवन सहज ही समझें हितकर योग ।।

42. निर्धन अनाथ और मृत रहते हैं असहाय ।
ऐसे जन का है गृही करता परम सहाय ।।

43. देव-पितर के प्रति सदा करना है कर्तव्य ।
अतिथि बंधु प्रति हमें करना भी कर्तव्य ।।

44. वित्त कमाओ पाप बिनु खाओ बन्धु समेत ।
ऐसा जीवन है सदा माना पूर्ति समेत ।।

45. धर्मपंथ पर जो गृही यदि जाता निःशंक ।
तो गृहस्थ औ" धर्म भी सुफली हो निःशंक ।।

46. सहज धर्म से जो गृही करता है निज काम ।
साधक जनता में वही पाता पहला नाम ।।

47. गृहस्थ जीवन धन्य है जिसमें हो अनुराग ।
धर्मसहित जीवन सदा सुफली हो बेदाग ।।

48. मुनि जीवन से श्रेष्ठ है गृहस्थ-जीवन अेव ।
उसमें धर्माचरण है सुधर्मदर्शी अेव ।।

49. गृहस्थ जीवन असल में कहलाता है धर्म ।
वह जीवन ही श्रेष्ठ है जिसमें न निंद्य कर्म ।।

50. धर्म-मार्ग पर जो खडा वह है निष्ठावान ।
अैसा गृहस्थ देवसम बनें प्रतिष्ठावान ।।

5. இல்வாழ்க்கை

இல்வாழ்வான் என்பான் இயல்புடைய மூவர்க்கும்
நல்லாற்றின் நின்ற துணை. 41

துறந்தார்க்கும் துவ்வா தவர்க்கும் இறந்தார்க்கும்
இல்வாழ்வான் என்பான் துணை. 42

தென்புலத்தார் தெய்வம் விருந்தொக்கல் தானென்றாங்கு
ஐம்புலத்தாறு ஓம்பல் தலை. 43

பழியஞ்சிப் பாத்தூண் உடைத்தாயின் வாழ்க்கை
வழிஎஞ்சல் எஞ்ஞான்றும் இல். 44

அன்பும் அறனும் உடைத்தாயின் இல்வாழ்க்கை
பண்பும் பயனும் அது. 45

அறத்தாற்றின் இல்வாழ்க்கை ஆற்றின் புறத்தாற்றில்
போஒய்ப் பெறுவது எவன். 46

இயல்பினான் இல்வாழ்க்கை வாழ்பவன் என்பான்
முயல்வாருள் எல்லாம் தலை. 47

ஆற்றின் ஒழுக்கி அறனிழுக்கா இல்வாழ்க்கை
நோற்பாரின் நோன்மை உடைத்து. 48

அறன்எனப் பட்டதே இல்வாழ்க்கை அஃதும்
பிறன்பழிப்பது இல்லாயின் நன்று. 49

வையத்துள் வாழ்வாங்கு வாழ்பவன் வானுறையும்
தெய்வத்துள் வைக்கப் படும். 50

51. गृहिणी-गुण को प्राप्तकर पति-मन के अनुसार ।
जो है जीवन-पालिका समझें उसे सुदार ।।

52. गृहिनी में यदि गुण नहीं, गृह्य-कर्म के अर्थ ।
तो जीवन संपन्न भी माना जाता व्यर्थ ।।

53. पतनी हो यदि गुणवती है नहिं कभी अभाव ।
यदि पत्नी गुणरहित तो किसका नहीं अभाव ? ।।

54. स्त्री से बढ़कर चीज़ औं नित है महत्वहीन ।
स्त्री के पातिव्रत्य में दृड़ता हो मलहीन ।।

55. और देव पूजे बिना पतिपूजन में लीन ।
साध्वी के आदेश से होगी वृष्टि हसीन ।।

56. सती भाव की पालिका पतिपोषण में लीन ।
जो है गृह-यश-कारिका स्त्री वह दृढ़तालीन ।।

57. बन्दी-निकेत है नहीं स्त्री का पहरेदार ।
सती भाव है रात-दिन स्त्री का पहरेदार ।।

58. पति-पूजन में नारियां यदि रत हो सविशेष ।
तो उनका सम्मान भी हो दिव में सविशेष ।।

59. स्त्रीं नही गृह-यश-कारिका तो नहि होता मान ।
है रिपुगण के सामने शेरचाल असमान ।।

60. घर का शुभ-मंगल कहें पत्नी की गुण-खान ।
पत्नी का भूषण कहें पाना सत्संतान ।।

6. THE WIFE

6. வாழ்க்கைத் துணைநலம்

மனைத்தக்க மாண்புடையள் ஆகித்தற் கொண்டான்
வளத்தக்காள் வாழ்க்கைத் துணை. 51

மனைமாட்சி இல்லாள்கண் இல்லாயின் வாழ்க்கை
எனைமாட்சித் தாயினும் இல். 52

இல்லதென் இல்லவள் மாண்பானால் உள்ளதென்
இல்லவள் மாணாக் கடை 53

பெண்ணிற் பெருந்தக்க யாவுள கற்பென்னும்
திண்மையுண் டாகப் பெறின். 54

தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநன் தொழுதெழுவாள்
பெய்யெனப் பெய்யும் மழை. 55

தற்காத்துத் தற்கொண்டான் பேணித் தகைசான்ற
சொற்காத்துச் சோர்விலாள் பெண். 56

சிறைகாக்குங் காப்புஎவன் செய்யும் மகளிர்
நிறைகாக்குங் காப்பே தலை. 57

பெற்றாற் பெறின்பெறுவர் பெண்டிர் பெருஞ்சிறப்புப்
புத்தேளிர் வாழும் உலகு. 58

புகழ்புரிந்த இல்லிலோர்க்கு இல்லை இகழ்வார்முன்
ஏறுபோல் பீடு நடை 59

மங்கலம் என்ப மனைமாட்சி மற்றுஅதன்
நன்கலம் நன்மக்கட் பேறு. 60

पुत्र लाभ

61. विभवों में सबसे बडा, बुद्धिमान संतान ।
पाकर उसको हम नहीं, मानें और महान ।।

62. सात जन्म तक भी उसे स्पर्शन करता ताप ।
यदि जिसको वर सुत मिलें गुणशाली निष्पाप ।।

63. पुत्र सदृश निज वस्तु नहिं यही बडों की उक्ति ।
पुत्र-अर्थ की प्राप्ति तो निज कर्मों की शक्ति ।।

64. निज नन्हें सुत हाथ से पक्व विलोडा भात ।
देवामृत से स्वादकर होता मीठा भात ।।

65. निज-सुत-तन के स्पर्श से तन को है आनंद ।
शिशु की तुतली बात से कानों को आनंद ।।

66. जिस जन ने जब नहिं सुनी शिशु की तुतली बात ।
तब उस जन को मधुर है मुरली-बीन-निनाद ।।

67. जनक करे उपकार यह जिससे निज औलाद ।
करें सभा में डर बिना पहले वाद-विवाद ।।

68. यदि शिक्षित संतान हो तो निज को हो हर्ष ।
उससे बढ़ संसार को वहदेगा बहु हर्ष ।।

69. पुत्र-जनन के बाद माँ पाती ही है हर्ष ।
सत्सुत के यश-लाभ से माँ है और सहर्ष ।।

70. पुत्र जनक का यह करे पहले में उपकार ।
"धन्य धन्य इसके जनक" यही कहें संसार ।।

7. THE BLESSING OF PROGENY

7. மக்கட்பேறு

பெறுமவற்றுள் யாமறிவது இல்லை அறிவறிந்த
மக்கட்பேறு அல்ல பிற. 61

எழுபிறப்பும் தீயவை தீண்டா பழிபிறங்காப்
பண்புடை மக்கட் பெறின். 62

தம்பொருள் என்பதம் மக்கள் அவர்பொருள்
தம்தம் வினையான் வரும். 63

அமிழ்தினும் ஆற்ற இனிதேதம் மக்கள்
சிறுகை அளாவிய கூழ். 64

மக்கள்மெய் தீண்டல் உடற்கின்பம் மற்றுஅவர்
சொற்கேட்டல் இன்பம் செவிக்கு. 65

குழல்இனிது யாழ்இனிது என்பதம் மக்கள்
மழலைச்சொல் கேளா தவர். 66

தந்தை மகற்குஆற்றும் நன்றி அவையத்து
முந்தி யிருப்பச் செயல். 67

தம்மின்தம் மக்கள் அறிவுடைமை மாநிலத்து
மன்னுயிர்க் கெல்லாம் இனிது. 68

ஈன்ற பொழுதிற் பெரிதுவக்கும் தன்மகனைச்
சான்றோன் எனக்கேட்ட தாய். 69

மகன்தந்தைக்கு ஆற்றும் உதவி இவன்தந்தை
என்னோற்றான் கொல்எனுஞ் சொல். 70

अनुराग भाव

71. अर्गल में बन्दी नहीं अनुरागी का राग ।
नयन अश्रु है प्रकटता प्रेमी का अनुराग ।।

72. स्नेहरहित जन चाहता निज हित सब कुछ माल
स्नेही औरों के लिये देगा हड्डी-जाल ।।

73. जैसा शरीर प्राण का घनिष्ठ ही संयोग ।
वैसाजीवन सफल है जिसमें हो रति-योग ।।

74. पैदा कर लें प्रेम ही मिलनसार का भाव ।
वही प्रेम पैदा करें मैत्री का भी भाव ।।

75. सुखजीवी हैं भोगते जग में सुख-परिणाम ।
नेह निभाना जगत में जीवन का परिणाम ।।

76. अज्ञ कहें अनुराग है धर्म-सहायक मात्र ।
विज्ञ कहें रति पाप से रक्षक है इक मात्र ।।

77. मरुथल पर तरूवर कभी नहि है पल्लवयुक्त ।
गृहस्थ जीवन धन्य नहि स्नेहहीन-मनयुक्त ।।

78. स्नेह-देह में अगरनहि बन अन्तर का अंग ।।
तो क्या फल? यद्यपि रहें बाहर के सब अंग ।।

79. ज्यों पीडित हैं धर्म से कीडे अस्थि विहीन ।
त्यों पीडित हैं धर्म से प्राणी स्नेहविहीन. ।।

80. प्रेमसहित जो देह है वह है देह सजीव ।
अस्थि चर्मयुत देह में नेह न तो निर्जीव ।।

8. LOVE (Good feeling)

8. அன்புடைமை

அன்பிற்கும் உண்டோ அடைக்குந்தாள் ஆர்வலர்
புன்கணீர் பூசல் தரும். 71

அன்பிலார் எல்லாம் தமக்குரியர் அன்புடையார்
என்பும் உரியர் பிறர்க்கு. 72

அன்போடு இயைந்த வழக்கென்ப ஆருயிர்க்கு
என்போடு இயைந்த தொடர்பு. 73

அன்புஈனும் ஆர்வம் உடைமை அதுஈனும்
நண்பென்னும் நாடாச் சிறப்பு. 74

அன்புற்று அமர்ந்த வழக்கென்ப வையகத்து
இன்புற்றார் எய்துஞ் சிறப்பு. 75

அறத்திற்கே அன்புசார் பென்ப அறியார்
மறத்திற்கும் அஃதே துணை. 76

என்பி லதனை வெயில்போலக் காயுமே
அன்பி லதனை அறம். 77

அன்பகத் தில்லா உயிர்வாழ்க்கை வன்பாற்கண்
வற்றல் மரந்தளிர்த் தற்று. 78

புறத்துறுப் பெல்லாம் எவன்செய்யும் யாக்கை
அகத்துறுப்பு அன்பி லவர்க்கு. 79

அன்பின் வழியது உயிர்நிலை அஃதிலார்க்கு
என்புதோல் போர்த்த உடம்பு. 80

अतिथि सम्मान

81. गृहस्थ - जीवन है तभी माना जाता धन्य ।
जब ही आदर अतिथि का किया जाता अनन्य ।।
82. घर के बाहर अतिथि, रख अन्दर खुद यजमान ।
पिवें अमृत भी कर्म वह चाहिये न असमान ।।
83. जो करता है अतिथि का प्रतिदिन ही उपचार ।
वह अभाव का तो कभी बनता नहीं शिकार ।।
84. हँसमुख जो हो अतिथि का करता है उपचार ।
उसके घर में है रमा करती सदा विहार ।।
85. अतिथि - भोज के बाद जो खाता बाकी आप ।
फसलें उसके खेत में उगती अपने आप ।।
86. आगत-भावी अतिथि का जो करता सत्कार ।
वह देवों का अतिथि बन, पायेगा सत्कार ।।
87. याग-लाभ सम अतिथि का अपरिमेय सत्कार ।
अतिथि-पात्र अनुरूप हो मिलता फल-सत्कार ।।
88. अतिथि-यज्ञ में जो नहीं लेता समुचित भाग ।
खोकर संचित वित्त वह खुद कहता "गतराग" ।
89. निर्धनता ऐश्वर्य में आतिथ्यरहित कर्म ।
अविवेकी में दीखता निंदित कुत्सित कर्म ।।
90. सूंधा "अनिच्च" कुसुम को जो वह कुँहला जाय ।
नेह-रहित दृग दृष्टि से अतिथि-वदन कुँहलाय ।।

9. HOSPITALITY

9. விருந்தோம்பல்

இருந்தோம்பி இல்வாழ்வ தெல்லாம் விருந்தோம்பி
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு. 81

விருந்து புறத்ததாத் தானுண்டல் சாவா
மருந்தெனினும் வேண்டற்பாற் றன்று. 82

வருவிருந்து வைகலும் ஓம்புவான் வாழ்க்கை
பருவந்து பாழ்படுதல் இன்று. 83

அகனமர்ந்து செய்யாள் உறையும் முகனமர்ந்து
நல்விருந்து ஓம்புவான் இல். 84

வித்தும் இடல்வேண்டும் கொல்லோ விருந்தோம்பி
மிச்சில் மிசைவான் புலம். 85

செல்விருந்து ஓம்பி வருவிருந்து பார்த்திருப்பான்
நல்விருந்து வானத் தவர்க்கு. 86

இனைத்துணைத் தென்பதொன் றில்லை விருந்தின்
துணைத்துணை வேள்விப் பயன். 87

பரிந்தோம்பிப் பற்றற்றேம் என்பர் விருந்தோம்பி
வேள்வி தலைப்படா தார். 88

உடைமையுள் இன்மை விருந்தோம்பல் ஓம்பா
மடமை மடவார்கண் உண்டு. 89

மோப்பக் குழையும் அனிச்சம் முகந்திரிந்து
நோக்கக் குழையும் விருந்து. 90

मीठे वचन

91. धर्म-तत्व-विद कपट बिनु कहते मीठी बात ।
उनकी बोली में सदा प्रेम भाव है साथ ।।

92. दिल खुश होकर और को देने से भी दान ।
हँसमुख होकर मधुर वच कहना उत्तम, जान ।।

93. सौम्य भाव के साथ ही हार्दिक मधुर समेत ।
वच जो प्रयुक्त है सदा वही धर्मसमवेत ।।

94. जो कहता है और से प्रिय सुखकर मधु बात ।
दुखकर अभावनहि उसे ग्रसता है दिनरात ।।

95. नरभूषण है मधुरवच तथैव विनम्रभाव ।
बाकी भूषण मनुज के रखें न सार्थक भाव ।।

96. मधु वच के उपयोग से होता अधर्म-लोप ।
और धर्म की वृद्धि भी होती है निष्कोप ।।

97. परहितकारी मधुर वच जो कहता दिन रात ।
हित-सुख-नय औ पुण्य भी उसे मिले दिन-रात ।।

98. परदुखनाशक मधुर वच ओछापन से हीन ।
सुखकर है सर्वत्र ही इह पर-जन्मविहीन ।।

99. मधु वच के उपयोग से नर पाता सुख भोग ।
क्यों फिर कठोर वचन का होता है उपयोग ।।

100. तजकर मीठे वचन को कटु वच का उपयोग ।
यथा पका फल छोड़कर कच्चे का उपभोग ।।

10. KIND SPEECH

10. இனியவை கூறல்

இன்சொலால் ஈரம் அளைஇப் படிறுஇலவாம்
செம்பொருள் கண்டார்வாய்ச் சொல். 91

அகனமர்ந்து ஈதலின் நன்றே முகனமர்ந்து
இன்சொல னாகப் பெறின். 92

முகத்தான் அமர்ந்துஇனிது நோக்கி அகத்தானாம்
இன்சொ லினதே அறம். 93

துன்புறூஉந் துவ்வாமை இல்லாகும் யார்மாட்டும்
இன்புறூஉம் இன்சொ லவர்க்கு. 94

பணிவுடையன் இன்சொலன் ஆதல் ஒருவற்கு
அணியல்ல மற்றுப் பிற. 95

அல்லவை தேய அறம்பெருகும் நல்லவை
நாடி இனிய சொலின். 96

நயன்ஈன்று நன்றி பயக்கும் பயன்ஈன்று
பண்பின் தலைப்பிரியாச் சொல். 97

சிறுமையுள் நீங்கிய இன்சொல் மறுமையும்
இம்மையும் இன்பந் தரும். 98

இன்சொல் இனிதீன்றல் காண்பான் எவன்கொலோ
வன்சொல் வழங்கு வது. 99

இனிய உளவாக இன்னாத கூறல்
கனியிருப்பக் காய்கவர்ந் தற்று. 100

कृतज्ञता

101. खुद पर का उपकार बिनु पर से कृत उपकार ।
भू-सुर-जग के दान से उत्तम है अविकार ।।

102. उचित समय पर जो रचा सहाय अल्पाकार ।
वह सहाय संसार से होगा बृहदाकार ।।

103. स्वार्थहीन कृत मदद की तुलना नहि हो जाय ।
सागर से उस मदद को बड़ा कहाया जाय ।।

104. तिल भर कृत उपकार को ताड़-पेड़ सम संत ।
बृहत रूप में मानते हैं जीवन-पर्यन्त ।।

105. परसेकृत उपकार का और नहीं परिमाण ।
उपकृत की ही योग्यता उसका है परिमाण ।।

106. निर्दोषीकी बंधुता कभी न छोड़ी जाय ।
दुख में उपकृत मनुज का प्यार न छोड़ा जाय ।

107. निज दुख हर नर मित्रता सात जन्म पर्यन्त ।
सुमिरण करते अन्य से उपकृत महान संत ।।

108. ठीक नहीं है भूलना पर से कृत उपकार ।
अच्छा तत्क्षण भूलना पर से कृत अपकार ।।

109. कृतज्ञ सदृश कोई करें अगर बड़ा नुकसान ।
तो भी उसकी मदद सुध हरती है नुकसान ।।

110. धर्मविनाशी मनुज भी पाता है उद्धार ।
कृतघ्न का संसार में साध्य नहीं उद्धार ।।

11. GRATEFULNESS

11. செய்ந்நன்றி அறிதல்

செய்யாமற் செய்த உதவிக்கு வையகமும்
வானகமும் ஆற்ற லரிது. 101

காலத்தி னாற்செய்த நன்றி சிறிதெனினும்
ஞாலத்தின் மாணப் பெரிது. 102

பயன்தூக்கார் செய்த உதவி நயன்தூக்கின்
நன்மை கடலிற் பெரிது. 103

தினைத்துணை நன்றி செயினும் பனைத்துணையாக்
கொள்வர் பயன்தெரி வார். 104

உதவி வரைத்தன்று உதவி உதவி
செயப்பட்டார் சால்பின் வரைத்து. 105

மறவற்க மாசற்றார் கேண்மை துறவற்க
துன்பத்துள் துப்பாயார் நட்பு. 106

எழுமை எழுபிறப்பும் உள்ளுவர் தங்கண்
விழுமந் துடைத்தவர் நட்பு. 107

நன்றி மறப்பது நன்றன்று நன்றல்லது
அன்றே மறப்பது நன்று. 108

கொன்றன்ன இன்னா செயினும் அவர்செய்த
ஒன்றுநன்று உள்ளக் கெடும். 109

எந்நன்றி கொன்றார்க்கும் உய்வுண்டாம் உய்வில்லை
செய்ந்நன்றி கொன்ற மகற்கு. 110

निष्पक्षता

111. पक्षपात बिनु जो रचा वह है न्यायसमेत ।
निष्पक्ष भाव हर कहीं उत्तम धर्मसमेत ।।

112. धन-दौलत निष्पक्ष की नहि हो विनाशवान ।
भावी संतति के लिये करती हितप्रदान ।।

113. तजने से मध्यस्थता जो मिलता धनमाल ।
भला भले ही वह करें तजें उसे तत्काल ।।

114. कोई नर निष्पक्ष हैं अथवा बेईमान ।
अपनी कृति के शेष से होती है पहचान ।।

115. वित्तनाश धन वृद्धि की स्वाभाविक है बात ।
मध्यस्थता जीवनमें सज्जन-भूषित बात ।।

116. जो तजता निष्पक्षता सोचे भ्रष्टाचार ।
उसकी क्षति की सूचना देते हैं कुविचार ।।

117. जगत नहीं ही मानता निष्पक्ष का अभाव ।
अहितकरी है ही नहीं नापि तथा लघुभाव ।।

118. वस्तु तोलने ज्यों तुला त्यों हैं महानुभाव ।
अपनाते ही नहि सदा किसी पक्ष का भाव ।।

119. वचन नही नित बदलना निष्पक्ष का निशान ।
मन-ऋजुता भी चाहिये मध्यस्थ का निशान ।।

120. और माल को वणिक यदि समझें अपना माल ।
और करें व्यापार तो होगा न गोल-माल ।।

12. IMPARTIALITY (UPRIGHTNESS)

12. நடுவு நிலைமை

தகுதி எனஒன்று நன்றே பகுதியால்
பாற்பட்டு ஒழுகப் பெறின். 111

செப்பம் உடையவன் ஆக்கம் சிதைவின்றி
எச்சத்திற் கேமாப்பு உடைத்து. 112

நன்றே தரினும் நடுவிகந்தாம் ஆக்கத்தை
அன்றே ஒழிய விடல். 113

தக்கார் தகவிலர் என்பது அவரவர்
எச்சத்தாற் காணப் படும். 114

கேடும் பெருக்கமும் இல்லல்ல நெஞ்சத்துக்
கோடாமை சான்றோர்க் கணி. 115

கெடுவல்யான் என்பது அறிகதன் நெஞ்சம்
நடுவொரீஇ அல்ல செயின். 116

கெடுவாக வையாது உலகம் நடுவாக
நன்றிக்கண் தங்கியான் தாழ்வு. 117

சமன்செய்து சீர்தூக்கும் கோல்போல் அமைந்தொருபால்
கோடாமை சான்றோர்க் கணி. 118

சொற்கோட்டம் இல்லது செப்பம் ஒருதலையா
உட்கோட்டம் இன்மை பெறின். 119

வாணிகம் செய்வார்க்கு வாணிகம் பேணிப்
பிறவும் தமபோற் செயின். 120

संयमशीलता

121. स्वर्ग-सदृश सुख मनुज को देता संयम भाव ।
नरक-सदृश दुख मूल है संयमविहीन भाव ।।

122. संयम का पालन करो उत्तम वस्तु-समान ।
वही जीव को श्रेयकर सबसे अधिक महान ।।

123. संयम गुण को ग्रहण कर जो हो सत्पथशील ।
उसे बनाता श्रेष्ठ ही सयमरूपी शील ।।

124. स्थिर होकर निज धर्म में जो हों संयमयुक्त ।
उसका महत्व शैल से होगा उन्नतियुक्त ।।

125. सारी जनता के लिये उत्तम विनम्र भाव ।
धनी के लिये खास धन मानो विनम्र भाव ।।

126. कछुआसम जितेन्द्रिय हो, जो जीवनपर्यन्त ।
उसका पालक दमनगुण सात जन्म पर्यन्त ।।

127. वशीभूत हो जीभ ही औ, नहि हो परवाह ।
अवशी जिह्वा हेंतु है शब्द दोष दुखदाह ।।

128. प्रयुक्त इक अपशब्द से होता है नुकसान ।
सब सुकर्म के सुफल का उससे हो अवसान ।।

129. आग-आंच का घाव हो नहि मानस की चोट ।
कटुक वचन से ठीक नहि होती दिल की चोट ।।

130. शिक्षित विनयी जो सदा नहि होता नाराज़ ।
उसका स्वागत धूम से करता सुधर्मराज ।।

13. அடக்கமுடைமை

அடக்கம் அமரருள் உய்க்கும் அடங்காமை
ஆரிருள் உய்த்து விடும். 121

காக்க பொருளா அடக்கத்தை ஆக்கம்
அதனினூஉங் கில்லை உயிர்க்கு. 122

செறிவறிந்து சீர்மை பயக்கும் அறிவறிந்து
ஆற்றின் அடங்கப் பெறின். 123

நிலையில் திரியாது அடங்கியான் தோற்றம்
மலையினும் மாணப் பெரிது. 124

எல்லார்க்கும் நன்றாம் பணிதல் அவருள்ளும்
செல்வர்க்கே செல்வந் தகைத்து. 125

ஒருமையுள் ஆமைபோல் ஐந்தடக்கல் ஆற்றின்
எழுமையும் ஏமாப் புடைத்து. 126

யாகாவா ராயினும் நாகாக்க காவாக்கால்
சோகாப்பர் சொல்லிழுக்குப் பட்டு. 127

ஒன்றானும் தீச்சொல் பொருட்பயன் உண்டாயின்
நன்றாகா தாகி விடும். 128

தீயினாற் சுட்டபுண் உள்ளாறும் ஆறாதே
நாவினாற் சுட்ட வடு. 129

கதங்காத்துக் கற்றடங்கல் ஆற்றுவான் செவ்வி
அறம்பார்க்கும் ஆற்றின் நுழைந்து. 130

सदाचार

131. सदाचार अभिवृद्धि का दायक समझा जाय ।
सदाचार ही प्राण से रक्षणीय समझाय ।।

132. सदाचार को पालना सहकर भी खुद खेद ।
वही सहायक जीव का इसमें नहिं मत-भेद ।।

133. सदाचार करना सदा कुलीनता का चिह्न ।
दुराचार करना सदा नीच वंश का चिह्न ।।

134. भूल गया तो वेद भी फिर संभव अभ्यास ।
आचारहीन मनुज के कुल का होगा नास ।।

135. असूयालु के वित्त की होती नही समृद्धि ।
आचारहीन मनुज की होती नहि अभिवृद्धि ।।

136. "आचार नहीं तो भूल हो" यह विचारकर धीर ।
सदाचार करके सदा बनते सुकर्मवीर ।।

137. उन्नति देता है हमें सदाचार इकमात्र ।
अवनति ला देता हमें दुराचार इकमात्र ।।

138. मुख से दुर्वच भूलकर न कहें चरित्रवान ।
दुर्वच कहना दोषयुत समझे चरित्रवान ।।

139. लोकाचार विहीन जो भी हो शिक्षावान ।
फिर भी वे बनते नहीं सदैव विवेकवान ।।

140. सदाचार है सुखमयी जीवन का इकबीज ।
दुराचार है दुखमयी जीवन का इकबीज ।।

14. GOOD CONDUCT (MORALITY)

14. ஒழுக்கமுடைமை

ஒழுக்கம் விழுப்பம் தரலான் ஒழுக்கம்
உயிரினும் ஓம்பப் படும். 131

பரிந்தோம்பிக் காக்க ஒழுக்கம் தெரிந்தோம்பித்
தேரினும் அஃதே துணை. 132

ஒழுக்கம் உடைமை குடிமை இழுக்கம்
இழிந்த பிறப்பாய் விடும். 133

மறப்பினும் ஒத்துக் கொளலாகும் பார்ப்பான்
பிறப்பொழுக்கங் குன்றக் கெடும். 134

அழுக்கா றுடையான்கண் ஆக்கம்போன்று இல்லை
ஒழுக்க மிலான்கண். உயர்வு. 135

ஒழுக்கத்தின் ஒல்கார் உரவோர் இழுக்கத்தின்
ஏதம் படுபாக் கறிந்து. 136

ஒழுக்கத்தின் எய்துவர் மேன்மை இழுக்கத்தின்
எய்துவர் எய்தாப் பழி. 137

நன்றிக்கு வித்தாகும் நல்லொழுக்கம் தீயொழுக்கம்
என்றும் இடும்பை தரும். 138

ஒழுக்க முடையவர்க்கு ஒல்லாவே தீய
வழுக்கியும் வாயாற் சொலல். 139

உலகத்தோடு ஒட்ட ஒழுகல் பலகற்றும்
கல்லார் அறிவிலா தார். 140

पर-पत्नी पर विरति

141. पर-पत्नी पर कामना मौढ्य कर्म समझाय ।
धर्म अर्थ के विज्ञ में वहरति नहि ठहराय ।।

142. परपत्नीरत मनुज जो खोज रहें पर द्वार ।
मूढ वही है और नहि, यह कहता संसार ।।

143. विश्वासी की दार से जो रखता संसर्ग ।
जीवित भी वह मृतक सम है नहि पाता स्वर्ग ।।

144. जो करता पर-दार पर अनुचित ही व्यवहार ।
उसको क्या है फायदा यदपि रहें बहु यार ।।

145. सुलभ काम ही समझकर जो पर-दारालीन ।
पाता है कलंक वही सदैव अमिट मलीन ।।

146. वैर पाप भय निंद्यता ये मिलकर कुल चार ।
उसे छोडते ही नहीं जो करता व्यभिचार ।।

147. उसका जीवन धर्म से सदैव विराजमान ।
जो रहता पर-दार पर निस्पृह विरक्तिमान ।।

148. औ-स्त्री को नहि चाहना पौरूष समझा जाय ।
यही आचरण संत का उत्तम समझा जाय ।।

149. सागरवेष्टित भूमि पर कौन भोग्य का पात्र ।
जो स्पर्श न करता कभी पर-पत्नी का गात्र ।।

150. चाहे कर ले पाप भी धर्म-मार्ग-रति हीन ।
पर-पतनी पर विरति ही नहि है श्रेयविहीन ।।

15. LUSTING NOT AFTER ANOTHER'S WIFE

15. பிறனில் விழையாமை

பிறன்பொருளாள் பெட்டொழுகும் பேதைமை ஞாலத்து
அறம்பொருள் கண்டார்கண் இல். 141

அறன்கடை நின்றாருள் எல்லாம் பிறன்கடை
நின்றாரின் பேதையார் இல். 142

விளிந்தாரின் வேறல்லர் மன்ற தெளிந்தாரில்
தீமை புரிந்துஒழுகு வார். 143

எனைத்துணையர் ஆயினும் என்னாம் தினைத்துணையும்
தேரான் பிறனில் புகல். 144

எளிதென இல்லிறப்பான் எய்துமெஞ் ஞான்றும்
விளியாது நிற்கும் பழி. 145

பகைபாவம் அச்சம் பழியென நான்கும்
இகவாவாம் இல்லிறப்பான் கண். 146

அறனியலான் இல்வாழ்வான் என்பான் பிறனியலாள்
பெண்மை நயவாத வன். 147

பிறன்மனை நோக்காத பேராண்மை சான்றோர்க்கு
அறனொன்றோ ஆன்ற ஒழுக்கு. 148

நலக்குரியார் யாரெனின் நாமநீர் வைப்பின்
பிறற்குரியாள் தோள்தோயா தார். 149

அறன்வரையான் அல்ல செயினும் பிறன்வரையாள்
பெண்மை நயவாமை நன்று. 150

सहनशीलता

151 यथा खनक को भूमिही, सहनशील बन जाय।
माफ़ी करना निन्द्य को, उत्तम बोलाजाय ॥

152. पर से कृत अपकार सब, सहना हित समझाय।
उससे बढ़कर भूलना, सर्वोपरि समझाय ॥

153. अभाव में अभाव वही, जिसमें नातिथिभाव।
बल में बलहै सह्यता कृतभी अनहितभाव ॥

154. यदि तुमसे संपूर्णता, अलग न हो ही जाय।
सहन भाव को लगन से, अपनाया तो जाय ॥

155. प्रतिकारक को लोग तो, मानें नित नाचीज़।
सहनशील को लोग ही, मानें सुवर्ण चीज़ ॥

156. प्रतिकारी को इक दिवस, मिलता हो आनंद।
सहनशील को प्रलय तक, मिलतीकीर्ति अनंत ॥

157. निज को पर से क्षति हुई, तो मत करो अनिष्ट।
सहनशील ही जगत में, माना है धर्मिष्ट ॥

158. तेरे खिलाफ़ दर्प से, जो करता बरताव।
उसे जीतना सहन से, उत्तम अनुपम भाव ॥

159. गति से जग में श्रेष्ठ है, अैसे गृहस्थ पूत।
जो सहते हैं नोच के, कटुक वचन विषभूत ॥

160. निराहार होकर करे, जो जप तपस महान।
उससे बड़े सहिष्णु का. माना जाता स्थान ॥

16. FORBEARANCE

16. பொறையுடைமை

அகழ்வாரைத் தாங்கும் நிலம்போலத் தம்மை
இகழ்வார்ப் பொறுத்தல் தலை. 151

பொறுத்தல் இறப்பினை என்றும் அதனை
மறத்தல் அதனினும் நன்று. 152

இன்மையுள் இன்மை விருந்தொரால் வன்மையுள்
வன்மை மடவார்ப் பொறை. 153

நிறையுடைமை நீங்காமை வேண்டின் பொறையுடைமை
போற்றி ஒழுகப் படும். 154

ஒறுத்தாரை ஒன்றாக வையாரே வைப்பர்
பொறுத்தாரைப் பொன்போற் பொதிந்து. 155

ஒறுத்தார்க்கு ஒருநாளை இன்பம் பொறுத்தார்க்குப்
பொன்றுந் துணையும் புகழ். 156

திறனல்ல தற்பிறர் செய்யினும் நோநொந்து
அறனல்ல செய்யாமை நன்று. 157

மிகுதியான் மிக்கவை செய்தாரைத் தாம்தம்
தகுதியான் வென்று விடல். 158

துறந்தாரின் தூய்மை உடையர் இறந்தார்வாய்
இன்னாச்சொல் நோற்கிற் பவர். 159

உண்ணாது நோற்பார் பெரியர் பிறர்சொல்லும்
இன்னாச்சொல் நோற்பாரின் பின். 160

असूयाहीनता

161. ईर्ष्या मन से दूर कर, जो जीवित है रोज़ ।
उसका जीवन शीलयुत, माना है तू सोच ।।

162. जीवन तब संपन्न है, जब नर ईर्ष्याहीन ।
अनसूया का भावयुत, नर माना नहि दीन ।।

163. नहीं चाहता व्यक्ति जो, धर्म तथा ही अर्थ ।
पर-वैभव से तुष्टि बिनु, वह पाता नहि अर्थ ।।

164. ईर्ष्या करने से सदा, होगा हानि-अनिष्ट ।
यों अवगत जलन ही, करते नहि धर्मिष्ठ ।।

165. भूल करें यदि शत्रु भी, करने कभी अनिष्ट ।
फिर भी ईर्ष्या ईर्ष्यु को, देगी सदा अनिष्ट ।।

166. दानी-कृति को देखकर, जो जलता है आप ।
हो उसके परिवार में, प्यास-भूख का ताप ।।

167. असूयालु को इन्दिरा, अपनी ज्येष्ठाधीन ।
बना रही है रात दिन, खुद होकर स्वाधीन ।।

168. ईर्ष्या रूपी पापिनी, हर लेती है वित्त ।
ले जाने भी नरक तक बनती वहीनिमित्त ।।

169. है वैभव ईर्ष्यालु का, विधि-कृति का ही कार्य ।
अभाव ईर्ष्याहीन का, पूर्वजन्म का कार्य ।।

170. धन वैभव उनका नहीं, जो हो जलन-समेत ।
धन की क्षति उनकी नहीं, जो हो ईर्ष्यापेत ।।

17. FREEDOM FROM ENVY

17. அழுக்காறாமை

ஒழுக்காறாக் கொள்க ஒருவன்தன் நெஞ்சத்து
அழுக்காறு இலாத இயல்பு. 161

விழுப்பேற்றின் அஃதொப்பது இல்லையார் மாட்டும்
அழுக்காற்றின் அன்மை பெறின். 162

அறனாக்கம் வேண்டாதான் என்பான் பிறனாக்கம்
பேணாது அழுக்கறுப் பான். 163

அழுக்காற்றின் அல்லவை செய்யார் இழுக்காற்றின்
ஏதம் படுபாக்கு அறிந்து. 164

அழுக்காறு உடையார்க்கு அதுசாலும் ஒன்னார்
வழுக்கியும் கேடீன் பது. 165

கொடுப்பது அழுக்கறுப்பான் சுற்றம் உடுப்பதூஉம்
உண்பதூஉம் இன்றிக் கெடும். 166

அவ்வித்து அழுக்காறு உடையானைச் செய்யவள்
தவ்வையைக் காட்டி விடும். 167

அழுக்காறு எனஒரு பாவி திருச்செற்றுத்
தீயுழி உய்த்து விடும். 168

அவ்விய நெஞ்சத்தான் ஆக்கமும் செவ்வியான்
கேடும் நினைக்கப் படும். 169

அழுக்கற்று அகன்றாரும் இல்லை அஃதில்லார்
பெருக்கத்தில் தீர்ந்தாரும் இல். 170

निस्पृहता

171. जो है पर से वित्तहर, चलकर अनुचित राह ।
उसका कुल निर्मूल ही, होगा और गुनाह ।।

172. नीति-मार्ग के त्याग से जिनको होती भीति ।
वे पर धन गत लाभ से करते कृति न अनीति ।।

173. जो चिर सुख हैं चाहते, वे नश्वर सुख भोग ।
कभीं नहीं है चाहते, नापि करें अघ-भोग ।।

174. इन्द्रिय विजयी जो तथा, ज्ञानी निर्मल चित्त ।
दीन दशा में भी नहीं, वे लेते पर-वित्त ।।

175. गहरे विस्तृत ज्ञान से होगा क्या उपकार ।
लालचवश सब से करें अगर बुरा आचार ।।

176. प्रसाद हरि का चाहता जो भी हो धर्मिष्ट ।
सो सोचें यदि अहित तो पाता वही अनिष्ट ।।

177. मत चाहो सो धन कभी, जो लालच से प्राप्त ।
उस धन से सुखचैन भी कभी नहीं संप्राप्त ।

178. उसके धन का क्षय नहीं, जिसका सदैव चित्त ।
चाहता नहीं जगत में और जनों का वित्त ।।

179. जो परधन नहि चाहते, धर्मी औ" मतिमान ।।
श्री जाती उनके यहाँ उचित पात्रता जान ।।

180. और-वित्त की कामना करना है क्षय देय ।
लोभ रहित धन से सदा होगी जय चिर गेय ।।

18. வெஃகாமை

நடுவின்றி நன்பொருள் வெஃகின் குடிபொன்றிக்
குற்றமும் ஆங்கே தரும். 171

படுபயன் வெஃகிப் பழிப்படுவ செய்யார்
நடுவன்மை நாணு பவர். 172

சிற்றின்பம் வெஃகி அறனல்ல செய்யாரே
மற்றின்பம் வேண்டு பவர். 173

இலமென்று வெஃகுதல் செய்யார் புலம்வென்ற
புன்மையில் காட்சி யவர். 174

அஃகி அகன்ற அறிவென்னாம் யார்மாட்டும்
வெஃகி வெறிய செயின். 175

அருள்வெஃகி ஆற்றின்கண் நின்றான் பொருள்வெஃகிப்
பொல்லாத சூழக் கெடும். 176

வேண்டற்க வெஃகியாம் ஆக்கம் விளைவயின்
மாண்டற் கரிதாம் பயன். 177

அஃகாமை செல்வத்திற்கு யாதெனின் வெஃகாமை
வேண்டும் பிறன்கைப் பொருள். 178

அறனறிந்து வெஃகா அறிவுடையார்ச் சேரும்
திறன்அறிந் தாங்கே திரு. 179

இறல்ஈனும் எண்ணாது வெஃகின் விறல்ஈனும்
வேண்டாமை என்னும் செருக்கு. 180

चुगल खोरी का अभाव

181. धर्म नाम लेते बिना करने से अघ काम ।
पिशुन-नाम पाना नहीं यह है अच्छा काम ।।

182. धर्म नष्ट कर पाप की कृति करने से हेय ।
मुँह में स्तुति है बगल में निन्दा ही अवधेय ।।

183. मरण भला है जगत में संमुख में तारीफ़ ।
औ दूषण से बगल में, चाहे नहि तकलीफ़ ।।

184. कोई बोलें सामने यद्यपि वचन कठोर ।
पीछे कभी न चाहिये कहना वचन कठोर ।।

185. पिशुन जीभ से धर्मकी यदि करता तारीफ़ ।
तो भी उसका चित्त है कलुषित सदा अजीब ।।

186. जो यदि करता और पर निन्दनीय आरोप ।
वह औरों से निंद्य हो तथा बने सारोप ।।

187. जो करता नहिं मित्रता मधु वच से अनमोल ।
अलग कराता बंधु को वह पीछे कटु बोल ।।

188. जो करता है मित्र पर कठोर दोषारोप ।
वह न रहेगा और पर बिना किये आरोप ।।

189. सहनशीलता धर्म है - ऐसा सोच विचार ।
करके ढोती भूमि नित पिशुन मनुज का भार ।

190. पर दूषण की खोज सम यदि ढूँढे निज दोष ।
तो ऐसे चिरजीव को दुख नहि, हो संतोष ।।

19. புறங்கூறாமை

அறங்கூறான் அல்ல செயினும் ஒருவன்
புறங்கூறான் என்றல் இனிது. **181**

அறனழீஇ அல்லவை செய்தலின் தீதே
புறனழீஇப் பொய்த்து நகை. **182**

புறங்கூறிப் பொய்த்துயிர் வாழ்தலின் சாதல்
அறங்கூறும் ஆக்கந் தரும். **183**

கண்நின்று கண்ணறச் சொல்லினும் சொல்லற்க
முன்இன்று பின்நோக்காச் சொல். **184**

அறஞ்சொல்லும் நெஞ்சத்தான் அன்மை புறஞ்சொல்லும்
புன்மையாற் காணப் படும். **185**

பிறன்பழி கூறுவான் தன்பழி யுள்ளும்
திறன்தெரிந்து கூறப் படும். **186**

பகச்சொல்லிக் கேளிர்ப் பிரிப்பர் நகச்சொல்லி
நட்பாடல் தேற்றா தவர். **187**

துன்னியார் குற்றமும் தூற்றும் மரபினார்
என்னைகொல் ஏதிலார் மாட்டு. **188**

அறன்நோக்கி ஆற்றுங்கொல் வையம் புறன்நோக்கிப்
புன்சொல் உரைப்பான் பொறை. **189**

ஏதிலார் குற்றம்போல் தம்குற்றங் காண்கிற்பின்
தீதுண்டோ மன்னும் உயிர்க்கு. **190**

बेकार बात का अनुपयोग

191. अनेक जन से घृणित जो करता वार्तालाप ।
वह बनता सब जनों का हास्य-पात्र है आप ।।

192. बातें निष्फल बोलना बहुत जनों के बीच ।
है मित्राहित-कार्य से समझा जाता नीच ।।

193. जिसकी बातें व्यर्थ हैं तथैव विशदाकार ।
वही नीति से रहित है भाषणसूचक सार ।।

194. विफल वचन कटु बोलना बहुत जनों के बीच ।
हित से विहीन और हो अधर्म से युत नीच ।।

195. यदि सुशील कोई करें निष्फल वचन प्रयोग ।
उससे होते अलग ही गौरव औ'' यश योग ।।

196. प्रयोग निष्फल शब्द का करता है जो व्यक्ति ।
कहलाता है नहि मनुज, भूसा समझो व्यक्ति ।।

197. भले कहें हो जन बड़े कहीं नीति बिनु शब्द ।
किन्तु इसी में निहित हित, कहें न असफल शब्द ।।

198. महाप्रयोजन खोजकर कृति करते सविवेक ।
वे अतिशुभ फल हीन वच नहि कहते भी अेक ।।

199. जो नर विवेक सहित है तथैव कलंकहीन ।
कहते भी वे भूलकर वचन नहीं फलहीन ।।

200. कहना हैतो बोलिये सफल अर्थ के शब्द ।
कभी न अेसा बोलियेजिसमें हो अपशब्द ।।

20. பயனில சொல்லாமை

பல்லார் முனியப் பயனில சொல்லுவான்
எல்லாரும் எள்ளப் படும். 191

பயனில பல்லார்முன் சொல்லல் நயனில
நட்டார்கண் செய்தலின் தீது. 192

நயனிலன் என்பது சொல்லும் பயனில
பாரித் துரைக்கும் உரை. 193

நயன்சாரா நன்மையின் நீக்கும் பயன்சாராப்
பண்பில்சொல் பல்லா ரகத்து. 194

சீர்மை சிறப்பொடு நீங்கும் பயனில
நீர்மை யுடையார் சொலின். 195

பயனில்சொல் பாராட்டு வானை மகன்எனல்
மக்கட் பதடி யெனல். 196

நயனில சொல்லினுஞ் சொல்லுக சான்றோர்
பயனில சொல்லாமை நன்று. 197

அரும்பயன் ஆயும் அறிவினார் சொல்லார்
பெரும்பயன் இல்லாத சொல். 198

பொருள்தீர்ந்த பொச்சாந்துஞ் சொல்லார் மருள்தீர்ந்த
மாசறு காட்சி யவர். 199

சொல்லுக சொல்லிற் பயனுடைய சொல்லற்க
சொல்லிற் பயனிலாச் சொல். 200

बुरे कार्य से भय

201. कुकर्म रूपी मोह से पापी नहिं भयभीत ।
सुकर्मकारी लोग तो अघ से हैं भयभीत ।।
202. माना जाता है सदा पाप-कार्य दुख-देय ।
आग-सुदृश वह भीम है तजे उसे भय-देय ।।
203. विवेकयुत कृति जाल में सर्वोपरि आचार ।
अपने हिंसक शत्रु पर कभी न करता वार ।।
204. यदि कोई भी भूलकर सोचें पर की हानि ।
सोचेगा तो धर्म भी सदैव उसकी हानि ।।
205. "मैं हूँ दारिद" समझकर कोई करें न पाप ।
यदि कर लें यह औ" बनें दारिदतर भी आप ।।
206. कोई चाहें पाप से पीडित अगर न आप ।
तो नहिं करना चाहिये अन्यों के प्रति पाप ।।
207. महान रिपु से आप ही बच सकता है व्यक्ति ।
दुरित कर्म के शत्रु से पर बचता ना व्यक्ति ।।
208. जो करता है दुष्कर्म सो पाता अवसान ।
छाँह मनुज को छोडकर जाती नहि है आन ।।
209. यदि कोई भी चाहता अपने का परिपाल ।
तो यह रखें न चित्त में पाप-कार्य का ख्याल ।।
210. अविनाशी समझो उसे जो न करें अघकाम ।
और पाप की तरफ़ वह लखे नहीं अविराम ।।

21. தீவினையச்சம்

தீவினையார் அஞ்சார் விழுமியார் அஞ்சுவர்
தீவினை என்னுஞ் செருக்கு. 201

தீயவை தீய பயத்தலால் தீயவை
தீயினும் அஞ்சப் படும். 202

அறிவினுள் எல்லாந் தலையென்ப தீய
செறுவார்க்கும் செய்யா விடல். 203

மறந்தும் பிறன்கேடு சூழற்க சூழின்
அறஞ்சூழும் சூழ்ந்தவன் கேடு. 204

இலன்என்று தீயவை செய்யற்க செய்யின்
இலனாகும் மற்றும் பெயர்த்து. 205

தீப்பால தான்பிறர்கண் செய்யற்க நோய்ப்பால
தன்னை அடல்வேண்டா தான். 206

எனைப்பகை யுற்றாரும் உய்வர் வினைப்பகை
வீயாது பின்சென்று அடும். 207

தீயவை செய்தார் கெடுதல் நிழல்தன்னை
வீயாது அடிஉறைந் தற்று. 208

தன்னைத்தான் காதல னாயின் எனைத்தொன்றும்
துன்னற்க தீவினைப் பால். 209

அருங்கேடன் என்பது அறிக மருங்கோடித்
தீவினை செய்யான் எனின். 210

लौकिक जीवन जानना

211. फरज निभाता मेघ सम उपकारी है संत ।
प्रत्युपकार न चाहता जग से कभी अनन्त ।।

212. श्रम मे अर्जित वित्त जो आता पर का काम ।
सिद्ध यही है जगत में योग्य मनुज का दाम ।।

213. सुरजग औ" नरलोक में परोपकार समान ।
और काम नहि हितकरी जानें यह इनसान ।।

214. जगगति वेत्ता मनुज को समझो सदा सजीव ।
जगगति विहीन मनुज को तुम जानो निर्जीव ।।

215. ज्यों पानीयुत झील का होता जनोपयोग ।
त्यों जगगति-गामी-विभव होता परोपयोग ।।

216. ग्राम मध्य ज्यों सुफल तरु समझे सार्वजनीन ।
त्यों हितकारी मनुज को धन हो सार्वजनीन ।।

217. ज्यों तरु का हर अंग है करता औषध काम ।
त्यों उदार नर का विभव आता पर का काम ।।

218. अभाव में भी नर सुधी करके हीं करणीय ।
हैं पर के उपकार में बनते परिगणनीय ।।

219. उपकारी की रिक्तता यह बतलायी जाय ।
अभाव में अफ़सोस भी करना हो असहाय ।।

220. यद्यपि परोपकार से अपनी होगी हानि ।
तो भी निज को बेचकर मोल-योग्य वह हानि ।।

22. BENEVOLENCE

22. ஒப்புரவறிதல்

கைம்மாறு வேண்டா கடப்பாடு மாரிமாட்டு
என்ஆற்றுங் கொல்லோ உலகு. 211

தாளாற்றித் தந்த பொருளெல்லாம் தக்கார்க்கு
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு. 212

புத்தே ளுலகத்தும் ஈண்டும் பெறலரிதே
ஒப்புரவின் நல்ல பிற. 213

ஒத்த தறிவான் உயிர்வாழ்வான் மற்றையான்
செத்தாருள் வைக்கப் படும். 214

ஊருணி நீர்நிறைந் தற்றே உலகுஅவாம்
பேரறி வாளன் திரு. 215

பயன்மரம் உள்ளூர்ப் பழுத்தற்றால் செல்வம்
நயனுடை யான்கண் படின். 216

மருந்தாகித் தப்பா மரத்தற்றால் செல்வம்
பெருந்தகை யான்கண் படின். 217

இடனில் பருவத்தும் ஒப்புரவிற்கு ஒல்கார்
கடனறி காட்சி யவர். 218

நயனுடையான் நல்கூர்ந்தா னாதல் செயும்நீர
செய்யாது அமைகலா வாறு. 219

ஒப்புரவி னால்வரும் கேடெனின் அஃதொருவன்
விற்றுக்கோள் தக்க துடைத்து. 220

दान की महत्ता

221. निर्धन को जो देय है वह है सचमुच दान ।
बाकी सब हैं दान जो प्रतिप्रयोजनवान ।।

222. उचित मार्ग ही क्यों न हो, लेना दान न श्रेय ।
यदपि मुक्ति ना तो मिले प्रदान फिर भी श्रेय ।।

223. निज को निर्धन ना कथन, देना पर को दान ।
दोनों ही कुलजात में विद्यमान नहि आन ।।

224. याचक की अभियाचना जब तक नहि है प्राप्त ।
तब तक याचन का वदन प्रसन्नता नहि प्राप्त ।।

225. भूख-दमन की योग्यता रखते हैं मुनि लोग ।
भूख मिटाने योग्यता रखते दानी लोग ।।

226. धनिक कोषवह है सही जिससे धनयुत लोग ।
निरसन जरूर ही करें दारिद का क्षुत-शोक ।।

227. पर को देकर जो स्वयं खाता है आहार ।
भूख-रोग का वह कभी बनता नहीं शिकार ।।

228. धन-संचय कर और को अनुपयुक्त रह जाय ।
अैसे अमीर दान का हर्ष न समझा जाय ।।

229. दुखमय है वह भीख से जो नहि परोपयुक्त ।
तथैव अपने आप को हो जाता उंपयुक्त ।।

230. दुखमय है तो मरण हो फिर भी तो अवधेय ।
निर्धन को देना नहीं, सब से है दुख-देय ।।

23. BOUNTY (CHARITY)

23. ஈகை

வறியார்க்கொன்று ஈவதே ஈகைமற் றெல்லாம்
குறியெதிர்ப்பை நீர துடைத்து. 221

நல்லாறு எனினும் கொளல்தீது மேலுலகம்
இல்லெனினும் ஈதலே நன்று. 222

இலனென்னும் எவ்வம் உரையாமை ஈதல்
குலனுடையான் கண்ணே உள. 223

இன்னாது இரக்கப் படுதல் இரந்தவர்
இன்முகங் காணும் அளவு. 224

ஆற்றுவார் ஆற்றல் பசிஆற்றல் அப்பசியை
மாற்றுவார் ஆற்றலின் பின். 225

அற்றார் அழிபசி தீர்த்தல் அஃதொருவன்
பெற்றான் பொருள்வைப் புழி. 226

பாத்தூண் மரீஇ யவனைப் பசிஎன்னும்
தீப்பிணி தீண்டல் அரிது. 227

ஈத்துவக்கும் இன்பம் அறியார்கொல் தாமுடைமை
வைத்திழக்கும் வன்க ணவர். 228

இரத்தலின் இன்னாது மன்ற நிரப்பிய
தாமே தமியர் உணல். 229

சாதலின் இன்னாத தில்லை இனிததூஉம்
ஈதல் இயையாக் கடை. 230

कीर्ति की गरिमा

231. दीन मदद कर जिन्दगी चलना यश का मूल ।
अैसा जीवन जीव को सब से है अनुकूल ।।

232. उसका ही गुणगान हैं करते शंसक लोग ।
जो याचक को दान में देता है निश्शोक ।।

233. अनुपम यश संसार में होता नहीं विनाश ।
शेष सभी हैं जगत में पाते सत्यानाश ।।

234. इस जग में स्थिर यशकरी जो करता है काम ।
अभिनन्दन करता स्वरग लेके उसका नाम ।।

235. अभाव में यश-वृद्धि औ विनाश में अविनाश ।
ज्ञानी विनु ये और में संभव नहि, शाबाश ।।

236. लेना सुजन्म चाहिये जिसमें यश हो जाय ।
यश बिनु लेना नहि जनम, समुचित समझा जाय ।।

237. जो नर नामी है नही, वह निन्दक नहि आप ।
निज निन्दक को देखकर होता उसको ताप ।।

238. यदि नहि मिलती मनुज को वंशगता ही कीर्ति ।
तो मिलती संसार में उसे सिर्फ़ अपकीर्ति ।।

239. जब ढोती है भूमि तो यशहीन का भार ।
तब भू की भी ह्रास है होती पैदावार ।।

240. निर्मल यशयुत जो जिये समझें वही सजीव ।
कीरति विहीन जो जियें समझे सो निरजीव ।।

24. புகழ்

ஈதல் இசைபட வாழ்தல் அதுவல்லது
ஊதியம் இல்லை உயிர்க்கு. **231**

உரைப்பார் உரைப்பவை எல்லாம் இரப்பார்க்கொன்று
ஈவார்மேல் நிற்கும் புகழ். **232**

ஒன்றா உலகத்து உயர்ந்த புகழல்லால்
பொன்றாது நிற்பதொன்று இல். **233**

நிலவரை நீள்புகழ் ஆற்றின் புலவரைப்
போற்றாது புத்தேள் உலகு. **234**

நத்தம்போல் கேடும் உளதாகும் சாக்காடும்
வித்தகர்க் கல்லால் அரிது. **235**

தோன்றின் புகழொடு தோன்றுக அஃதிலார்
தோன்றலின் தோன்றாமை நன்று. **236**

புகழ்பட வாழாதார் தந்நோவார் தம்மை
இகழ்வாரை நோவது எவன். **237**

வசையென்ப வையத்தார்க் கெல்லாம் இசையென்னும்
எச்சம் பெறாஅ விடின். **238**

வசையிலா வண்பயன் குன்றும் இசையிலா
யாக்கை பொறுத்த நிலம். **239**

வசையொழிய வாழ்வாரே வாழ்வார் இசையொழிய
வாழ்வாரே வாழா தவர். **240**

(III) On Asceticism संन्यास-धर्म कृपालुता

241. निखिल धनों में उच्च है करुणा रूपी वित्त ।
तुच्छ जनों के पास भी वस्तुमयी है वित्त ।।
242. सत्पथगामी खोजकर जीवें करुणावान ।
कई रीतियों से दया ठहरी आश्रयवान ।।
243. तममय दुखमय जगत को नहि जाता सो व्यक्ति ।
दयाभाव पर जो नफ़र रखता है आसक्ति ।।
244. पर जीवों पर जो दया करता रक्ष समेत ।
उसे न लगते अघकर्म असुहर भीति-समेत ।।
245. उनको नहि है वेदना जो हो करूणावान ।
वायुसंचरित उपजयुत, विभु भू निदर्शवान ।।
246. दयाहीन जो पाप के करते कार्यकलाप ।
धर्मकर्म वे छोडकर भूलें अपना ताप ।।
247. दयाहीन को प्राप्त नहि आमुष्मिक सुख-भोग ।
मालहीन को प्राप्त नहि ऐहिक सुख का भोग ।।
248. मालहींन फिर समय पर बनता मालामाल ।
दयाहीन नित हो रिक्त यह है बुध का ख्याल ।।
249. ज्यों है अनुचित मूढ का पोथी-तत्व-विचार ।
त्यों अनुचित है अदय से विरचित पुण्याचार ।।

250. जब दुर्बल पर अदय है करता अत्याचार ।
सोचें खुद को अदय तब सबल मध्य लाचार ।।

25. COMPASSION

25. அருளுடைமை

அருட்செல்வம் செல்வத்துள் செல்வம் பொருட்செல்வம்
பூரியார் கண்ணும் உள. 241

நல்லாற்றால் நாடி அருளாள்க பல்லாற்றால்
தேரினும் அஃதே துணை. 242

அருள்சேர்ந்த நெஞ்சினார்க் கில்லை இருள்சேர்ந்த
இன்னா உலகம் புகல். 243

மன்னுயிர் ஓம்பி அருளாள்வார்க்கு இல்லென்ப
தன்னுயிர் அஞ்சும் வினை. 244

அல்லல் அருளாள்வார்க்கு இல்லை வளிவழங்கும்
மல்லல்மா ஞாலம் கரி. 245

பொருள்நீங்கிப் பொச்சாந்தார் என்பர் அருள்நீங்கி
அல்லவை செய்தொழுகு வார். 246

அருளில்லார்க்கு அவ்வுலகம் இல்லை பொருளில்லார்க்கு
இவ்வுலகம் இல்லாகி யாங்கு. 247

பொருளற்றார் பூப்பர் ஒருகால் அருளற்றார்
அற்றார்மற் றாதல் அரிது. 248

தெருளாதான் மெய்ப்பொருள் கண்டற்றால் தேரின்
அருளாதான் செய்யும் அறம். 249

வலியார்முன் தன்னை நினைக்கதான் தன்னின்
மெலியார்மேல் செல்லும் இடத்து. 250

माँस का अनशन

251. निजी देह को पालने ज़ो खाता पर'' माँस ।
कैसा बनता वह सदय? अशन करे मत माँस ।।

252. धनगत सुख उसको नहीं जो नहि है धन-पाल ।
दयाभोग उसको नहीं जो खाता झषजाल ।।

253. ज्यों सशस्त्रका दिल कभी बने न कृपा समेत ।
त्यों आमिष भुक् का हृदय नहि करुणासमवेत ।।

254. हिंसा तजना है दया वध करना है पाप ।
इसी लिये भी माँस का सेवन करना पाप ।।

255. आमिष खाना छोडना समझा जाता धर्म ।
आमिष सेवी नरक से बचता नहि, यह मर्म ।।

256. माँसाहारी जगत में यदि नहि होते लोग ।
तो कैसे रहतेकहाँ ? हिंस्र कसाई लोग ।।

257. आमिष प्राणीघाव है ऐसा समझा जाय ।
आमिष का अनशन सदा अपनाया हीं जाय ।।

258. प्राणी वध से लब्धजो मृततन सो है माँस ।
दोषहीन मतिमान तो खाते नहि हैं माँस ।।

259. हवन आग में डालकर करना क्या शत याग ।
उत्तम समझें ना करे माँम-भोज पर राग ।।

260. प्राणीघातक जो नहीं औ'' तज माँसाहार ।
उसको करते जीव सब सांजलि वन्दनवार ।।

26. புலால் மறுத்தல்

தன்னூன் பெருக்கற்குத் தான்பிறிது ஊனுண்பான்
எங்ஙனம் ஆளும் அருள். 251

பொருளாட்சி போற்றாதார்க்கு இல்லை அருளாட்சி
ஆங்கில்லை ஊன்தின் பவர்க்கு. 252

படைகொண்டார் நெஞ்சம்போல் நன்றூக்காது ஒன்றன்
உடல்சுவை உண்டார் மனம். 253

அருளல்லது யாதெனின் கொல்லாமை கோறல்
பொருளல்லது அவ்வூன் தினல். 254

உண்ணாமை உள்ளது உயிர்நிலை ஊனுண்ண
அண்ணாத்தல் செய்யாது அளறு. 255

தினற்பொருட்டால் கொல்லாது உலகெனின் யாரும்
விலைப்பொருட்டால் ஊன்தருவார் இல். 256

உண்ணாமை வேண்டும் புலாஅல் பிறிதொன்றன்
புண்ணது உணர்வார்ப் பெறின். 257

செயிரின் தலைப்பிரிந்த காட்சியார் உண்ணார்
உயிரின் தலைப்பிரிந்த ஊன். 258

அவிசொரிந்து ஆயிரம் வேட்டலின் ஒன்றன்
உயிர்செகுத் துண்ணாமை நன்று. 259

கொல்லான் புலாலை மறுத்தானைக் கைகூப்பி
எல்லா உயிரும் தொழும். 260

तपस्या की महिमा

261. सहना स्वापन्न दुख को, जीव अहिंसा भाव ।
ये दोनों हैं जगत में तप के सही स्वभाव ।।

262. तपोसिद्धि उनको मिले जो जापक बहु जन्म ।
तपोसिद्ध उनको नहीं तपी न जो बहु जन्म ।।

263. यति जन के उपचार में गृहस्थ हो तत्लीन ।
शायद हो जाते सदा तापस कर्म-विहीन ।।

264. प्रियजन का उत्थान औ" रिपू जन का अवसान ।
सुमिरण से ही साध्य है तप तो सुशक्तिमान ।।

265 जो कुछ इच्छित हृदय में सो सब तप से लभ्य ।
इसीलिये इस लोक में करना है तप तप्य ।।

266. जो नर करता है तपस सो बनता कृतकृत्य ।
कामी बनकर शेष सब करते हैं दुष्कृत्य ।।

267. जैसा सोना आग में तपकर शोभावान ।
वैसा करने से तपस विवेक विवर्द्धमान ।।

268. जिसके मन में है नहीं अहंकार का भाव ।
उसके प्रतिं हैं जीव सब रखते सेवा-भाव ।।

269. तपस-सिद्धि जिसको मिली वह हो अतिबलवान ।
बचा सकें तो काल से सदैव अपनी जान ।।

270. तप करके संसार में धनी हुये कुछ लोग ।
तप ना करके जगत में रिक्त हुये बहु लोग ।।

27. தவம்

உற்றநோய் நோன்றல் உயிர்க்குறுகண் செய்யாமை
அற்றே தவத்திற் குரு. 261

தவமும் தவமுடையார்க்கு ஆகும் அவம்அதனை
அஃதிலார் மேற்கொள் வது. 262

துறந்தார்க்குத் துப்புரவு வேண்டி மறந்தார்கொல்
மற்றை யவர்கள் தவம். 263

ஒன்னார்த் தெறலும் உவந்தாரை ஆக்கலும்
எண்ணின் தவத்தான் வரும். 264

வேண்டிய வேண்டியாங் கெய்தலால் செய்தவம்
ஈண்டு முயலப் படும். 265

தவஞ்செய்வார் தங்கருமஞ் செய்வார்மற் றல்லார்
அவஞ்செய்வார் ஆசையுட் பட்டு. 266

சுடச்சுடரும் பொன்போல் ஒளிவிடும் துன்பஞ்
சுடச்சுட நோற்கிற் பவர்க்கு. 267

தன்னுயிர் தான்அறப் பெற்றானை ஏனைய
மன்னுயி ரெல்லாம் தொழும். 268

கூற்றம் குதித்தலும் கைகூடும் நோற்றலின்
ஆற்றல் தலைப்பட் டவர்க்கு. 269

இலர்பல ராகிய காரணம் நோற்பார்
சிலர்பலர் நோலா தவர். 270

मिथ्याचरण

271. कपटी का आचरण है तथ्यहीन आचार ।
यह लखकर मन में हसें पंचभूत तनु धार ।।

272. वेषा-भूषा तापसी धरकर है क्या लाभ ।
जान-बूझकर जबकि भी मानस कर लें पाप ।।

273. मनोबली जो है नही उसे वृथा मुनि-वेश ।
ज्यों चरती है गाय, धर बाघ-खाल का वेष ।।

274. तपो वेष में लीन रह जो करता दुष्कर्म ।
ज्यों किरात गोचर बिना करता शिकार-कर्म ।।

275. मिथ्याचारी बोलता "निज को बहुत विरक्त" ।
उसकें मिथ्याचार से सिर्फ शोक हो दत्त ।।

276. वही क्रूर है ज़ो सदा करता है छल-जाल ।
और तपीसम वेष से मन से ख़ल विकराल ।।

277. ऐसे नर हैं जगत में ज़ो गुंजा की भाँति ।
बाहर से तो साफ है अन्दर में तम-भाँति ।।

278. ऐसे नर ही हैं क़ई जो रखते तन साफ ।
पर मानस में कालिमा रखते बेइन्साफ ।।

279. कठोर सीधा बाण है टेटी वीणा रम्य ।
भले बुरे की जाँच हो नर कृति फल से गम्य ।।

280. जग से दूषित काम यदि अपनाया नहि जाय ।
केशमुंडन तो औ वृथा जटा धरण निरुपाय ।।

28. FALSE BEHAVIOUR

28. கூடா ஒழுக்கம்

வஞ்ச மனத்தான் படிற்றொழுக்கம் பூதங்கள்
ஐந்தும் அகத்தே நகும். 271

வானுயர் தோற்றம் எவன்செய்யும் தன்நெஞ்சம்
தான்அறி குற்றப் படின். 272

வலியில் நிலைமையான் வல்லுருவம் பெற்றம்
புலியின்தோல் போர்த்துமேய்ந் தற்று. 273

தவமறைந்து அல்லவை செய்தல் புதல்மறைந்து
வேட்டுவன் புள்சிமிழ்த் தற்று. 274

பற்றற்றேம் என்பார் படிற்றொழுக்கம் எற்றெற்றென்று
ஏதம் பலவுந் தரும். 275

நெஞ்சில் துறவார் துறந்தார்போல் வஞ்சித்து
வாழ்வாரின் வன்கணார் இல். 276

புறங்குன்றி கண்டனைய ரேனும் அகங்குன்றி
மூக்கிற் கரியார் உடைத்து. 277

மனத்தது மாசாக மாண்டார்நீ ராடி
மறைந்தொழுகு மாந்தர் பலர். 278

கணைகொடிது யாழ்கோடு செவ்விதுஆங் கன்ன
வினைபடு பாலால் கொளல். 279

மழித்தலும் நீட்டலும் வேண்டா உலகம்
பழித்தது ஒழித்து விடின். 280

चौर्यहीनता

281. स्तेय बुद्धि जिसकी नही, जग में वही सदैव ।
पर-दूषण से मुक्त है, बाकी दूषित अेव ।।

282. गलत सोचना चित्त में अहितकरी ठहराय ।।
अन्य वस्तु का ना हरण छल से हित ठहराय ।।

283. स्तेय लब्ध धन वृद्धिसम बढ़कर दिखें असीम ।
क्षति पाता है बाद में वह धन औ" निस्सीम ।।

284. स्तेय वृत्तिकी कामना जो होती निस्सीम ।
कार्य काल में हो वहीं दुखदायक निस्सीम ।।

285. असावधानी अन्य की लखकर स्तेय विचार ।
जो रखता है हृदय में उसमें रहम न प्यार ।।

286. चोरी करने में अधिक तत्पर हैं जो लोग ।
मर्यादा का दायरा न जानते वे लोग ।।

287. मर्यादामय जीविका अपनाते जो लोग ।
सदैव चोरी-अज्ञता नहि करते वे लोग ।।

288. मर्यादित के हृदय में ज्यों वढ़ता है धर्म ।
त्यों मानस में चोर के बढ़ता है छल-कर्म ।।

289. स्तेय वृत्ति बिनु औ करम जो न जानते रोज़ ।
वे करके निज बहु अहित करते क्षति की खोज ।।

290. स्तेय वृत्तियुत मनुज को नहि मिलता सुख-भोग ।
स्तेयहीन ही मनुज को मिलता इह-पर भोग ।।

29. கள்ளாமை

எள்ளாமை வேண்டுவான் என்பான் எனைத்தொன்றும்
கள்ளாமை காக்கதன் நெஞ்சு. 281

உள்ளத்தால் உள்ளலும் தீதே பிறன்பொருளைக்
கள்ளத்தால் கள்வேம் எனல். 282

களவினால் ஆகிய ஆக்கம் அளவிறந்து
ஆவது போலக் கெடும். 283

களவின்கண் கன்றிய காதல் விளைவின்கண்
வீயா விழுமம் தரும். 284

அருள்கருதி அன்புடைய ராதல் பொருள்கருதிப்
பொச்சாப்புப் பார்ப்பார்கண் இல். 285

அளவின்கண் நின்றொழுகல் ஆற்றார் களவின்கண்
கன்றிய காத லவர். 286

களவென்னும் காரறி வாண்மை அளவென்னும்
ஆற்றல் புரிந்தார்கண் இல். 287

அளவறிந்தார் நெஞ்சத் தறம்போல நிற்கும்
களவறிந்தார் நெஞ்சில் கரவு. 288

அளவல்ல செய்தாங்கே வீவர் களவல்ல
மற்றைய தேற்றா தவர். 289

கள்வார்க்குத் தள்ளும் உயிர்நிலை கள்ளார்க்குத்
தள்ளாது புத்தே ளுலகு. 290

सत्य की महानता

291. सत्य वचन संसार में वही कहाया जाय ।
जिससे जरा न अन्य को होता अहितापाय ।।

292. असत्य भाषण अगर हो दोषहीन-हित-देय ।
तो वह असत्य कथन भी सत्य सदृश आदेय ।।

293. सत्य जानकर हृदय में न करें मिथ्यावाद ।
मिथ्या भाषण आप को देगा ही अवसाद ।।

294. जान बूझकर हृदय से जो न कहे असत्य ।
जनता हृदय में वास तो करता है वह मर्त्य ।।

295. तपस दान संसार में रचते हैं जो लोग ।
उनसे वर है चित्त से सच कहते हैं जो लोग ।।

296. सत्य कथन सम जगत में और न यश का भोग ।
झूठ न कहना धर्म-फल देता है निश्शोक ।।

297. सत्यनिष्ठता सत्य से यदि अपनायी जाय ।
तो औ'' सुकर्म बिनु किये रहना भीं अनपाय ।।

298. होती बाहर नीर से शारीरिक है शुद्धि ।
होती भीतर सत्य से मानस की है शुद्धि ।।

299. अंधकार-हर दीप सब दीप नहीं कहलाय ।
साधु जनों को सत्य का दीप, दीप कहलाय ।।

300. देखे हमने जगत में भाव-विभाव अनेक ।
उनमें तजकर सत्यता बाकी भाव न नेक ।।

30. TRUTHFULNESS

30. வாய்மை

வாய்மை எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
தீமை இலாத சொலல். 291

பொய்ம்மையும் வாய்மை இடத்த புரைதீர்ந்த
நன்மை பயக்கும் எனின். 292

தன்நெஞ்சு அறிவது பொய்யற்க பொய்த்தபின்
தன்நெஞ்சே தன்னைச் சுடும். 293

உள்ளத்தால் பொய்யா தொழுகின் உலகத்தார்
உள்ளத்து ளெல்லாம் உளன். 294

மனத்தொடு வாய்மை மொழியின் தவத்தொடு
தானஞ்செய் வாரின் தலை. 295

பொய்யாமை அன்ன புகழில்லை எய்யாமை
எல்லா அறமும் தரும். 296

பொய்யாமை பொய்யாமை ஆற்றின் அறம்பிற
செய்யாமை செய்யாமை நன்று. 297

புறந்தூய்மை நீரான் அமையும் அகந்தூய்மை
வாய்மையால் காணப் படும். 298

எல்லா விளக்கும் விளக்கல்ல சான்றோர்க்குப்
பொய்யா விளக்கே விளக்கு. 299

யாம்மெய்யாக் கண்டவற்றுள் இல்லை எனைத்தொன்றும்
வாய்மையின் நல்ல பிற. 300

अमन्यु क्रोधहीनता

301. कोप जहाँ हो विफल नहि, वहाँ दबावें कोप।
दबा दिखाकर क्या भला विफल थान में कोप।।

302. जहाँ कोप है सफल नहि, वहाँ कोप नहि नेक।
जहाँ क्रोध फ़लवान है, रिस भी वहाँ न नेक।।

303 किसी जीव पर भी कभी नहीं दिखाना कोप।
अखिल अहित का मूल है माना जाता कोप।।

304. स्मृति घातक औ'' हर्ष का घातक है रिस भाव।
उससे बढ है कौनसा विद्यमान रिपु-भाव।।

305. निज का पालन यदि करें जो रिस से हो मुक्त।
कोप मुक्त यदि हो नहीं तो रिस निजवध युक्त।।

306. कोपयुक्त है कोप की ज्वाला से मृत भूत।
बांधव-पालन-नाव भी रिस से भस्मी भूत।।

307. कोप-वस्तु को मानकर कौन न पाता खेद।
भू पर कृत आघात से कर पाता दुख खेद।।

308. अनल-शिखा के सदृश यदि अहित किया ही जाय।
जो भी भरसक कोप बिनु रहना हित समझाय।।

309. इष्ट कार्य की सिद्धि तब होती है तत्काल।
जब मानस में कोप का किया न जाता ख्याल।।

310. कोपी को हम मानते हैं मृत मानव-तुल्य।
कोपहीन को समझ लें संयासी नर-तुल्य।।

31. வெகுளாமை

செல்லிடத்துக் காப்பான் சினங்காப்பான் அல்லிடத்துக்
காக்கின்என் காவாக்கால் என். **301**

செல்லா இடத்துச் சினந்தீது செல்லிடத்தும்
இல்அதனின் தீய பிற. **302**

மறத்தல் வெகுளியை யார்மாட்டும் தீய
பிறத்தல் அதனான் வரும். **303**

நகையும் உவகையும் கொல்லும் சினத்தின்
பகையும் உளவோ பிற. **304**

தன்னைத்தான் காக்கின் சினங்காக்க காவாக்கால்
தன்னையே கொல்லும் சினம். **305**

சினம்என்னும் சேர்ந்தாரைக் கொல்லி இனமென்னும்
ஏமப் புணையைச் சுடும். **306**

சினத்தைப் பொருளென்று கொண்டவன் கேடு
நிலத்தறைந்தான் கைபிழையா தற்று. **307**

இணர்எரி தோய்வன்ன இன்னா செயினும்
புணரின் வெகுளாமை நன்று. **308**

உள்ளிய தெல்லாம் உடனெய்தும் உள்ளத்தால்
உள்ளான் வெகுளி எனின். **309**

இறந்தார் இறந்தார் அனையர் சினத்தைத்
துறந்தார் துறந்தார் துணை. **310**

हिंसा हीनता - अहित न करना

311. निष्कलंक का लक्ष्य है महिमा गुण समवेत ।
वित्त प्राप्त भी कृति मना परहिंसा समवेत ।।

312. निर्दोषी का लक्ष्य है रिस से परकृत हानि ।
तभी भूलकर और की नहि करनी प्रतिहानि ।।

313. अहित किये बिनु और का जो करता प्रति-हानि ।
उसको निश्चय बाद में होगी अपनी हानि ।।

314. अहितकरी की है सजा-लज्जित हो वह व्यक्ति ।
प्रतिकारी की तथ्यमय सुनकर हित की उक्ति ।।

315. पर दुख को निज खेदसम अवगत कर परिहार ।
यदि न करें तो बुद्धि क्या रखने से क्या सार ।।

316. जो भी कृति अपने लिये अहितमयी ठहराय ।
अन्यों के प्रति कृति वही कभी किया नहि जाय ।।

317. श्रेष्ठ धर्म संसार में वही कहाया जाय ।
कभी किसी को अल्प भी नहीं सताया जाय ।।

318. जो कृति है अपने लिये हित नहिं समझी जाय ।
सो कृति औरों के लिये कैसे हितकर भाय ।।

319. अगर सबेरे और को दिया गया संताप ।
तो अपने को साँझ में होगा वह संताप ।।

320. अहितकरों को पहुँचते हो सारे दुख-शोक ।
सुखमय जीवन बीतने नहि देना दुख-शोक ।।

32. NON-INJURY (NONVIOLENCE)

32. இன்னா செய்யாமை

சிறப்புஈனும் செல்வம் பெறினும் பிறர்க்குஇன்னா
செய்யாமை மாசற்றார் கோள். 311

கறுத்துஇன்னா செய்தவக் கண்ணும் மறுத்துஇன்னா
செய்யாமை மாசற்றார் கோள். 312

செய்யாமல் செற்றார்க்கும் இன்னாத செய்தபின்
உய்யா விழுமம் தரும். 313

இன்னா செய்தாரை ஒறுத்தல் அவர்நாண
நன்னயம் செய்து விடல். 314

அறிவினான் ஆகுவ துண்டோ பிறிதின்நோய்
தந்நோய்போல் போற்றாக் கடை. 315

இன்னா எனத்தான் உணர்ந்தவை துன்னாமை
வேண்டும் பிறன்கண் செயல். 316

எனைத்தானும் எஞ்ஞான்றும் யார்க்கும் மனத்தானாம்
மாணாசெய் யாமை தலை. 317

தன்னுயிர்க்கு இன்னாமை தானறிவான் என்கொலோ
மன்னுயிர்க்கு இன்னா செயல். 318

பிறர்க்குஇன்னா முற்பகல் செய்யின் தமக்குஇன்னா
பிற்பகல் தாமே வரும். 319

நோய்எல்லாம் நோய்செய்தார் மேலவாம் நோய்செய்யார்
நோயின்மை வேண்டு பவர். 320

अनवध्यता

321. धर्म कार्य का अर्थ है जीव हनन का त्याग ।
जीव हनन सब पाप का दायक हो, तू जाग ॥

322. भोजन करना बाँटकर, जीवरक्ष का कर्म ।
ग्रंथकार के शास्त्र में सर्वोपरि है धर्म ॥

323. जीवों की अनवध्यता सर्वोपरि है धर्म ।
सत्य बोलना दूसरा समझा जाता धर्म ॥

324. वही मार्ग संसार में कहलाता सन्मार्ग ।
जीव रक्ष मय नीति को कहता है जो मार्ग ॥

325. भव भय से तो भीत सब रहते हैं यति लोग ।
उनमें से भी श्रेष्ठ हैं अवध्य धर्मी लोग ॥

326. अवध नियम का अनुसरण करता है जो जीव ।
काल पाश से ग्रस्त नहि जीवन भर वह जीव ॥

327. यदि निज तन से प्राण भी विमुक्त हो ही जाय ।
तो भी औ प्रिय जीव का नाश किया नहि जाय ॥

328. जीव हनन से भूरि धन यदि हो हितकर लब्ध ।
तो हो निकृष्ट विज्ञ को वह धन वध से लब्ध ॥

329. वध जीवी जो लोग हैं, वे नहि है उत्कृष्ट ।
पालन धर्मी मानते उनको सदा निकृष्ट ॥

330. जीव वधक हैं सतत हो रोग सहित वपुमान ।
उनका जीवन सुखद नहिं तथैव अभाववान ॥

33. NON-KILLING

33. கொல்லாமை

அறவினை யாதெனில் கொல்லாமை கோறல்
பிறவினை எல்லாந் தரும். 321

பகுத்துண்டு பல்லுயிர் ஓம்புதல் நூலோர்
தொகுத்தவற்றுள் எல்லாந் தலை. 322

ஒன்றாக நல்லது கொல்லாமை மற்றுஅதன்
பின்சாரப் பொய்யாமை நன்று. 323

நல்லாறு எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
கொல்லாமை சூழும் நெறி. 324

நிலைஅஞ்சி நீத்தாருள் எல்லாம் கொலைஅஞ்சிக்
கொல்லாமை சூழ்வான் தலை. 325

கொல்லாமை மேற்கொண் டொழுகுவான் வாழ்நாள்மேல்
செல்லாது உயிருண்ணுங் கூற்று. 326

தன்னுயிர் நீப்பினும் செய்யற்க தான்பிறிது
இன்னுயிர் நீக்கும் வினை. 327

நன்றாகும் ஆக்கம் பெரிதெனினும் சான்றோர்க்குக்
கொன்றாகும் ஆக்கம் கடை 328

கொலைவினைய ராகிய மாக்கள் புலைவினையர்
புன்மை தெரிவா ரகத்து. 329

உயிர்உடம்பின் நீக்கியார் என்ப செயிர்உடம்பின்
செல்லாத்தீ வாழ்க்கை யவர். 330

चंचलता - अस्थिरता

331. मन्द बुद्धि की राय है जो है विनाशवान ।
नित्य समझना है उसे, यह मत है लघुमान ।।

332. रंग भूमि की भीड़सम धन बढता शुरुआत ।
सभा-विसर्जन-कालसम धन होता अवसाद ।।

333. चंचल गुण है वित्त का अगर मिलें तो वित्त ।
उसी समय से धर्म में तत्पर होवें चित्त ।।

334. तत्व समझना चाहिये, नर-जीवन संहार ।
करता ही है क्रमिक से दिवसमयी असिधार ।।

335. गलावरोधन पूर्व औ हिचकी विहीन पर्व ।
तुरंत करना चाहिये पुण्यमयी कृति सर्व ।।

336. जो था कल वह आज तो चला गया सुर लोक ।
इसी रीति की मुख्यता रखता है नर लोक ।।

337. जिनको नहि इक दिवस का जीवन-यापन बोध ।
सोचें सीमाहीन वे विचार विविध अबोध ।।

338. अंडे से होकर अलग खग उडता जिस भाँति ।
देही भी है देह से हट जाता उस भाँति ।।

339. मरण जन्तु का नींदसम जैसा माना जाय ।
जागृति-सम है जन्म तो वैसा जाना जाय ।।

340. कभी नहीं चिर गेह में निवास करता जीव ।
भाडे की सी देह में रहता हो जनु जीव ।।

34. IMPERMANENCE

34. நிலையாமை

நில்லாத வற்றை நிலையின என்றுணரும்
புல்லறி வாண்மை கடை. 331

கூத்தாட்டு அவைக்குழாத் தற்றே பெருஞ்செல்வம்
போக்கும் அதுவிளிந் தற்று. 332

அற்கா இயல்பிற்றுச் செல்வம் அதுபெற்றால்
அற்குப ஆங்கே செயல். 333

நாளென ஒன்றுபோல் காட்டி உயிர்ஈரும்
வாளது உணர்வார்ப் பெறின். 334

நாச்செற்று விக்குள்மேல் வாராமுன் நல்வினை
மேற்சென்று செய்யப் படும். 335

நெருநல் உளனொருவன் இன்றில்லை என்னும்
பெருமை உடைத்துஇவ் வுலகு. 336

ஒருபொழுதும் வாழ்வது அறியார் கருதுப
கோடியும் அல்ல பல. 337

குடம்பை தனித்துஒழியப் புள்பறந் தற்றே
உடம்பொடு உயிரிடை நட்பு. 338

உறங்கு வதுபோலும் சாக்காடு உறங்கி
விழிப்பது போலும் பிறப்பு. 339

புக்கில் அமைந்தின்று கொல்லோ உடம்பினுள்
துச்சில் இருந்த உயிர்க்கு. 340

वैराग्य विरागभाव

341. जिन चीजों की चाह से जो होता हैं मुक्त ।
उन चीजों के क्लेश से वह होता है मुक्त ।।

342. धनवैभव के समय पर यदि चाहे सुख भोग ।
उनकी विरक्ति चाहिये जिससे हो बहु भोग ।।

343. पंचेन्द्रिय का दमन कर तजना है अनुराग ।
ऐसा करना चाहिये विषय सुखों का त्याग ।।

344. निस्पृहता तप के लिये सहज धर्म बन जाय ।
सस्पृहता फिर क्षोभ का कारण समझा जाय ।।

345. भव भय मुमुक्षु के लिये भारमयी है देह ।
फिर तो समझें दुखद है औ" पर रखना नेह ।।

346. मदीयता के गर्व जो करता है उत्सर्ग ।
प्राप्त करेगा विभु वही सुरदुर्लभ अपवर्ग ।।

347. मदीयता के भाव से नहि जो हुये विमुक्त ।
विपद-जाल भी नित नहीं उनसे 'कभी वियुक्त ।।

348. वे जाते हैं मुक्ति थल जो रहते निष्काम ।
फँसते हैं भव मोह में बाकी सभी सकाम ।।

349. अनासक्ति ही जब हुई तब हो भव से मुक्ति ।
दिखती नहि अनुराग से भव संकट से मुक्ति ।।

350. सांसारिक अनुराग से चाहें हो निर्लिप्त ।
तो निस्पृह हरि-भक्ति में रहना है नित लिप्त ।।

35. DETACHMENT

35. துறவு

யாதனின் யாதனின் நீங்கியான் நோதல்
அதனின் அதனின் இலன். 341

வேண்டின்உண் டாகத் துறக்க துறந்தபின்
ஈண்டுஇயற் பால பல. 342

அடல்வேண்டும் ஐந்தன் புலத்தை விடல்வேண்டும்
வேண்டிய எல்லாம் ஒருங்கு. 343

இயல்பாகும் நோன்பிற்கொன்று இன்மை உடைமை
மயலாகும் மற்றும் பெயர்த்து. 344

மற்றும் தொடர்ப்பாடு எவன்கொல் பிறப்பறுக்கல்
உற்றார்க்கு உடம்பும் மிகை. 345

யான்எனது என்னும் செருக்குஅறுப்பான் வானோர்க்கு
உயர்ந்த உலகம் புகும். 346

பற்றி விடாஅ இடும்பைகள் பற்றினைப்
பற்றி விடாஅ தவர்க்கு. 347

தலைப்பட்டார் தீரத் துறந்தார் மயங்கி
வலைப்பட்டார் மற்றை யவர். 348

பற்றற்ற கண்ணே பிறப்பறுக்கும் மற்று
நிலையாமை காணப் படும். 349

பற்றுக பற்றற்றான் பற்றினை அப்பற்றைப்
பற்றுக பற்று விடற்கு. 350

यथार्थ ज्ञान

351. असत्य में जब सत्य का बोध हुआ तो सोच ।
भव दुख मूलक ज्ञान यह सभ्रम निः संकोच ॥

352. मोह विमोचित मल रहित सच्चा ज्ञान समेत ।
जो रहता है हो वही जाता मुक्ति समेत ॥

353. भ्रम संशय जो दूर कर पाता तत्व ज्ञान ।
उसके समीप है खडा भू बढ़ मोक्षजहान ॥

354. पंचेन्द्रिय का दमन भी अगर किया ही जाय ।
तो भी तत्व ज्ञान बिनु नहि है लाभोपाय ॥

355. चाहे जो भी चीज़ हो उसका अवितथ ज्ञान ।
अर्जित करना चाहिये वही तत्व का ज्ञान ।

356. पढ़कर अर्जित कर चुके जो हो सच्चा ज्ञान ।
जायेंगे अपवर्ग ही भव बिनु वे मतिमान ॥

357. तत्व - विषय का अगर जो करता अनुसंधान ।
तो निश्चय ही समझ लो उसे न जन्म विधान ॥

358. जन्म हेतु अविवेक है उसे हराया जाय ।
स्थाई विशेष बोध ही तत्व बोध ठहराय ॥

359. सर्वाश्रय को जानकर खोवे मदीय भाव ।
अनासक्ति से नहि कभी होते दुख के भाव ॥

360. राग कोप औ मुग्धता तजते हैं जो लोग ।
हो जाते हैं लोग वे स्वस्थ तथा निश्शोक ॥

36. APPREHENSION OF REALITY

36. மெய்யுணர்தல்

பொருளல்ல வற்றைப் பொருளென்று உணரும்
மருளானாம் மாணாப் பிறப்பு. 351

இருள்நீங்கி இன்பம் பயக்கும் மருள்நீங்கி
மாசறு காட்சி யவர்க்கு. 352

ஐயத்தின் நீங்கித் தெளிந்தார்க்கு வையத்தின்
வானம் நணிய துடைத்து. 353

ஐயுணர்வு எய்தியக் கண்ணும் பயமின்றே
மெய்யுணர்வு இல்லா தவர்க்கு. 354

எப்பொருள் எத்தன்மைத் தாயினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்பது அறிவு. 355

கற்றீண்டு மெய்ப்பொருள் கண்டார் தலைப்படுவர்
மற்றீண்டு வாரா நெறி. 356

ஓர்த்துள்ளம் உள்ளது உணரின் ஒருதலையாப்
பேர்த்துள்ள வேண்டா பிறப்பு. 357

பிறப்பென்னும் பேதைமை நீங்கச் சிறப்பென்னும்
செம்பொருள் காண்பது அறிவு. 358

சார்புணர்ந்து சார்பு கெடஒழுகின் மற்றழித்துச்
சார்தரா சார்தரு நோய். 359

காமம் வெகுளி மயக்கம் இவைமூன்றன்
நாமம் கெடக்கெடும் நோய். 360

लालसा का विसर्जन

361. जीव सभी को सर्वदा होती अवश्य चाह ।
जन्म बीज के रूप में सिद्ध हुई यह चाह ।।

362. करनी हो यदि कामना तो चाहो भव - नाश ।
जन्म नाश का हेतु है अभिलाषा का नाश ।।

363. निस्पृहतासम भूमि में और न कोई वित्त ।
उसके सम भी स्वर्ग में अनुपम और न वित्त ।।

364. निस्पृहता ही शुद्धता जग में समझी जाय ।
सच्चापन की चाह से निस्पृहता आ जाय ।।

365. समझें निस्पृह जीव को भव बंधन से मुक्त ।
जानें सस्पृह जीव को भव बंधन से युक्त ।।

366. लिप्सा से डरना बडा धरम कृत्य कहलाय ।
लिप्सा - माया - जाल में नहीं फँसाया जाय ।।

367. सौ प्रतिशत चाह का जो करता संहार ।
उसके समीप धर्म सब आते स्वेच्छाधार ।।

368. तृष्णा विहीन जीव को कभी नहीं है शोक ।
यदि हो अवश्य कामना तो हो फिर फिर शोक ।।

369. यदि नित संसार में पाना हो आनंद ।
दुख से दुखमय चाह का करना ही तो अंत ।।

370. नित अतृप्तमय कामना मन से छोडी जाय ।
तो निस्पृहता की दशा चिर सुखकर हो जाय ।।

37. அவா அறுத்தல்

அவாஎன்ப எல்லா உயிர்க்குஎஞ் ஞான்றும்
தவாஅப் பிறப்பீனும் வித்து. 361

வேண்டுங்கால் வேண்டும் பிறவாமை மற்றது
வேண்டாமை வேண்ட வரும். 362

வேண்டாமை அன்ன விழுச்செல்வம் ஈண்டில்லை
யாண்டும் அஃதொப்பது இல். 363

தூஉய்மை என்பது அவாவின்மை மற்றது
வாஅய்மை வேண்ட வரும். 364

அற்றவர் என்பார் அவாஅற்றார் மற்றையார்
அற்றாக அற்றது இலர். 365

அஞ்சுவ தோரும் அறனே ஒருவனை
வஞ்சிப்ப தோரும் அவா. 366

அவாவினை ஆற்ற அறுப்பின் தவாவினை
தான்வேண்டு மாற்றான் வரும். 367

அவாஇல்லார்க் கில்லாகுந் துன்பம்அஃ துண்டேல்
தவாஅது மேன்மேல் வரும். 368

இன்பம் இடையறா தீண்டும் அவாவென்னும்
துன்பத்துள் துன்பங் கெடின். 369

ஆரா இயற்கை அவாநீப்பின் அந்நிலையே
பேரா இயற்கை தரும். 370

IV - नियति प्रकरण प्रारब्ध कर्म - फल विधि

371. अर्थंकरी उद्यम सिरफ़ समझो भाग्याधीन ।
धननाशक आलस्य भी जानो भाग्याधीन ।।

372. वित्तनाश की बुद्धि का प्रदान करता भाग्य ।
वित्त वृद्धि की बुद्धि का मूलभूत है भाग्य ।।

373. पोथी पढकर क्या भला सहज ज्ञान है श्रेष्ठ ।
सहज ज्ञान है नियतिगत विधि सब से है श्रेष्ठ ।।

374. जग निसर्ग है नियतिवश, उसका है दो भेद ।
वैभवयुतता अेक है, मतियुतता औ'' भेद ।।

375. धन के अर्जन विषय में क्या ही माना जाय ।
बुरा कभी बनता भला भला बुरा हो जाय ।।

376. जिसमें नहि है स्वीयता पालन उसका व्यर्थ ।
जिसमें रहती स्वीयता तजना उसको व्यर्थ ।।

377. नियति दत्त परिमाण से ज्यादा या कम भोग ।
प्राप्त नहीं करते सदा करोड़पति भी लोग ।।

378. अगर नियति देतीनहीं दर्द भरी दुख शोक ।
बन जाते धनहीन तो यति विमुक्त सुखभोग ।।

379. सुख मिलता सत्कर्म से औ'' दुष्कृति से शोक ।
दुष्कृति मूलक खेद में अनुभव कर लें शोक ।।

380. जग में बढकर भाग्य से क्या रहता बलवान ।
किस मग से है दैव पर जय पाना आसान ।।

38. FATE (DESTINY)

38. ஊழ்

ஆகூழால் தோன்றும் அசைவின்மை கைப்பொருள்
போகூழால் தோன்றும் மடி. 371

பேதைப் படுக்கும் இழவூழ் அறிவகற்றும்
ஆகலூழ் உற்றக் கடை. 372

நுண்ணிய நூல்பல கற்பினும் மற்றுந்தன்
உண்மை அறிவே மிகும். 373

இருவேறு உலகத்து இயற்கை திருவேறு
தெள்ளிய ராதலும் வேறு. 374

நல்லவை எல்லாஅந் தீயவாம் தீயவும்
நல்லவாம் செல்வம் செயற்கு. 375

பரியினும் ஆகாவாம் பாலல்ல உய்த்துச்
சொரியினும் போகா தம. 376

வகுத்தான் வகுத்த வகையல்லால் கோடி
தொகுத்தார்க்கும் துய்த்தல் அரிது. 377

துறப்பார்மன் துப்புர வில்லார் உறற்பால
ஊட்டா கழியும் எனின். 378

நன்றாங்கால் நல்லவாக் காண்பவர் அன்றாங்கால்
அல்லற் படுவ தெவன். 379

ஊழிற் பெருவலி யாவுள மற்றொன்று
சூழினுந் தான்முந் துறும். 380

भावार्थ गद्य में

आदि भगवान की वन्दना 1

1. जिस प्रकार सभी अक्षरों का आदि अकार है उसी प्रकार सारे जगतों का आदि भगवान है ।
2. तब विद्या का अर्जन काम आयेगा क्या? जब सत्यज्ञ के श्री चरणों का प्रणाम न किया जाय ।
3. प्रिय के सुमन में बसे ईश्वर के पद पंकज को जो पाता है वह इस श्रेष्ठ जगत में चिर जीवित रह जाता है ।
4. जो लोग प्यार-वैर से रहित ईश के पादाश्रित हो जाते हैं वे कभी सांसारिक बाधाओं का भोग नहीं करते ।
5. जो लोग सचमुच ईश के भजन में तल्लीन रहते हैं वे लोग पुण्य पापमय कर्म में तल्लीन नहीं रहते ।
6. जो जन पंचेन्द्रियों का दमन करके ईश के धर्म-मार्ग को अपनाते हैं वे जन चिरकाल तक जीवित रहते हैं ।
7. जो अनुपम ईश के पादाश्रित नहीं होते वे निश्चिन्त नहीं रह सकते ।
8. धर्मसिन्धु करूणानिधि-के जो शरणागत हैं वे धन्य हैं । उस करूणेश को छोड़कर सांसारिक दुखको कोई पार नहीं कर सकता ।
9. यदि अष्टगुणी के पैरों पर प्रणाम न किया जाय तो उसकी मूर्धा व्यर्थ है ।
10. संसार में ईश्वर सेवक भव का पार करते हैं । जो ईश्वरसेवक नहीं वे भव का पार नहीं करते ।।

वर्षा की महत्ता—2

11. उचित समय की वर्षा से संसार जीवनदार हो जाता है। वर्षा अमृत की धारा समझी जाती है।

12. वर्षा ही अन्न की उत्पादक है। वह खुद भक्षक जन को आहार बनती है।

13. यदि ठीक समय पर पानी न बरसें तो अकाल पड़ने की संभावना है।

14. अगर वर्षामयी आय की कमी हो जाय तो किसान के खेत में हल नहीं चलाया जाय।

15. वर्षा बलवती है न बरसना क्षति का मूल है। वर्षा बिगडे जन को सुखमूल बनती है।

16. नभ से मेघ की बूँदें नही गिरतीं तो भूमि पर हरी भरी घास नहीं उग जाती।

17. यदि बहु काल तक सागर पर पानी नहीं बरसता तो सागर भी शुष्क हो जाता।

18. वर्षा नहीं तो संसार में सुर-वन्दना बंद हो जाती है। वर्षा रहें तो संसार में सुर-पूजन हो जाता है।

19. वर्षा नहीं तो दान तथा तप-कर्म दोनों नहीं होते।

20. पानी के बिना संसार का व्यापार नहीं चलता वर्षा नहीं तो संसार में आचार नहीं टिकता।

यति की महिमा — 3

21. उत्तम ग्रंथ का लक्ष्य है कि यतिवर के गुणों को संसार में फैलाना है ।

22. सन्यासी की महिमा जानना आसान नहीं है । जिस प्रकार मरे हुए लोगों की गणना करना सुलभ नहीं उसी प्रकार यति की गरिमा जानना सुलभ नहीं ।

23. जो वेदान्त ज्ञान से यति का रूप धारण करता है उसकी महिमा संसार में सब से श्रेष्ठ मानी जाती है ।

24. इस में रहस्य की बात नहीं है कि बुद्धिरूपी अंकुश से इन्द्रियरूपी हाथी पर आरूढ होना मोक्ष की प्राप्ति का कारण है ।

25. इन्द्रिय-विजयी व्यक्ति का बल अधिक बडा है । सुरजग का नायक इन्द्र ही इसका सबूत है ।

26. असाध्य और कठिन कामों को संत जन करते हैं । उन कामों को असाध्य समझकर नीच लोग करते नहीं ।

27. रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श ये पाँच इन्द्रिय-विषय है । इनको जो जानता है वह प्रपंच को खूब जान सकता है ।

28. सार्थक भाषण देनेवाले संत की महिमा विख्यात है संत के उपदेश गूढमंत्र के रूप में प्रसिद्ध है ।

29. संत शीलरूपी पहाड पर चढे हुए हैं।वे बहुत प्रसिद्ध हैं, उनका गुस्सा क्षणिक मात्र से चोट पहुँचाने-वाला होता है ।

30. जो दयावान होकर जीवों पर हिंसा नहीं करते वे विप्रजाति के लोग समझे जाते हैं ।

धर्म पर जोर देना —4

31. धर्म मुक्तिदायक और अर्थदेनेवाला है। धर्म से बढ़कर जीव को और श्रेयस्कर कर्म नहीं ।

32. अपना काम करना जीव को श्रेयस्कर है, धर्म को भूलना अहितकर समझो ।

33. यथाशक्ति धर्मसहित काम करना चाहिए । मनो-वाक्-काय से नित धार्मिक कार्य करो ।

34. शुद्ध चित्त से जो काम किया जाता है वही धर्म कहलाता है। चित्त शुद्धि के बिना जो रचा जाता है वही दंभ कहलाता है ।

35. ईर्ष्या, गुस्सा कटुवचन और लोभ से हीन जो कुछ रचित है वही धर्म है ।

36. धर्म-कर्म की बात मरण काल में मत सोचो । दैनिक कृत धर्म ही अपने साथ आता है ।

37. धर्मकार्य के सफल का प्रमाण जरूरी नहीं । शिबिका-रोही-वाहक में इसका स्पष्ट प्रमाण है ।

38. व्यर्थ समय नहीं बिताना चाहिए। धर्म ही जन्म मार्ग को रोक लेता है।

39. धार्मिक कार्य सुख का मूल है बाकी कार्य कीर्ति-कर नहीं।

40. धार्मिक कार्य करना चाहिए। दुष्कृत्य कभी नहीं करना चाहिए।

गृहस्थ-जीवन—5

41. तीन आश्रम वासी गृहस्थ का योग लेते हैं। गृहस्थ जीवन को हितकर समझो।

42. गृहस्थ निर्धन अनाथ तथा यति जनों की सहायता करता है।

43. पितृ-देव के प्रति नित अपना कर्तव्य करना है। अतिथि बंधु के प्रति भी अपना फर्ज निभाना है।

44. पाप किये बिना धन का अर्जन करो, बंधुसहित खाओ। ऐसा जीवन नित पूर्ण समझा जाता है।

45. जो गृहस्थ धर्म पंथ पर जाता है उसका धर्म और शील सफल रहेगा।

46. जो गृहस्थ धार्मिक रीति से काम करता है उसका नाम साधकों में गिना जाता है।

47. गृहस्थ जीवन धन्य है उस जीवन में अनुराग हो धर्मसहित जीवन नित सफल हो जाता है।

48. ऋषि-जीवन से गृहस्थ-जीवन श्रेष्ठ है। गृहस्थ धर्माचारी तथा सुधर्मदर्शी भी होता है।

49. गृहस्थ जीवन में निंद्य कर्म नहीं। इसलिए वह जीवन श्रेष्ठ और धार्मिक कहलाता है।

50. निष्ठावान गृहस्थ धर्म मार्ग पर चलता है ऐसा गृहस्थ देव के समान मर्यादित हो जाता है।

गृहिणी का उत्कर्ष —6

51. अच्छी पतनी वही है जो पति के गुण के अनुसार जीवन यापन करती है और गृहिणी-गुण को प्राप्त करती है।

52. यदि गृहिणी में अच्छे गुण नहीं तो जीवन संपन्न भी व्यर्थ माना जाता है।

53. पतनी गुणवती यदि हो तो किसी का अभाव नहीं यदि पत्नी गुणहीन हो तो किस का अभाव नहीं है?

54. पत्नी से बढ़कर और कोई महत्वपूर्ण चीज नहीं है। पत्नी के पातिव्रत्य में निर्मलता और दृढता हो।

55. पतिव्रता अन्य देव की पूजा किये बिना पति-पूजन में लीन रहती है। उसके आदेश से वर्षा होगी।

56. पतिव्रता पति-पोषण में लीन रहती है वह गृह की शोभा बढानेवाली होती है और दृढशील है।

57. पतिव्रता का पहरेदार बंदीगृह नहीं। सदा उसका पहरेदार सतीभाव ही है।

58. जो नारी पति पूजन में निरत है उसका संमान देव लोक में भी होता है ।

59. शत्रुगण के सामने शेर-चाल विलक्षण है । यदि स्त्री गृह के यश की कारिका नहीं तो उसका मान नहीं होता ।

60. पत्नी के शील को घर का शुभ-मंगल कहें और पत्नी का भूषण सत्संतान पाना है ।

पुत्र लाभ—7

61. विभवों में सब से महान बुद्धिमान संतान है । उसे प्राप्त कर हम और किसी महान नहीं मानते ।

62. सात जन्म तक भी उसको ताप स्पर्श नहीं करता यदि जिसको गुणशाली निष्पाप तथा श्रेष्ठ सुत मिलता ।

63. बडों का कहना है कि बेटे के समान और कोई चीज नहीं पुत्र-धन की प्राप्ति तो अपने पूर्व कर्म के अनुसार होती है ।

64. नन्हे बच्चे के हाथ से विलोडा भात पीयूष से भी स्वादकर तथा मीठा होता है ।

65. अपने बेटें के शरीर के स्पर्श से शरीर को आनंद मिलता है और उसकी तुतली बात से कानों को आनंद मिलता है ।

66. जिस व्यक्ति ने शिशु की तुतली बात नहीं सुनी तो उस व्यक्तिको मुरली की आवाज़ मीठी लगती है।

67. पिता का उपकार ऐसा है कि जिससे अपनी संतान सभा में डरे बिना पहले वाद विवाद करें।

68. अगर संतान शिक्षित हो तो वह माँ-बाप को हर्ष देगा। उससे भी बढ़कर वह संसार को भी बहु हर्ष देगा।

69. पुत्र-जनन के बाद मा पाती है हर्ष। सत्सुत के यश-लाभ से वह और भी खुश होती है।

70. बेटा पिता का यह उपकार करें कि संसार यही कहें कि धन्य धन्य इसके पिता हैं।

अनुराग भाव-8

71. अनुरागी का राग अर्गल में बंदी नहीं। आँखों का आँसू प्रेमी का अनुराग प्रकट करता है।

72. स्नेहहीन जन अपने हित के लिए सब कुछ माल चाहता है। सनेही औरों केलिए अपने स्वत्व को भी देगा।

73. जैसा देह और प्राण का घनिष्ठ संबंध होता है वैसा ही वही जीवन सफल है जिस में रति का योग हो।

74. प्रेम ही मिलनसार का भाव पैदा कर लेता है। वही प्रेम सर्वत्र मैत्री का भाव भी पैदा कर लेता है।

75. संसार में सुखजीवी सुख का परिणाम भोगते हैं। जगत में प्यार निभाना जीवन का परिणाम है।

76. अज्ञ कहता है कि नेह धर्मसहायक है। विज्ञ कहताहै कि नेह वीरता तथा पुण्य का पोषक भी हैं।

77. जिस प्रकार हड्डी रहित कीडे को धूप सताती है। उसी प्रकार धर्म नेहहीन शरीर को सताता है।

78. मरुस्थल पर तरूवर कभी पल्लवसहित नहीं होता। नेहहीन गृहस्थ-जीवन धन्य नहीं होता है।

79. यदि जीव में अंतर का अंग नेह नहीं तो क्या भला ? यद्यपि बाहर के सब अंग विद्यमान हो।

80. प्रेमसहित जो देह है वही सजीव है। अस्थिचर्म युत देह में नेह न तो सो निर्जीव माना जाता।

अतिथि संमान-9

81. जब ही अतिथि का अनन्य आदर किया जाता है तभी गृहस्थ-जीवन धन्य माना जाता है।

82. घर के बाहर अतिथि को खडा करके यजमान खुद अमृत पिवें तो सो कर्म उचित नहीं।

83. जो करता है अतिथि का उपचार रोज ही वह कभी भी अभाव का शिकार नहीं बनता।

84. हँसमुख होकर जो अतिथि का उपचार करता है उसके घर में लक्ष्मी सदा निवास करती है ।

85. जो अतिथि-भोज के बाद खुद शेष खाता है उसके खेत में फसलें अपने आप उगती हैं ।

86. आगत तथा भावी अतिथि का सत्कार जो करता है वह देवों का अतिथि बनकर सत्कार पायेगा ।

87. अतिथि का सत्कार याग-लाभ-सम अपरिमेय है अतिथि-पात्र के अनुरूप सत्कार का फल मिलता हैं ।

88. अतिथि-यज्ञ में जो समुचित भाग नहीं लेता वह संचित धन खोकर स्वयं कहता है "गतराग" ।

89. विभव में आतिथ्य-रहित कर्म निर्धनता है। अविवेकी में यह कुत्सित कर्म दीख पड़ता है ।

90. सूँघने से ही "अनिच्छ" नामक कुसुम कुँहला जाता है वैसे ही नेह-रहित दृग-दृष्टि से अतिथि का वदन म्लान हो जाता है ।

मीठे वचन कहना—10

91. धर्म-तत्व-विद छल के बिना मीठी बातें कहते हैं । उनकी बोली में हमेशा प्रेम का भाव भरा रहता है।

92. मन हर्षित होकर और को दान देने से भी हँसमुख होकर मीठे वचन कहना उत्तम माना जाता है ।

93. सौम्य भाव के साथ ही हार्दिक मधुरतायुक्त जो वच प्रयुक्त है वही नित धर्मसमवेत है।

94. जो सुखकर और मधुर बात दूसरों से कहता है उसको दुखद अभाव कभी नहीं ग्रसता है।

95. विनम्र-भाव और मधुर वचन कहना नर के भूषण हैं शेष भूषण सार्थक नहीं।

96. मधुर वचन के उपयोग से अधर्म का लोप होता है और कोपरहित धर्म की वृद्धि होती है।

97. जो परहितकारी मधुर वचन कहता है उसको नित सुख-हित-न्याय और पुण्य मिलेंगे।

98. पर दुखनाशक मधुर वचन नीचता से हीन होते हैं वे वचन विमुक्ति दायक और सुखदायक होते हैं।

99. मधुर वचन के उपयोग से नर सुख पाता है किसी भी हालत में वह कठोर वचन का उपयोग न करें।

100. मीठे वचन को छोडकर कटु वचन का उपयोग कौन कर सकता ? पका हुआ फल छोडकर कच्चे फल का उपयोग कौन करेगा !

कृतज्ञता — 11

101. स्वयं दूसरों को उपकार किये बिना औरों से कृत उपकार सुरनर-लोक के दान से उत्तम है।

102. उचित समय पर जो उपकार किया जाता है यद्यपि वह अल्प ही क्यों न हो, फिर भी जगत से भी बडा समझा जाता है ।

103. स्वार्थरहित जो मदद की जाती है वह सागर से भी बड़ी समझी जाती है ।

104. संत लोग तिलभर कृत उपकार को ताड़ पेड़ के समान बृहत आकार के रूप में मानते हैं ।

105. और से कृत उपकार का दूसरा परिमाण नहीं उपकृत की योग्यता ही उसका परिमाण है ।

106. निर्दोषी की बंधुता नहीं छोडी जाती है । विपद में उपकृत मनुष्य का प्यार नहीं छोडा जाता ।

107. दूसरों से उपकृत संत जन अपने दुख दूर करने वाले मनुष्य की मित्रता को सात जन्म तक स्मरण करते हैं ।

108. दूसरों से कृत उपकार को भूलना ठीक नहीं । अन्य से कृत अपकार को तुरंत ही भूलना अच्छा है ।

109. पहले कृतज्ञसदृश रहकर बाद में वह नुकसान पहुँचावें तो भी उसकी मदद की याद नुकसान को हर लेती है ।

110. धर्म-विनाशी मनुज भी पाता है उद्धार । किन्तु संसार में कृतघ्न का उद्धार साध्य नहीं है ।

निष्पक्षता—12

111. जो पक्षपात के बिना रचा वह न्याययुक्त है। हर कहीं धर्मसमेत निष्पक्ष भाव उत्तम समझा जाता है।

112. निष्पक्ष की धन-दौलत विनाशवान नहीं । वह दौलत भावी संतति केलिए हितदायक है ।

113. मध्यस्थता तजने से जो धन-माल मिलता है वह चाहें भला ही करें तो भी उसे तत्काल ही तजना चाहिए ।

114. कोई नर निष्पक्ष है अथवा बेईमान है यह तो अपनी कृति के शेषसे पहचाना जाता है ।

115. वित्तनाश या धन-वृद्धि स्वाभाविक विषय है । जीवन में निष्पक्षता सज्जन भूषित-बात है ।

116. जो निष्पक्षता तजें और भ्रष्टाचर सोचें तो कुविचार उसकी क्षति की सूचना देंगें ।

117. संसार निष्पक्ष की गरीबी को नहीं मानता । वह अभाव न तो अहितकरी है नापि लघुभाव है ।

118. जिस प्रकार चीज़ तोलने तुला है उसी प्रकार महानुभाव नित किसी पक्षका भाव नहीं अपनाते।

119. वचन नित नहीं बदलना निष्पक्ष का निशान है मन की ऋजुता भी चाहिए। यह मध्यस्थ का निशान हैं ।

120. व्यापारी यदि अन्य के माल को अपना माल समझें और व्यापार करें तो वही व्यापार अच्छा समझा जाता है ।

संयमशीलता - 13

121. संयम भाव मनुज को स्वर्ग के समान सुख देता है संयमविहीन भाव नरक के समान दुख का कारण बनता है ।

122. उत्तम वस्तु के समान संयम का पालन करो । वही जीव को सब से अधिक महान श्रेयस्कर है ।

123. जो संयम गुण को ग्रहण करता और संयमशील बनता है उसे संयम-गुण श्रेष्ठ बनाता है ।

124. जो अपने धर्म में स्थिर होकर संयमसहित रहता है उसका महत्व शैल के समान उन्नत है ।

125 विनम्र भाव सारे लोगों केलिए उत्तम समझा जाता है। खास कर धनी केलिए धन के समान विनम्रभाव बहुत उपादेय है ।

126. जो जीवन भर कछुआसम जितेन्द्रिय हो, सात जन्म तक उसका पालक दमनगुण होगा

127. जीभ वशीभूत हो और वाक्संयम की परवाह करनी चाहिए । अवशी जिह्वा दुख का कारण बन जाती है ।

128. एक अपशब्द के प्रयोग से नुक्सान होता है। सभी अच्छे कर्मों का फल विनष्ट हो जाता है। ।

129. आग-आँच का घाव मानसिक चोट नहीं करता। कटुक वचन से दिल की चोट होती है।

130. जो शिक्षित और विनयी है वह नाराज नहीं होता उसका स्वागत धूम धाम से सुधर्म करता है।

सदाचार-14

131. सदाचार अभिवृद्धि का दायक है और सदाचार ही प्राण से भी ज्यादा रक्षणीय है।

132. खुद कष्ट सहन करके भी सदाचार का पालन करना चाहिये। सदाचार ही जीव का सबसे बड़ा सहायक है, इसमें जरा भी मत-भेद नहीं है।

133. सदाचार करना ही कुलीनता का प्रतीक है और दुराचार नीच वंश का चिन्ह है।

134. अगर कोई वेदों को भूल जाय तो फिर निरंतर अभ्यास से उसे याद रख सकता है लेकिन जो सदाचार को छोड़कर आचारहीन हो जाय, उसके कुल का नाश निश्चित है।

135. जिसप्रकार ईर्ष्यालु व्यक्ति की कभी समृद्धि नहीं होती, उसीप्रकार आचारहीन मनुष्य की कभी उन्नति नहीं होती है।

136. धीर लोग आचार हीनता को भूल मानते हैं और सदाचार के द्वारा अच्छे कर्मवीर बनते हैं ।

137. एक मात्र सदाचार ही हमें उन्नति देता है और एक मात्र दुराचार ही हमारी अवनति का कारण बनता है ।

138. चरित्रवान लोग भूलकर भी मुँह से दुर्वचन नहीं कहते हैं क्योंकि दुर्वचन कहना वे बहुत बड़ा दोष समझते हैं ।

139. शिक्षित होकर जो लोकाचार से विहीन होते हैं, वे कभी विवेकशील नहीं बनते ।

140. सुखमयी जीवन का बीज सदाचार ही है और दुखमयी जीवन का बीज दुराचार है ।

पर-पत्नी पर विरति- 5

141. पर-पत्नी की कामना करना सब से बडी मूर्खता है। धर्म और अर्थ की प्राप्ति में यह राग माना नहीं है ।

142. जो मनुष्य दूसरों की पत्नी में रति-सुख की खोज करता है, इस संसार में सब से बड़ा मूर्ख वही है ।

143. विश्वासी व्यक्ति कीं पत्नी से जो संसर्ग रखता है वह जीवित होते हुए भी मृतक के समान है, उसे कभी स्वर्ग नहीं मिल सकता ।

144. जो दूसरों की पतनी के साथ अनुचित व्यवहार करता है उसके चाहे कितने भी मित्र हो, उसे कोई लाभ नहीं होता ।

145. जो व्यक्ति दूसरों की पतनीं के साथ सुलभ कार्य समझ कर संपर्क रखता है, वह हमेशा केलिए ऐसे कलंक को प्राप्त करता है, जिसे कभी मिटाया नहीं जा सकता ।

146. जो व्यक्ति पर-पतनी के साथ व्यभिचार करता है उसे दुश्मनी, पाप, भय और निन्दा नामक चार कलंक कभी नहीं छोडते ।

147. जो दूसरों की पत्नी के साथ निस्पृह भाव से व्यवहार करता है, उसका जीवन हमेशा धर्म से परिपूर्ण रहता है ।

148. दूसरों को स्त्री को न चाहना ही पौरुष का सब से बडा लक्षण है । संत का यही आचरण सब से उत्तम समझा जाता है ।

149. सागर से युक्त इस भूमि को वही भोग सकता है जो पर-पतनी के शरीर को कभी स्पर्श भी नहीं करता ।

150. चाहे कोई व्यक्ति धर्ममार्ग पर चलते हुए कोई पाप भी कर लें, पर पर-पतनी पर अनुरक्ति रखना किसी भी दशा में श्रेयस्कर नहीं है ।

सहनशीलता-16

151. खोदनेवाले की चोट को जिस तरह भूमि सहती है उसी तरह उत्तम व्यक्ति भी अपनी निन्दा करनेवालों को क्षमा कर देते हैं ।

152. दूसरों के द्वारा किये गये सब अपकारों को सहना हितकर समझा जाता है और उससे भी बढ़कर उन अपकारों को भूलना उत्तम समझा जाता है ।

153. दुनिया में सभी अभावों में सब से बडा अभाव अतिथि सत्कार का भाव न होना है । सब से बडा बल वही है जिसमें दूसरों का अनहित करने का भाव न हो ।

154. अगर तुम चाहते हो कि संपूर्णता तुम से अलग न हो तो तुम्हें सहन-भाव को लगन के साथ अपनाना चाहिए ।

155. दूसरों से बदला लेनेवालों को संसार में तुच्छ ही समझा जाता है पर सहनशील लोगों का मान सुवर्ण के समान होता है ।

156. दूसरों से बदला लेनेवाले को सिर्फ बदला लेते समय एक दिन ही आनंद मिलता है, पर सहन-शील व्यक्ति को प्रलयकाल तक अनंत कीर्ति की प्राप्ति होती है ।

157. अगर हमें दूसरों से कोई हानि होती हो तो उसके लिए अधिक चिन्तित होने की जरूरत नहीं, क्योंकि सहनशील व्यक्ति ही सब से बड़ा धर्मनिष्ट माना जाता है ।

158. जो तुम्हारे साथ घमण्ड से बरताव करता है उसको भी सहनशीलता से जीतना ही सब से बड़ा अनुपम गुण है ।

159. जिस प्रकार संसार में श्रेष्ठ गृहस्थ का जीवन यति से भी उत्तम समझा जाता है उसी प्रकार उस व्यक्ति का जीवन उत्तम माना जाता है जो नीच लोगों के कटु वचनों को सहनशीलता के साथ सुनते हैं ।

160. निराहार रहकर जप-तप से अपने आप को महान बनानेवाले को जो उत्तम स्थान है वही स्थान सहिष्णु लोगों का भी संसार में माना जाता है ।

असूयाहीनता - 17

161. जो व्यक्ति अपने मन से ईर्ष्या को दूर करके रोज़ सात्विक जीवन बिताता है, उसका जीवन सब से अधिक शीलयुक्त माना जाता है ।

162. हमारा जीवन तभी संपन्न हो सकता है, जब हम ईर्ष्याहीन होकर रहें । जिस व्यक्ति में ईर्ष्या की भावना नहीं होती, वह कभी दीन नहीं हो सकता ।

163. जो व्यक्ति धर्म और अर्थ को नहीं चाहता और जो दूसरों के वैभव से तुष्ट भी नहीं होता, उसे कभी अर्थ की प्राप्ति नहीं होती है ।

164. ईर्ष्या करने से हमें सदैव हानि और अनिष्ट की ही प्राप्ति है । इसीलिए धर्मनिष्ठ लोग कभी इस ईर्ष्या रूपी अग्नि को अपने पास नहीं आने देते ।

165. यदि कभी शत्रु भूलकर भी हमारा अनिष्ट करें और हम इसकेलिए उससे ईर्ष्या करें तो भी इस ईर्ष्या से हमारा और अनिष्ट ही होगा ।

166. जो व्यक्ति दानी और अच्छे कार्यकरनेवालों को देखकर जलता है, उसके परिवार में भूख और प्यास रूपी दुख हमेशा रहते हैं ।

167. ईर्ष्यालु व्यक्ति पर लक्ष्मी कभी प्रसन्न नहीं होती और वह उसे दरिद्रता की देवी को सौंप देती है । अतएव ईर्ष्यालु व्यक्ति कभी संपन्न नहीं होते ।

168. ईर्ष्या रूपी पापिनी हमारे धन संपत्ति को हर लेती है और वही हमें नरक तक ले जाने का निमित्त भी बनती है ।

169. ईर्ष्यालु व्यक्ति का वैभव विधिकृत ही होता है और उसीप्रकार ईर्ष्याहीन व्यक्ति का वैभवहीन होना भी पूर्वजनम के कर्मों के फल से ही होता है।

170. जो व्यक्ति दूसरों को देखकर जलते हैं वे धन वैभव के होते हुए भी दीन हैं। वे ही धनी व्यक्ति हैं जो दूसरों को देखकर ईर्ष्या नहीं करते।

निस्पृहता - 18

171. जो लोग अनुचित रीति से दूसरों की धन-संपत्ति को हर लेते हैं, उनके कुलका निर्मूल होना निश्चित है।

172. जो लोग नीतिमार्ग को छोड़ते हुए डरते है वे कभी दूसरों की संपत्ति से अनीति का कार्य नहीं करते।

173. जो लोग शाश्वत सुख की कामना करते हैं, वे कभी नश्वर सुख के लोभ में नहीं पड़ते और वे कभी नीच कार्यों की ओर अग्रसर नहीं होते।

174. जिन लोगोंने अपनी इन्द्रियों पर विजय को पा लिया है और जो ज्ञानी तथा निर्मल चित्तवाले हैं, वे अपनी दीनदशामें भी दूसरों से धन-संपत्ति नहीं लेते।

175. गहरे विस्तृत ज्ञान से भी हमें उपकार तब तक नहीं हो सकता जब तक हम लालचवश दूसरों से बुरा व्यवहार करते हैं।

176. जो भगवान की कृपा पाना चाहता है, अगर वह किसी का अहित सोचें तो भी हमेशा कष्ट ही पाता है।

177. जो धन हमें लालच से प्राप्त होता है, उस धन को हमें कभी चाहना नहीं चाहिए क्योंकि उस धन से हमको कभी सुख चैन की प्राप्ति नहीं होती।

178. जिस व्यक्ति का मन इस संसार में दूसरों का धन नहीं प्राप्त करना चाहता, उस व्यक्ति के धन का कभी क्षय नहीं होता है।

179. जो बुद्धिमान और धर्मनिष्ट व्यक्ति दूसरों के धन को नहीं चाहते उनको सुपात्र जानकर लक्ष्मी उनके यहाँ सदैव निवास करती है।

180. दूसरों के धन की कामना करने से अपना क्षय होता। लोभरहित जो धन हमें प्राप्त होता है, वही हमारे पास निरंतर रहता है।

चुगलखोरी का अभाव–19

181. जिस प्रकार धर्म का नाम न लेना बुरा कार्य है उसी प्रकार चुगलखोर नाम पाना भी अच्छा काम नहीं है।

182. धर्म को नष्ट करके पाप कार्यकरना जितना बुरा है उतना ही बुरा मुँह के सामने स्तुति करके पीछे निंदा करना है।

183. मुँह के सामने तारीफ करके पीठ के पीछे निन्दा करने से अच्छा मरण ही है क्योंकि दूसरों की बुराई करने में भले हो तकलीफ़ न हो, पर यह निन्दनीय कृति है।

184. हम चाहें किसी के सामने भले ही कठोर वचन कहें पर पीछे किसी के बारे में कठोर वचन नहीं कहना चाहिये ।

185. चुगलखोर व्यक्ति यदि जीभ से धर्म की तारीफ़ भी करें तो भी उसका मन हमेशा कलुषित होता है ।

186. जो दूसरों पर निन्दनीय आरोप लगाता है उसकी हमेशा निन्दा होती है और उस पर भी कई आरोप लगते हैं ।

187. जो चुगलखोर होता है, वह मीठे वचन के द्वारा मित्रता नहीं कराता और वह पीछे से कटु वचन बोलकर भाई को भाई से अलग करवाता है ।

188. जो अपने परम मित्र पर भी कठोर दोषारोप करने से नहीं चूकता, वह दूसरों पर आरोप लगाये बिना कभी नहीं रह सकता ।

189. पृथ्वी यह सोचकर चुगलखोरों का भार ढोती है कि सहनशीलता उसका धर्म है ।

190. जो दूसरों के दोष को ढूँढने के बजाय अपने दोष ढूँढ़ें तो ऐसे व्यक्ति को कभी दुख नहीं होगा ।

बेकार बातों का अनुपयोग - 20

191. जो व्यक्ति अनेक व्यक्तियों से घृणित वार्तालाप करता है वह हमेशा दूसरों के परिहास का पात्र बनता है ।

192. बहुत लोगों के बीच में बेकार बातें करना उचित नहीं है क्योंकि ऐसे लोग मित्रों के बीच में नीच समझे जाते हैं ।

193. जो व्यक्ति बहुत देर तक व्यर्थ बातें करता रहता है उसकी बातों में कोई नीति नहीं होती सिर्फ बकवाद होता है ।

194. बहुत लोगों के बीच में विफल और कटु वचन बोलना उतना ही अहितकर माना जाता है जितना अधर्मयुक्त वचन नीच लोगों के द्वारा बोलना माना जाता है ।

195. अगर कोई सुशील व्यक्ति भी बेकार वचनों का प्रयोग करें तो उसका गौरव और सुयश उससे अलग हो जाता है ।

196. जो व्यक्ति निष्फल शब्दों का प्रयोग करता है, वह मनुष्य नहीं कहलाता और उसे सिर्फ मूर्ख समझा जाता है ।

197. बडे व्यक्ति भी भले ही नीति की बातें न कहें, पर यदि वे व्यर्थ वचन कहेंगे तो उनका गौरव नहीं बढ़ेगा ।

198. विवेकशील व्यक्ति ऐसी बातें ही करते हैं जिनका प्रयोजन होता है, वे कभी भूलकर एक भी फलहीन बात नहीं कहते हैं ।

199. जो व्यक्ति विवेकशील होते हैं और जिन पर कोई कलंक नहीं होते हैं, , वे भूलकर भी निष्फल बातें नहीं कहते ।

200. अगर हमें कुछ कहना हो तो हमेशा सफल अर्थवाले शब्द ही कहना चाहिये, ऐसी बातें कभी भूलकर भी नहीं कहनी चाहिये जिसमें कोई अपशब्द हो ।

बुरे कार्य से भय - 21

201. पापी लोग कभी कुकर्म रूपी मोह से भय भीत नहीं होते हैं पर सुकर्मकारी लोग हमेशा पाप से भयभीत रहते हैं ।

202. हमेशा से यह माना गया है कि पाप कार्य दुखदायक है, इसलिए भयदायक और आग के समान तीव्र जानकर भयभीत लोग हमेशा उससे दूर रहते हैं ।

203. विवेकी लोग हमेशा अपने कार्यों में आचार का ध्यान रखते हैं, वे कभी अपने हिंसक शत्रु पर भी वार नहीं करते ।

204. यदि कोई व्यक्ति भूलकर भी दूसरों को हानि सोचें तो धर्म भी उसकी हानि पहुँचाने के बारे में विचार करेगा ।

205. मैं बहुत दरिद्र हूँ यह सोचकर यदि कोई व्यक्ति पाप करें तो वह अपने पाप-कृत्य के कारण और भी दरिद्रतर बन जायेगा।

206. अगर कोई व्यक्ति यह चाहें कि वह पाप से पीडित न हो, तो उसे दूसरों के प्रति कोई पाप नहीं करना चाहिए।

207. व्यक्ति बडे दुश्मन से स्वयं बच सकता है, लेकिन पापकृति-रूपी दुश्मन से वह बच नहीं सकता। हरेक व्यक्ति को पाप-कार्य न करना चाहिए।

208. जो बुरे कार्य करता है, उसका बुरा अवसान होना निश्चित है। जिस तरह छाया मनुष्य का साथ नहीं छोडती उसी तरह बुरे कार्य का प्रभाव भी मनुष्य को नहीं छोडता।

209. अगर कोई व्यक्ति अपने आप को सुखी रखना चाहता हो तो उसे अपने चित्त में किसी भी व्यक्ति के प्रति पाप कार्य का ख्याल नहीं होना चाहिये।

210. जो व्यक्ति कभी नीच कार्य नहीं करता है और पाप की तरफ भूलकर भी नहीं देखता है, वह हमेशा अमर रहता है।

लौकिक जीवन जानना-22

211. जो सच्चा उपकारी होता है, वह पेड़ के समान अपने फर्ज का पालन करता है। वह कभी अपने उपकार केलिए फल नहीं चाहता।

212. जो धन परिश्रम से अर्जित किया हुआ हो और जो धन दूसरों के काम आता हो, वही धन इस जगत में मनुष्य केलिए श्रेष्ठ धन है।

213. देवलोक और नरलोक में परोपकार के समान दूसरा कोई हितकरी कार्य नहीं है। इनसान को इस परोपकार के बारे में ही जानना चाहिये।

214. लौकिक व्यवहार को जाननेवाला मनुष्य ही सजीव मनुष्य कहलाता है, जो लोग लौकिक व्यवहार से अनभिज्ञ होते हैं वे निर्जीव समझे जाते हैं।

215. जिस प्रकार पानी से भरे हुए झील का उपयोग जन-साधारण केलिए होता है उसी प्रकार परोप कारी के धन का उपयोग भी दूसरों की भलाई केलिये होता है।

216. ग्राम के बीच में खड़ा फल से युक्त पेड़ जैसे दूसरों केलिए उपयोगी होता है, वैसे ही परोप-कारी मनुष्य का धन दूसरों का काम आता है।

217. जिस प्रकार पेड़ का हर अंग औषधि के काम आता है उसी प्रकार उदार व्यक्ति का धन हर किसी का काम आता है ।

218. अभावों के बीच में भी जो मनुष्य सोच समझ कर दूसरों का उपकार करते हैं वे परोपकारी मनुष्यों में अग्रगण्य होते हैं ।

219. उपकारी व्यक्ति केलिए सब से बडा अफ़सोस यही है कि अभाव में भी उसे इस बात का अफ़सोस रहता है कि उससे परोपकार का कार्य संपन्न नहीं हो सका ।

220. यद्यपि परोपकार करते समय अपनी कुछ हानि जरूर होती है पर वह हानि निज को बेचकर हमें अमूल्य यश का भागी बनाती है ।

दान की महत्ता - 23

221. निर्धन को जो दान दिया जाता है, वही सच्चा दान है । प्रतिप्रयोजन की दृष्टि से जो दान दिया जाता है वह श्रेयस्कर नहीं है ।

222. उचित मार्ग से लिये जाने पर भी किसी से दान लेना श्रेयस्कर नहीं है और भले ही मुक्ति न मिले तो भी किसी को दान देना ही उचित कर्म है ।

223. अपने को निर्धन न कहना और दूसरों को दान देना ही कुलीन पुरूषों का लक्षण है, यह लक्षण अन्य किसी में हमें प्राप्त नहीं होता ।

224. जब तक कोई याचक याचना नहीं करता, तब तक देने का आनन्द नहीं प्राप्त होता। याचक द्वारा माँगे जाने पर दिये जानेवाले दान से ही हमें प्रसन्नता प्राप्त होती है।

225. जिस प्रकार मुनि लोग भूख को दमन करने की योग्यता रखते है उसी प्रकार दानी लोग दूसरों की भूख मिटाने की योग्यता रखते हैं।

226. धनी व्यक्ति का धनकोष तभी सार्थक है जब वह किसी भूखे की भूख को मिटा सके। अगर यह नहीं कर सकें तो वह धनकोष निरर्थक है।

227. जो व्यक्ति दूसरों को भोजन खिलाकर खुद भोजन करता है वह कभी भूख और रोग का शिकार नहीं बनता।

228. धन-संचय किये जाने पर भी जो धन दूसरों के काम नहीं आता ऐसे अमीर लोगों को दान देने से होनेवाले हर्ष का अनुभव नहीं होता।

229. जिस धन का उपयोग दूसरों के उपकार केलिये न हो, वह धन रहते हुए भी हमें कोई सुख नहीं दे सकता। ऐसा धन हमारे लिये दुखमय है।

230. दुनिया में मरण सब से अधिक दुखमय है, पर मरण से भी अधिक दुखमय किसी को कुछ न देना है।

कीर्ति की गरिमा - 24

231. दूसरों की मदद करते हुए जीवन बिताना यश का मूल है। उसी का जीवन सब प्रकार से अनुकूल होता है।

232. जो व्यक्ति याचक को खुशी के साथ दान देता है, उसी का गुणगान सभी प्रशंसक लोग करते हैं।

233. इस संसार में सब से बढ़कर अविनाशी वस्तु यश है। बाकी सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। इसलिये हमें सुयश पाने का प्रयत्न करना चाहिये।

234. इस संसार में जो लोग यशकर काम करते हैं, उनका अभिनन्दन सिर्फ यह संसार ही नहीं स्वर्ग भी करता है।

235. ज्ञानी लोगों में यह गुण होता है कि वे अभाव में भी कीर्ति-वृद्धि करते हैं और विनाश में अविनाश की स्थिरता रखते हैं इन्हीं गुणों के कारण वे प्रशंसनीय हैं।

236. संसार में अच्छे जनम पाने का फल तभी हमें मिलता है, जब हमें यश को प्राप्ति होती है। यश के बिना जनम लेना इस संसार में व्यर्थ है।

237. नामी व्यक्ति अपने दोषों को जानने पर भी अपने लिये निन्दक नहीं बनता है। पर दूसरों द्वारा अपनी निन्दा सुने जाने पर उसे बड़ा दुख होता है।

238. यदि किसी मनुष्य को इस संसार में कीर्ति नहीं मिलती है तो उस संसार में उसे अपकीर्ति ही मिलती है ।

239. यज्ञविहीन व्यक्तियों का भार ढोने के कारण यह भूमि इतनी क्षीण हो गयी है कि उसकी उत्पादन-शक्ति घट गयी है और पैदावार कम हो गयी है ।

240. उसी व्यक्ति को सजीव समझा जाता है जो इस संसार में आकर कीर्तिकारक कार्य करता है । जिसे किसी प्रकार की कीर्ति नहीं मिलती वह निर्जीव समझा जाता है ।

संयास धर्म - कृपालुता - 25

241. सब धनों में श्रेष्ठ करूणारूपी धन है । अगर यह तुच्छ व्यक्तियों केपास भी हो तो भी श्रेष्ठ धन है ।

242. जो करूणावान लोग होते हैं, वे हमेशा अच्छे रास्ते पर चलते हुए जीवन बिताते हैं, क्योंकि वे कई रीति-यों से अपने हृदय में दया को आश्रय देते हैं ।

243. जो दयावान है, वह दुखमय और अंधकारमय जगत से दूर रहता है और वह सदा प्रकाशमय जगत में ही विचरण करता है

244. जो व्यक्ति दूसरे जीवों की रक्षा करने के उद्देश्य से उनपर दया करता है, उसे कभी कोई पाप नहीं लगता और उसे किसी प्रकार का भय नहीं सताता

245. करुणावान व्यक्ति को वेदना कभी नहीं सताती है। जिस प्रकार भूमि स्वयं कष्ट सहकर हमारा उपकार करती है, उसी प्रकार दयावान वेदना सहकर दूसरों का उपकार करते हैं।

246. जो व्यक्ति दयाहीन होकर पाप-कार्य में लगा रहता है वह उस व्यक्ति के समान है जो धर्म-कार्य छोड़कर बुरे कार्यों में लगा हुआ है।

247. दयाहीन व्यक्ति को अलौकिक सुख की प्राप्ति नहीं होती। जिस प्रकार निर्धन व्यक्ति को लौकिक सुखों की प्राप्ति नहीं होती।

248. निर्धन व्यक्ति कभी सुदिन आने पर धनवान बन सकता है, लेकिन दयाहीन व्यक्ति कभी यश को प्राप्त नहीं कर सकता, यही बुद्धिमानों का विचार है।

249. जिस प्रकार मूर्ख व्यक्ति को ज्ञान-तत्व का उपदेश देना अनुचित है। उसी प्रकार दयाहीन व्यक्ति से पुण्य-कर्म की आशा करना भी अनुचित है।

250. निर्दय व्यक्ति को कमज़ोरों पर अत्याचार करते समय यह सोचना चाहिए कि अगर उनसे भी बलवान उन पर अत्याचार करें, तब उनकी (खुद की) दशा क्या होगी।

माँस का अनशन-26

251. अपनी देह की रक्षा केलिए जो दूसरों का मांस खाता है वह कैसे दयावान बन सकता है ? इसलिये दूसरों का मांस नहीं खाना चाहिये ।

252. जिस प्रकार धन की रक्षा करनेवाले को धन का सुख प्राप्त नहीं होता, उसी प्रकार मछली-मांस आदि खानेवालों को दयालुता का सुख प्राप्त नहीं होता ।

253. जिस प्रकार सशस्त्र व्यक्ति के हृदय में कृपा और करूणा का भाव नहीं रहता है, उसी प्रकार मांसाहारी व्यक्ति में करूणा और दया का गुण नहीं रहता है ।

254. हिंसा को छोड़ना ही दया है और दूसरों का वध करना पाप है । ठीक उसी प्रकार मांस का सेवन करना भी पाप है ।

255. मांस को खाना छोड़ना ही सब से बडा धर्म समझा जाता है और मांसाहारी व्यक्ति नरक के दुख से कभी बच नहीं सकता ।

256. अगर इस दुनिया में मांसाहारी लोग नहीं रहते, तो माँस बेचनेवाले कसाई कहाँ रहते और क्या करते ?

257. किसी जीव का घाव ही माँस होता है। इस प्रकार के माँस को खाने की अपेक्षा, उसे न खाने का व्रत ही श्रेष्ठ माना जाता है ।

258. किसी प्राणी का वध करके उसके मृततन से जो माँस मिलता है उसे सिर्फ वन के हिंस्त्र पशु ही खाते हैं । बुद्धिमान लोग इसे कभी नहीं खाते ।

259. माँस का हवन डालकर सैकडों यज्ञ करने से भी कोई लाभ नहीं है, लेकिन अगर मांस-भोज पर प्रीति न रखें तो उसका यह कार्य सब से उत्तम समझा जायेगा ।

260. जो व्यक्ति प्राणीघातक नहीं और जिसने माँसाहार करना छोड़ दिया है, उसकी सभी जीव हाथ जोड़कर वन्दना करते हैं ।

तपस्या - 27

261. स्वयंकृत दुख को सहना और जीवों की हिंसा न करना ये दोनों संसार में तपस्या के सच्चे स्वरूप माने जाते हैं ।

262. जो बहुत जन्मों से जप करते रहते हैं उनको तप की सिद्धि मिलेगी और जो तप नहीं करते बहु जन्मों तक उनको तपकी सिद्धि न मिलेगी ।

263. गृहस्थलोग सन्यासियों के उपचार में तल्लीन रहते हैं और वे कभी कभी तापस-कर्मों से रहित रह जाते हैं।

264. तापसी का तप इतना बलवान है कि तप के स्मरण से प्रियजन का उत्थान होता है और शत्रु-जन का अवसान होता है।

265. इच्छित फल की प्राप्ति तप से होती है। अतएव इस संसार में तप करणीय है।

266. तपस्वी का जीवन चरितार्थ होता है। कामी का जीवन चरितार्थ नहीं होता।

267. जैसे आग में तप्त होकर सोना शोभायमाण है वैसे तप करने से विवेक समृद्ध होता है।

268. जिसके मन में अस्मिता का भाव नहीं उसके प्रति सब जीव सेवा-भाव रखते हैं।

269. तपोबलवाला सर्वशक्तिमान है। वह अपने प्राण काल से भी बचा सकता है।

270. तप करके कुछ लोग संपन्न हुए और तप न करके बहुत से लोग दरिद्र हुए हैं।

मिथ्याचरण – 28

271. कपटी का आचरण सत्यहीन आचार माना जाता है। उसके आचार को देखकर पंचभूत अपने आप हँसते हैं।

272. तापसी वेषभूषा धारण करने से क्या फ़ायदा होगा ? जबकि जान बूझकर मन पाप करने लग जाय ।

273. जो मानसिक बल नहीं रखता उसको ऋषि-वेष धारण करना बेकार है । बाघ - खाल का वेष धारण कर जिस प्रकार गाय चरती है उसी प्रकार उसका जीवन विडम्बनामय और कपटपूर्ण है ।

274. तापसी-वेष धरकर जो करता है बुरा काम/ उसका काम दृष्टिगोचर के बिना किरात से किये गये शिकार कर्म के समान होता है ।

275. मिथ्याचारी अपने को बहुत विरक्त कहता है । उसका वैराग्य मिथ्याचार से उत्पन्न हुआ । वह शोकमय होता है ।

276. क्रूर आदमी वही होता है जो छल-कपट करता है और वेष भूषा से तपस्वी के समान दिखाई पड़ता है किन्तु मन से दुष्ट के समान भयंकर होता है ।

277. ऐसे मनुष्य भी संसार में रहते हैं जो गुंजा के समान बाहर से साफ सुथरे दीख पडते है और अन्दर से काले-कलूटे दीख पड़ते है ।

278. ऐसे मनुष्य ही बहुत हैं जो शरीर को ही साफ रखते हैं किन्तु मन को कलुषित रखते हैं ।

279. सीधा बाण कठोर होता है टेढी वीणा रम्य होती है। भले और बुरे की जाँच करनी चाहिए। क़ार्य नतीजे से मालूम हो जाता है।

280. अगर दूषित काम न अपनाया जाता है तो संयासी को केश-मुण्डन और बाल बढ़ाना दोनों आवश्यक नहीं।

चोरी न करना - 29

281. जो चोरी का काम नहीं करता वह हमेशा दूसरों के दोषारोपन से विमुक्त हो जाता है। स्तेय-बुद्धिवाला दूषित समझा जाता है।

282. मन में गलत सोचना अहित करने के समान है। दूसरों की चीजों का अपहरण न करना कपट से उत्तम समझा जाता है।

283. पहले चोरी से प्राप्त धन अभिवृद्धि के समान दिखायी पडेगा। बाद को वही धन अपार क्षय प्राप्त करेगा।

284. अपार चोरी करने की इच्छा होती है लेकिन कार्य-काल में वही कामना दुखदायिका बनती है।

285. दूसरे की असावधानी देखकर चोरी करने का विचार जो रखता है उसके दिल में प्रेम ओर दया दोनों भावनाएँ नहीं होती।

286. जो जन चोरी करने में लगे हुए हैं वे जन मर्यादा की सीमा नहीं जानते ।

287. जो लोग मर्यादित जीवन बिताते हैं उन लोगों में चोरी तथा अज्ञता दोनों नहीं । ऐसा विद्वानों का विचार है ।

288. जिस प्रकार चोर के मन में कपट-काम बढ़ता है उसी प्रकार मर्यादित व्यक्ति में धार्मिक विचार बढ़ते हैं ।

289. जो चोरी करने के सिवा और कुछ न जानता हो वह अपना अहित करते हुए नाश की खोज करता है ।

290. स्तेय-बुद्धि से युक्त आदमी को सुख-भोग मिलता नहीं । स्तेय-बुद्धि से विहीन व्यक्ति को लौकिक और पारलौकिक सुख मिलता है ।

सच्चाई की महानता - 30

291. दुनियामें वही सत्य वचन कहलाता है जिससे दूसरोंको थोडा भी अहित और संकट नहीं होता।

292. अगर असत्यभाषण दोषरहित और हितकर हो तो वह असत्य भाषण भी सत्य के समान उपादेय हो जाता है ।

293. मन में सत्य जानकर मिथ्यावाद न करें। मिथ्या भाषण आप को कष्ट व नाश देगा।

294. जो जान बूझकर हृदय से झूठ नहीं कहता है वह मनुष्य जनता के हृदय में निवास करता है।

295. तपस्वी और दानी की अपेक्षा सत्यवादी लोग श्रेष्ठ समझे जाते हैं।

296. सत्य-कथन के समान संसार में कीर्ति-सुख नहीं। झूठ न बोलना धर्म फल और सुख देता है।

297. सत्यनिष्ठता को अपनाना चाहिए। अन्य अच्छा काम न करे तो भी सत्यव्रत को अपनाना चाहिए क्योंकि वह अपायरहित है।

298. शारीरिक पवित्रता पानी से होती है मानसिक पवित्रता सत्य से होती है।

299. अन्धकार को दूर करनेवाले सभी दीप दीप नहीं कहलाते। साधु जनों केलिए सत्य दीप ही दीप माना जाता है।

300. हमने संसार में भाव-विभाव आदि अनेक देखे। और भावों की अपेक्षा सत्यभाव ही ठीक है।

कोपहीनता - 31

301. जहाँ गुस्सा विफल नहीं, वहाँ गुस्से को दबावें। विफलस्थान में कोप दबाकर दिखाने से कोई लाभ नहीं।

302. जहाँ गुस्सा सफल नहीं वहाँ कोप दिखाना ठीक नहीं। जहाँ गुस्सा प्रयोजनवान है वहाँ गुस्सा करना उचित नहीं।

303. किसी जन्तु पर भी कभी कभी गुस्सा दिखाना नहीं चाहिए। समस्त बुराई का कारण गुस्सा है।

304. क्रोध-भाव स्मृतिघातक और हर्षघातक होता है। क्रोध-भाव से बढ़कर रिपु-भाव बलवान नहीं।

305. अपने बचाव केलिए हमें क्रोध से विमुक्त रहना चाहिए। जो कोपमुक्त नहीं, तो गुस्सा स्वयं वध कारक बन जाता है।

306. कोप की ज्वाला से कोपी मृत के समान बन जाता है। बन्धुपरिपालन रूपी नाव भी कोपानल से भस्मीभूत हो जाती है।

307. कोप-रूपी चीज़ को पाकर कौन दुख नहीं प्राप्त करता? ज़मीन पर कृत आघात से हाथ क्या दुख न पाता?

308. अग्नि शिखा के समान यदि अहित किया जाय तो भी यथाशक्ति कोप के बिना रहना हित समझा जाता है।

309. कार्य-सिद्धि केलिए मन में गुस्सा नहीं करना चाहिए। कार्य साधक है अमन्यु।

310. गुस्सा करनेवाले को हम मृत के समान मानते हैं। कोपहीन व्यक्तिको संयासी के समान श्रेष्ठ समझ लें।

अहित न करना-32

311. निष्कलंक बडों का लक्ष्य यह है कि उनकी महिमा गुणों से युक्त हो। पर-हिंसा से युक्त धन-प्राप्ति निषिद्ध है।

312. निर्दोषी व्यक्ति का लक्ष्य है कि पर-कृत हानि को भूलकर उसकी प्रतिहानि या बदला नहीं लेना चाहिए।

313. अहित किये बिना जो दूसरे का अनिष्ट करता है उसकी हानि कालान्तर में जरूर होगी।

314. अहितकरी की सजा यह हो कि वह अपने काम से लज्जित हो जाय। उससे किया हुआ दुख और बदले में की हुई भलाई दोनों को भूल जावे।

315. दूसरे के दुख को अपना दुख समझकर उसको दूर करने का उपाय सोचना चाहिए। ऐसा न करें तो बुद्धि रखने का क्या प्रयोजन है ?

316. जो भी काम अपने लिये अहितकर समझा जाता है वह काम दूसरों के प्रति नहीं करना चाहिए।

317. दुनिया में वही काम उत्तम समझा जाता है जिससे किसी को जरा भी न सताया जाता है।

318. जो काम अपने लिए हितकारक नहीं वह काम दूसरों केलिए कैसे हितकारक होगा ?

319. यदि सुबह दूसरे को दुख दिया गया तो शाम को वह दुख खुद भोगना पड़ेगा ।

320. सुखमय जीवन बिताने केलिए दूसरों को दुख नहीं देना चाहिए । सारा शोक अहित करनेवालों को प्राप्त होता है ।

अहिंसा - 33

321. धर्म कार्य का अर्थ होता है कि जीव-वध का परित्याग । जीव-वध सब पापों का मूल है ।

322. बाँटकर भोजन करना चाहिए । जीव-रक्षण ही धर्म समझा जाता है । शास्त्र में यह सर्वोत्कृष्ट धर्म समझा जाता है ।

323. जीवों की हिंसा न करना सर्वोत्कृष्ट है । सत्य बोलना दूसरा धर्म ही समझा जाता है ।

324. संसार में वही मार्ग सन्मार्ग कहलाता है जो मार्ग जीव रक्षण रूपी नीति को बताता है ।

325. संयासी लोग भव-भीति से त्रस्त रहते हैं । धार्मिक लोग जीव-हनन न करके श्रेष्ठ माने जाते हैं ।

326. जो अहिंसा के नियम का पालन करता है वह काल पाश से पीडित नहीं होता ।

327. अपने शरीर से प्राण निकल जाय, तब भी जीव हनन नहीं करना चाहिए ।

328. जीव हत्या करने से ज्यादा धन यदि मिल जाय तो भी वह धन निकृष्ट समझा जाता है। हिंसात्मक धन तुच्छ माना जाता है।

329. जीवों के वध करनेवाले कभी भी श्रेष्ठ नहीं। जीवों के पालन करनेवाले जीववधी को निकृष्ट मानते हैं।

330. जीव-हत्या करनेवाले सदैव रोगी होते हैं। उनका जीवन सुखद नहीं, अभाव से ग्रस्त होता है।

अस्थिरता 34

331. मंदबुद्धिबाले ही विनाशी पदार्थों को अविनाशी समझते हैं।

332. रंग भूमि की भीड़ के समान प्रारंभ में धन बढता है। सभा - विसर्जन के काल के समान धन का अवसाद होता है।

333. धन का गुण चंचल है। यदि वह धन मिल जाय तो तुरंत धर्म-कार्य में उसका उपयोग करो।

334. यह तत्व समझ लेना चाहिए कि दिन रूपी छुरी की धारा नरजीवन का वध क्रमिक रूप से कर रही है।

335. कंठ के अवरोधन के पहले एवं अंतिम हिचकी लेने के पहले ही पुण्यात्मक कार्य कर लेना चाहिए ।

336. जो कल था, वह आज नहीं है । यह रीति दुनिया की है । नर लोक में स्थिरता कहाँ है ?

337. जीवन-यापन की जानकारी किस को मालूम है ? परन्तु मानव भावी के संबंध में सीमाहीन सोच-विचार करता है ।

338. जिस प्रकार अंडे से अलग होकर पक्षी उड़ता है उसी प्रकार जीव भी देह से हट जाता है ।

339. प्राणी का मरण नींद के समान होता है । प्राणी का जनम जागृति के समान होता है ।

340. यह जीव कभी भी शाश्वत रूप में शरीर में नहीं रहता । भाडे के समान यह जीव शरीर में कुछ काल तक रहता है ।

वैराग्य - 35

341. जो व्यक्ति जिन चीज़ो की अभिलाषा से विमुक्त रहता है वह व्यक्ति उन चीज़ों से संबंधित दुखों से दूर रह जाता है ।

342. संपन्न दशा में भी विरक्ति की भावना होनी चाहिए । ऐसा होने पर बहुत प्रकार के सुखभोग मिलेंगे ।

343. पाँचों इन्द्रियों का दमन करके अनुराग को छोडना चाहिए। विषय सुख त्याज्य है। वैसे ही अनुराग भाव छोड दें।

344. तपस्या के लिए निस्पृहता को स्वाभाविक धर्म समझें। सस्पृहता क्षोभ का कारण है।

345. भव-भीति से विमुक्ति चाहनेवाले को यह शरीर भारमयी है। यह शरीर ही दुखद है। दूसरे के शरीर पर अनुरक्ति रखना सचमुच दुखद है।

346. जो आत्माभिमान की बुद्धि छोड़ता है वह विमुक्ति प्राप्त कर लेगा।

347. मदीयता से जो मुक्त नहीं वे विपद-जाल में सदैव फँसते रहते हैं।

348. जो निष्काम होते हैं वे मुक्ति स्थल पहुँचते हैं। बाकी सब भव-मोह में फँसे रहते हैं।

349. भव से मुक्ति तब होती है जब मन में अनासक्ति होती है। भव-संकट से मुक्ति अनुराग से नहीं होती।

350. साँसारिक अनुराग से हमें निर्लिप्त रहना चाहिए नित निस्पृह होकर हमें हरिभक्ति करनी चाहिए।

351. जब असत्य में सत्य का बोध होता है तब अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। सांसारिक दुखमूलक ज्ञान भ्रमात्मक है।

352. वह व्यक्ति मुक्ति पाता है जो निर्मोह और मलरहित तत्व-ज्ञान रखता है।

353. तत्व-ज्ञान भ्रम-संशय को दूर करता है तुम ऐसे तत्व ज्ञान रखनेवालों का संपर्क रखो।

354. पाँचों इन्द्रियों का दमन करना चाहिए। किन्तु तत्व ज्ञान के बिना लाभोपाय नहीं है।

355. पदार्थों का यथार्थ ज्ञान अर्जित करना चाहिए। वही तत्व-ज्ञान माना जाता है।

356. जो लोग पढ़कर सच्चा ज्ञान अर्ज़ित कर चुके वे लोग स्वर्ग जायेंगे। भवबाधा तोडकर वे आगे जायेंगे।

357. यदि कोई व्यक्ति तत्व विषय का अनुसंधान करता है तो उसको ज़न्म संबंधी विधिविधान मुख्य है।

358. जन्म-हेतु पर विचार करनां अविवेक है विशेष तत्व-ज्ञान पर ही विचार करना चाहिए।

359. मदीयता या अपनापन का भाव छोडकर सर्वाश्रय को जानना चाहिए। अनासक्ति भाव को अपनाने से दुख नहीं होता ।

360. जो जन गुस्सा, मोह और राग को छोडते हैं वे जन स्वस्थ और शोकहीन हो जाते हैं ।।

लालसा का परित्याग-37

361. सभी जीवों के मन में इच्छा जरूर पैदा होती है। यह अभिलाषा जन्म-बीज के रूप में सिद्ध हुई है।

362. अगर कामना रहें तो भवनाश संभव नहीं । जन्म-नाश का कारण अभिलाषा का नाश है ।

363. इस पृथ्वी में निस्पृहता के समान और कोई धन नहीं। स्वर्ग में भी उस धन के सम और कोई संपत्ति नहीं ।

364. संसार में निस्पृहता ही शद्धता मानी जाती है। सच्चाई की कामना से निस्पृहता आ जाती है ।

365. निस्पृह व्यक्ति को सांसारिक बंधनों से विमुक्त समझो। सस्पृह व्यक्ति को सांसारिक बंधनों से सहित समझो ।

366. लालसा से डरना बडा धार्मिक कार्य समझा जाता है। लालसा रूपी मायाजाल में फँसना उचित नहीं ।

367. जो सौ प्रतिशत चाह का नाश करता है उसके पास सारे धर्म अपने आप आ जाते हैं ।

368. तृष्णारहित व्यक्ति को कभी भी दुख उत्पन्न नहीं होता । तृष्णा ही शोक का कारण है ।

369. जग में आनंद पाना है तो दुखमय लिप्सा का अंत करना चाहिए ।

370. हमेशा अतृप्तमय कामना को छोडनी चाहिए । फिर निस्पृहता की हालत सुखकर हो जाती है ।

प्रारब्ध कर्म-फल - 38

371. पैसा कमाने का प्रयत्न केवल भाग्याधीन है । धन का नाशकर आलस्य भी भाग्याधीन है ।

372. भाग्य एक ओर जहाँ वित्तविनाश की बुद्धि प्रदान करता है । वही दूसरी ओर धन-वृद्धि की बुद्धि भी प्रदान करता है ।

373. मोटी किताबें पढ़ने से क्या भला ? स्वाभाविक ज्ञान ही श्रेष्ठ है । सहज ज्ञान नियति से प्राप्त होता है । नियति सब से बली है ।

374. नियतिवश है यह सारा संसार । इस संसार के दो भेद हैं । एक है विभूतिमत्ता दूसरी है बुद्धिमत्ता ।

375 धन के अर्जन के मामले में क्या नियम लागू हो सकता ? बुरा कभी भला बनता है भला कभी बुरा बनता है ।

376. जिस कार्य में हमारा स्वार्थ नहीं उसका पालन करना बेकार है । और जिस कार्य में हमारा स्वार्थ है उसका परित्याग भी बेकार है ।

377. विधि-कृत परिमाण से अधिक या कम दुख-सुख का भोग करोड़पति भी प्राप्त नहीं करते हैं ।

378. यदि नियति दर्द भरी वेदना नहीं देती तो दरिद्र भी यति के समान विमुक्त हो जाते ।

379. अच्छे कामों से सुख मिलता है और बुरे कामों से दुख मिलता है । बुरे कामों से लोग खेद का अनुभव करते हैं ।

380. संसार में भाग्य से बढ़कर क्या कोई बली रह सकता है ? ऐसे भाग्यपर किस रास्ते से विजय प्राप्त करना आसान होगा ! यह गंभीर प्रश्न है ।

कठिन शब्दार्थ

चार - गुप्तचर गुफिया ।
मद्यप - शराबी ।
अनिच्च - पुष्प विशेष शिरीष कुसुम!
धिषणा - बुद्धि ।
नाग - हाथी ।
कुत्सित - बुरा ।
मौढ्य - बेवकूफी ।
अभाव - दरिद्रता ।
गरिमा - श्रेष्ठता ।
बर - श्रेष्ठ ।
चौर्यहीनता - अस्तेयता ।
अमन्यु - अकोप ।
निरसन करना - दूर करना ।
हेयता - तुच्छता ।
रिपु - दुश्मन ।
अविस्मृति - स्मरण ।
नीतिच्युत - नीति से भ्रष्ट ।
सुरा - शराब
छीक आने पर नफर के दीर्धायु होने की कामना करने की परंपरा आज भी प्रचलित है ।

तिरुक्कुरल में अर्थकांड : शासन प्रकरण नृप की महिमा

381. सैन्य राज्य साथी सचिव, दुर्ग कोश षट्अंग ।
जो रखता है नृप वही, राजसिंह हो सांग ।।

382. राजा सदैव जगत में, योग्य वही कहलाय ।
ज्ञान दान उत्साह औ, दृढता जिसमें भाय ।।

383. समझे जाते भूप के, स्वाभाविक हैं शील ।
पौरुष-विद्या-जागरण, ये तीनों ही शील ।।

384. अनय नाश निज नय करण, वीरधर्म समवेत ।
वही भूप है राजता, तीनों गुणसमवेत ।।

385. धन का अर्जन नित करें, धन का करें सुपाल ।
पालित धन का धर्म से वितरण करें नृपाल ।।

386. कटुक वचन बोले विना, मिलनसार है भूप ।
उसका शासन श्रेष्ठ है, तथैव सदा अनूप ।।

387. मीठे वच से दानकर, जो हो जनगणपाल ।
उसको जग देगा सभी, चिर यश इच्छित माल ।।

388. जनता पालन नीति से जो करता मनुजेश ।
माना जाता है वही, बहुमत से सर्वेश ।।

389. सुनने में हो कटु वचन, फिर हितकर गुरु वाक ।
सहता ऐसे वचन जो, उसके वश भूभाग ।।

390. दीप सदृश वह भूप है, जो रखता गुण चार ।
दान दया शासन उचित, दलितों का उद्धार ।।

39. THE GREATNESS OF A KING

39. இறைமாட்சி

படைகுடி கூழ்அமைச்சு நட்பரண் ஆறும்
உடையான் அரசருள் ஏறு. 381

அஞ்சாமை ஈகை அறிவூக்கம் இந்நான்கும்
எஞ்சாமை வேந்தர்க் கியல்பு. 382

தூங்காமை கல்வி துணிவுடைமை இம்மூன்றும்
நீங்கா நிலனாள் பவர்க்கு. 383

அறனிழுக்கா தல்லவை நீக்கி மறனிழுக்கா
மானம் உடைய தரசு. 384

இயற்றலும் ஈட்டலும் காத்தலும் காத்த
வகுத்தலும் வல்ல தரசு. 385

காட்சிக் கெளியன் கடுஞ்சொல்லன் அல்லனேல்
மீக்கூறும் மன்னன் நிலம் 386

இன்சொலால் ஈத்தளிக்க வல்லார்க்குத் தன்சொலால்
தான்கண் டனைத்திவ் வுலகு. 387

முறைசெய்து காப்பாற்றும் மன்னவன் மக்கட்கு
இறையென்று வைக்கப் படும். 388

செவிகைப்பச் சொற்பொறுக்கும் பண்புடை வேந்தன்
கவிகைக்கீழ்த் தங்கும் உலகு. 389

கொடையளி செங்கோல் குடியோம்பல் நான்கும்
உடையானாம் வேந்தர்க் கொளி. 390

शिक्षा

391. विषय सभी है सीखना, बिनु शक यथार्थ रीति।
सीखे पथ पर गमन हो, यही हमारी नीति ॥
392. गणित-रीति के ग्रंथ सब, सर्वोपरि कहलाय।
जीवों के ये दो नयन, सदैव समझे जाय ॥
393. जो रखते हैं ज्ञानदृग वे सचमुच दृगवान।
बाकी सब के नयन दो, समझें घावसमान ॥
394. विबुध रत्न तो है वही, जिसका मुदकर योग।
औ हो जिसके विरह में, फिर विचार-संयोग ॥
395. धनी-सामने रिक्तवत्, सिखते हैं पटु लोग।
समझे जाते हैं सदा, बाकी अनपढ़ लोग ॥
396. ज्यों सैकत में खनन से, बढ़ती पानी-धार।
त्यों पढ़पढ़ कर मनुज की, बढती विवेक धार ॥
397. पढे लिखे नर केलिये, ग्राम-देश सब स्वीय।
इस स्थिति में नहिं सीखना, क्यों नहि विगर्हनीय ॥
398. एक जन्म में अधिकृता, विद्या अखंड धार।
सात जन्म तक भी उसे, कर लेगी उपकार ॥
399. निज पर दोनों के लिए, विद्या सुखकर योग्य।
अवगत होकर बुध उसे, कहते शंसन-योग्य ॥
400. विद्यारूपी वित्त इक थिर है तथैव उच्च।
बाकी धन धन ही नहीं, वे न कभी नहिं उच्च ॥

40. கல்வி

கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக. 391

எண்ணென்ப ஏனை எழுத்தென்ப இவ்விரண்டும்
கண்ணென்ப வாழும் உயிர்க்கு. 392

கண்ணுடையர் என்பவர் கற்றோர் முகத்திரண்டு
புண்ணுடையர் கல்லா தவர். 393

உவப்பத் தலைக்கூடி உள்ளப் பிரிதல்
அனைத்தே புலவர் தொழில். 394

உடையார்முன் இல்லார்போல் ஏக்கற்றுங் கற்றார்
கடையரே கல்லா தவர். 395

தொட்டனைத் தூறும் மணற்கேணி மாந்தர்க்குக்
கற்றனைத் தூறும் அறிவு. 396

யாதானும் நாடாமால் ஊராமால் என்னொருவன்
சாந்துணையுங் கல்லாத வாறு. 397

ஒருமைக்கண் தான்கற்ற கல்வி ஒருவற்கு
எழுமையும் ஏமாப் புடைத்து. 398

தாமின் புறுவது உலகின் புறக்கண்டு
காமுறுவர் கற்றறிந் தார். 399

கேடில் விழுச்செல்வம் கல்வி ஒருவற்கு
மாடல்ல மற்றை யவை. 400

अशिक्षा - अनध्ययन की हेयता

401. सभा बीच में बोलना, पढे बिना सद्ग्रंथ ।
पासे का है खेल ज्यों, बिनु चौसर का अत ।।

402. अनपढ का भाषण - जतन. विद्वज्जन के बीच ।
ज्यों स्तनहीना स्त्रीत्व की, इच्छासम है नीच ।।

403. अनपढ मौनी यदि रहें, विद्वज्जन के बीच ।
तो वे नहि परिहास के, होंगे औ के बीच ।।

404. अनधिकृता गुरु - वदन से, जो विद्या मिल जाय ।
नहि स्तुति उस वर ज्ञान की, करता बुध-समुदाय ।।

405. मिथ्या-गौरव अपढ का, बुधजन-भाषण काल ।
गायब होता आप ही, यह है सच्चा हाल ।।

406. बंजर-समान जगत में, जो हैं विद्याहीन ।
यदपि मनुज हैं तदपि वे, निश्चित लाभ विहीन ।।

407. सूक्ष्म-शास्त्र के ज्ञान बिनु, जो रखते तन-रूप ।
वे मृण्मय पुतला सदृश, हैं तो भारसरूप ।।

408. बुधगत दारिद से कहीं, मूढलब्ध धन-भूति ।
बेशक हैं दुखदायिनी, इसमें न शकानुभूति ।।

409. अनपढ का कुल उच्च हो, या तो होवें नीच ।
कुलीन भी मानित नहीं, बुधसम जनता बीच ।।

410. मनुज और जानवर में रहता है विभु भेद ।
ज्यों शिक्षित औ अपढ में दिखता सम्यक् भेद ।।

41. கல்லாமை

அரங்கின்றி வட்டாடி யற்றே நிரம்பிய
நூலின்றிக் கோட்டி கொளல். 401

கல்லாதான் சொற்கா முறுதல் முலையிரண்டும்
இல்லாதாள் பெண்காமுற் றற்று. 402

கல்லா தவரும் நனிநல்லர் கற்றார்முன்
சொல்லா திருக்கப் பெறின். 403

கல்லாதான் ஒட்பம் கழியநன் றாயினும்
கொள்ளார் அறிவுடை யார். 404

கல்லா ஒருவன் தகைமை தலைப்பெய்து
சொல்லாடச் சோர்வு படும். 405

உளரென்னும் மாத்திரையர் அல்லால் பயவாக்
களரனையர் கல்லா தவர். 406

நுண்மாண் நுழைபுலம் இல்லான் எழில்நலம்
மண்மாண் புனைபாவை யற்று. 407

நல்லார்கண் பட்ட வறுமையின் இன்னாதே
கல்லார்கண் பட்ட திரு. 408

மேற்பிறந்தா ராயினும் கல்லாதார் கீழ்ப்பிறந்தும்
கற்றார் அனைத்திலர் பாடு. 409

விலங்கொடு மக்கள் அனையர் இலங்குநூல்
கற்றாரோடு ஏனை யவர். 410

शिक्षित से कई विषय सुन लेना

411. सभी धनों में श्रवणमय धन घोषित इक वित्त ।
शेष धनों में से प्रथम माना हो श्रुतिवित्त ।। ।।

412. श्रवणमयी भोजन रहित, जब होते निज कान ।
भोजन तन को देय तब, नहि सुनना बिनु कान ।।

413. इह कानों से श्रवणमय, भोजन सेवी लोग ।
मानें जाते सुरसदृश, करते हवि का भोग ।।

414. साध्य नहीं अध्ययन यदि, पावें श्रुति से ज्ञान ।
वही सहायक खेद में, हो करयष्टिसमान ।।

415. सदाचारयुत मनुज की, वाणी लोकसहाय ।
कीचडगामी को यथा, हो करयष्टिसहाय ।।

416. ज्ञान तत्व सुनना हमें, जब कि समय मिल जाय ।
सुनकर अकसर ज्ञान वह पूर्ण रूप बन जाय ।।

417. संत बहुश्रुत भी कहीं, भ्रम से तत्वविहीन ।
होकर भी वच नहि कहें, भ्रमकर असमीचीन ।।

418. सुनने से ही शास्त्र सब, सार्थक होवे कान ।
औ सुनकर हो ही श्रवण, बहरापनयुत कान ।।

419. जो श्रावक हैं शास्त्र के, मृदु भाषी वे नम्र ।
बाकीमृदुभाषी नहीं, तथैव नहि हैं नम्र ।।

420. षड्रस का जो स्वाद कर नव रस भोगविहीन ।
जीवित होकर भी उसे समझो-प्राणविहीन ।।

42. கேள்வி

செல்வத்துள் செல்வஞ் செவிச்செல்வம் அச்செல்வம்
செல்வத்து ளெல்லாந் தலை. **411**

செவிக்குண வில்லாத போழ்து சிறிது
வயிற்றுக்கும் ஈயப் படும். **412**

செவியுணவிற் கேள்வி யுடையார் அவியுணவின்
ஆன்றாரோ டொப்பர் நிலத்து. **413**

கற்றில னாயினும் கேட்க அஃதொருவற்கு
ஒற்கத்தின் ஊற்றாந் துணை. **414**

இழுக்கல் உடையுழி ஊற்றுக்கோல் அற்றே
ஒழுக்க முடையார்வாய்ச் சொல். **415**

எனைத்தானும் நல்லவை கேட்க அனைத்தானும்
ஆன்ற பெருமை தரும். **416**

பிழைத்துணர்ந்தும் பேதைமை சொல்லார் இழைத்துணர்ந்
தீண்டிய கேள்வி யவர். **417**

கேட்பினுங் கேளாத் தகையவே கேள்வியால்
தோட்கப் படாத செவி. **418**

நுணங்கிய கேள்விய ரல்லார் வணங்கிய
வாயின ராதல் அரிது. **419**

செவியிற் சுவையுணரா வாயுணர்வின் மாக்கள்
அவியினும் வாழினும் என். **420**

सच्चा ज्ञानी बनना

421. अहित नाश का मूल ही ज्ञान कहाया जाय ।
रिपुसे अगम्य दुर्गसम, वह पालित हो जाय ।।

422. ज्ञान-लब्धि का लाभ है, अघ से चित्तनिवृत्ति ।
और कृत्य के करण में, मन की सदा प्रवृत्ति ।।

423. है बहु बातें श्रवणकर, उन में जो हितवान ।
यों निर्णय में जो मदद, देता वह हो ज्ञान ।।

424. ज्ञानी बनता है वही, जो बोलें वच साफ ।
और दुरूह भी विषय को, अवगत करता साफ ।।

425. ज्ञानी सुख औं विपद में रखता है समभाव ।
पाता तथैव ज्ञान से, गुरुजन मैत्रीभाव ।।

426. जैसा जगदाचार है, वैसा उसके साथ ।
चलना ही मतिमान का, निशान है विख्यात ।।

427. भावीवेत्ता जगत में, सुविदित है धीमान ।
भावीवेत्ता जो नहीं, विदित न वह धीमान ।।

428. पाप भीतिकर काम से, नहि डरते मतिहीन ।
पर डरते हैं लोग बुध, कृति से सुपुण्यहीन ।।

429. भाविशोक का नाशकर, निज पालक धीमान ।
भोगेगा नहीं शोककटु, बुध का यही निशान ।।

430. ज्ञान मात्र से सहित जो, बनता है संपन्न ।
बिना ज्ञान औं सर्वयुत, नहि बनता संपन्न ।।

43. அறிவுடைமை

அறிவற்றங் காக்குங் கருவி செறுவார்க்கும்
உள்ளழிக்க லாகா அரண். 421

சென்ற இடத்தால் செலவிடா தீதொரீஇ
நன்றின்பால் உய்ப்ப தறிவு. 422

எப்பொருள் யார்யார்வாய்க் கேட்பினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்ப தறிவு. 423

எண்பொருள வாகச் செலச்சொல்லித் தான்பிறர்வாய்
நுண்பொருள் காண்ப தறிவு. 424

உலகம் தழீஇயது ஒட்பம் மலர்தலும்
கூம்பலும் இல்லது அறிவு. 425

எவ்வ துறைவது உலகம் உலகத்தோடு
அவ்வ துறைவது அறிவு. 426

அறிவுடையார் ஆவ தறிவார் அறிவிலார்
அஃதறி கல்லா தவர். 427

அஞ்சுவ தஞ்சாமை பேதைமை அஞ்சுவது
அஞ்சல் அறிவார் தொழில். 428

எதிரதாக் காக்கும் அறிவினார்க் கில்லை
அதிர வருவதோர் நோய். 429

அறிவுடையார் எல்லாம் உடையார் அறிவிலார்
என்னுடைய ரேனும் இலர். 430

दोष दूर करना

431. जो नर रहता है सदा, गर्व-कोप-मदहीन ।
उसकी विभूति श्रेष्ठ है, तथैव लघुताहीन ।।

432. उचित पात्र को दान नहि, मिथ्याभिमान शील ।
अनर्ह थल पर अमित मृदु, नृप के ये दुश्शील ।।

433. तिल भर के अपराध को, ताड सदृश सुमहान ।
स्वीकृत कर हो लोग बड, अघ से विमुक्तिमान ।।

434. नाशकरी रिपु-सदृश हो, जनता को ही दोष ।
जीना है अपराध बिनु, सद्गुण है निरदोष ।।

435. कसूर होने के प्रथम, जो न करें निज त्राण ।
पावक सम्मुख तृण, यथा मिटता उसका प्राण ।।

436. निरसन कर के दोष निज, और दोष का दूर ।
करने जो उत्सुक कभी, वह नहि सदोष क्रूर ।।

437. व्यय धार्मिक करता नहीं, भुक्त हि नहीं निजार्थ ।
है धनपालक कृपण को, नहि तीनों पुरुषार्थ ।।

438. धनलोलुपता लोभ का, अपर नाम है, जान ।
षट दोषों से प्रमुख यह, साधारण नहि, जान ।।

439. अवसर पाकर भी कभी, करें न निज गुण-गान ।
व्यर्थ कार्य को सोचना, हित का नहीं निशान ।।

440. प्राप्त चीज का भोग भी, कर लो खुद एकान्त ।
गुप्त-भंग से लक्ष्य का, करते हैं रिपु अंत ।।

44. ESCHEWING OF FAULTS

44. குற்றங்கடிதல்

செருக்குஞ் சினமும் சிறுமையும் இல்லார்
பெருக்கம் பெருமித நீர்த்து. **431**

இவறலும் மாண்பிறந்த மானமும் மாணா
உவகையும் ஏதம் இறைக்கு. **432**

தினைத்துணையாங் குற்றம் வரினும் பனைத்துணையாக்
கொள்வர் பழிநாணு வார். **433**

குற்றமே காக்க பொருளாகக் குற்றமே
அற்றம் தரூஉம் பகை. **434**

வருமுன்னர்க் காவாதான் வாழ்க்கை எரிமுன்னர்
வைத்தூறு போலக் கெடும். **435**

தன்குற்றம் நீக்கிப் பிறர்குற்றம் காண்கிற்பின்
என்குற்ற மாகும் இறைக்கு. **436**

செயற்பால செய்யா திவறியான் செல்வம்
உயற்பால தன்றிக் கெடும். **437**

பற்றுள்ளம் என்னும் இவறன்மை எற்றுள்ளும்
எண்ணப் படுவதொன் றன்று. **438**

வியவற்க எஞ்ஞான்றும் தன்னை நயவற்க
நன்றி பயவா வினை. **439**

காதல காதல் அறியாமை உய்க்கிற்பின்
ஏதில ஏதிலார் நூல். **440**

महान पुरुषों की सहायता संतो का सहायक बनाना

441. ज्ञान वृद्ध धर्मज्ञ औ, बुध की दोस्ती खूब ।
सोच सोच कर बार बहु, कर लें घनिष्ट भूप ।।

442. प्राप्त शोक को दूर कर, भावीशोकनिरोध ।
करने सतर्क व्यक्ति की, मैत्री हो अविरोध ।।

443. वही भाग्य है श्रेष्ठतम, जिसका हो सत्संग ।
और संत का बंधु बन, रहना ही निश्शंक ।।

444. निज से महान पुरुष का, अनुवर्तन हो जाय ।
नृप को यह चतुरंग मे, बलिष्ट समझा जाय ।।

445. विचार कर ही भूप से, दृगसम सचिवनियुक्ति ।
जिससे शासन भार बहु, ढोकर दें नृप-युक्ति ।।

446. निज मति से औ संत की, सलाह से जो राज ।
करता है कुछ नहि उसे, करता शत्रु-समाज ।।

447. ऐसे नृप को शत्रुगण, पहुंचाता नहिं हानि ।
जिसका सचिव हि भूल में, कहता नहि कटु वाणि ।।

448. नृप रिपुबाधाहीन भी, तब पाता खुद नाश ।
कटु आलोचक से रहित, जब हो सुबंधु-नाश ।।

449. पूँजी बिनु व्यापार में, नहि मिलता है लाभ ।
बिना बडों की मदद नृप, नहि पाता दृढलाभ ।।

450. जो नृप खोता संत की, संगति खुद ही प्राप्त ।
सो रिपु से दसवाँ गुणा, क्षति करता है प्राप्त ।।

45. SEEKING THE COUNSEL OF THE GREAT

45. பெரியாரைத் துணைக்கோடல்

அறனறிந்து மூத்த அறிவுடையார் கேண்மை
திறனறிந்து தேர்ந்து கொளல். 441

உற்றநோய் நீக்கி உறாஅமை முற்காக்கும்
பெற்றியார்ப் பேணிக் கொளல். 442

அரியவற்று ளெல்லாம் அரிதே பெரியாரைப்
பேணித் தமராக் கொளல். 443

தம்மிற் பெரியார் தமரா ஒழுகுதல்
வன்மையு ளெல்லாந் தலை. 444

சூழ்வார்கண் ணாக ஒழுகலான் மன்னவன்
சூழ்வாரைச் சூழ்ந்து கொளல். 445

தக்கா ரினத்தனாய்த் தானொழுக வல்லானைச்
செற்றார் செயக்கிடந்த தில். 446

இடிக்குந் துணையாரை ஆள்வாரை யாரே
கெடுக்குந் தகைமை யவர். 447

இடிப்பாரை இல்லாத ஏமரா மன்னன்
கெடுப்பா ரிலானுங் கெடும். 448

முதலிலார்க்கு ஊதியம் இல்லை மதலையாஞ்
சார்பிலார்க்கு இல்லை நிலை. 449

பல்லார் பகைகொளலிற் பத்தடுத்த தீமைத்தே
நல்லார் தொடர்கை விடல். 450

दुर्जन-संग को त्यागना

451. दुष्ट संग से भीत हो, अलग रहें बड लोग ।
बंधु मानते दुष्ट को, हर्षित नीच हि लोग ।।

452. भूमि भेद से भिन्न रस, ज्यों पाता है पानि ।
त्यों नर संगति-भेद से, रखता बहु मति वाणि ।।

453. साधारण मय ज्ञान का, मन होता है मूल ।
भले बुरे के ज्ञान का, संगति ही है मूल ।।

454. विवेक भी मन में उदित, होता है तू जान ।
पर उसका भी मूल है, संगति तू पहचान ।।

455. चित्तशुद्धि कृति शुद्धि का, क्या हो सकता मूल ।
सत्संगति हो मनुज के, दोनों का ही मूल ।।

456. जैसे नर है पूतमति, वैसी हो सन्तान ।
सत्संगतियुत मनुज को सब कुछ शुभशुचिमान ।।

457. चित्तशुद्धि से जीव को, मिलती धनाभिवृद्धि ।
सत्संगति दें जींव को शुचियुत यशोभिवृद्धि ।।

458. कुछ में अच्छे कर्म से, चित्तशुद्धि हो आप ।
चित्तशुद्धि की वृद्धिकर, सत्संगति का लाभ ।।

459. चित्तशुद्धि मे लोग कुछ, पाते ऐहिक भोग ।
भोग-विघ्न का नाशकर, संतों का हो योग ।।

460. सत्संगतिसम और नहि, आमोदकरी मित्र ।
दुस्संगतिसम और नहि, पीडाकरी अमित्र ।।

46. சிற்றினம் சேராமை

சிற்றினம் அஞ்சும் பெருமை சிறுமைதான்
சுற்றமாச் சூழ்ந்து விடும். 451

நிலத்தியல்பால் நீர்திரிந்து அற்றாகும் மாந்தர்க்கு
இனத்தியல்பது ஆகும் அறிவு. 452

மனத்தான்ஆம் மாந்தர்க்கு உணர்ச்சி இனத்தானாம்
இன்னான் எனப்படுஞ் சொல். 453

மனத்துளது போலக் காட்டி ஒருவற்கு
இனத்துளது ஆகும் அறிவு. 454

மனந்தூய்மை செய்வினை தூய்மை இரண்டும்
இனந்தூய்மை தூவா வரும். 455

மனந்தூயார்க் கெச்சம்நன் றாகும் இனந்தூயார்க்கு
இல்லைநன் றாகா வினை. 456

மனநலம் மன்னுயிர்க் காக்கம் இனநலம்
எல்லாப் புகழும் தரும். 457

மனநலம் நன்குடைய ராயினும் சான்றோர்க்கு
இனநலம் ஏமாப் புடைத்து. 458

மனநலத்தின் ஆகும் மறுமைமற் றஃதும்
இனநலத்தின் ஏமாப் புடைத்து. 459

நல்லினத்தி னூங்குந் துணையில்லை தீயினத்தின்
அல்லற் படுப்பதூஉம் இல். 460

विमर्शनकारिता

खूब सोच विचार कर काम करने की रीति

461. पहले व्यय फिर लाभ की, चर्चा नित की जाय।
फिर ही ज्ञानी काम में, तत्पर हो लग जाय ।।

462. विमर्शकर पटु मित्र से, फिर खुद सोच विचार।
जो करता है कृति उसे, कठिन न कारोबार ।।

463. भावि लाभ की चाह से, करगत पूँजी माल।
बुद्धिमान करते कभी, नहि हैं इस्तेमाल ।।

464. बिना किये ही लाभ की, सीमा का सुविचार।
मानभीरू सहसा नहीं, करते कारोबार ।।

465. देश काल औ शत्रुबल, समझे बिना हि भूप।
यदि रणरत हो जो उसे, रिपुहित नष्ट अनूप ।।

466. अकृत्य करना कृत्य का, तजना दोनों काम।
निधनमूल जन के लिए, नहि मिलता आराम ।।

467. कार्यसिद्धि पहचानकर, अपनाओ निजकाम।
कृत में उपाय सोचना, असफलता का काम ।।

468. मिलने पर भी बहु मदद, चारों ही पुरुषार्थ।
जो लाता नहि काम में, वह कृति में असमर्थ ।।

469. जो पर गुण समझे बिना, बनता है कृतिमान।
उसका प्रयास हो सभी, दोषों से युत जान ।।

470. अपनी सीमा जानकर, करना सब कुछ काम।
नहि तो निन्दा लोक की, औ होगा बदनाम ।।

47. ON ACTING WITH FORE THOUGHT

47. தெரிந்து செயல்வகை

அழிவதூஉம் ஆவதூஉம் ஆகி வழிபயக்கும்
ஊதியமும் சூழ்ந்து செயல். 461

தெரிந்த இனத்தோடு தேர்ந்தெண்ணிச் செய்வார்க்கு
அரும்பொருள் யாதொன்றும் இல். 462

ஆக்கம் கருதி முதலிழக்கும் செய்வினை
ஊக்கார் அறிவுடை யார். 463

தெளிவி லதனைத் தொடங்கார் இளிவென்னும்
ஏதப்பாடு அஞ்சு பவர். 464

வகையறச் சூழா தெழுதல் பகைவரைப்
பாத்திப் படுப்பதோ ராறு. 465

செய்தக்க அல்ல செயக்கெடும் செய்தக்க
செய்யாமை யானும் கெடும். 466

எண்ணித் துணிக கருமம் துணிந்தபின்
எண்ணுவம் என்பது இழுக்கு. 467

ஆற்றின் வருந்தா வருத்தம் பலர்நின்று
போற்றினும் பொத்துப் படும். 468

நன்றாற்ற லுள்ளுந் தவறுண்டு அவரவர்
பண்பறிந் தாற்றாக் கடை 469

எள்ளாத எண்ணிச் செயல்வேண்டும் தம்மொடு
கொள்ளாத கொள்ளாது உலகு. 470

बल का बोध ताकत जानना

471\. स्वीकृत कृति की प्रबलता, रिपु औ निज की शक्ति ।
लग जा कृति में जाँचकर दोनों दल की शक्ति ।।

472\. कार्य-सिद्धि युत शक्ति की, खूब जाँच की जाय ।
ऐसे साधक को सभी, कार्य सरल हो जाय ।।

473\. निज बल थोडा भूलकर, सिर्फ जोश से कार्य ।
जो करते हैं बीच में, होते विघ्नित कार्य ।।

474\. निजबल जाने बिना, किये बिनु च पर-नेह ।
आत्मश्लाघा शील की, मिटती सशीघ्र देह ।।

475\. पंखसदृश लघु वजन से, नही शकट की हानि ।
अधिक भार के वहन से, अक्ष भंग की हानि ।।

476\. पेड़-शिखर पहुँचकर भी, फिर आगे बढ़ जाय ।
डाल भग्न हो जीव भी गिरकर मृत हो जाय ।।

477\. यथाशक्ति जो धर्म से, करता है धन-दान ।
उसका धन सदैव नहीं, पावेगा अवसान ।।

478\. अगर आय कम हो सदा, तो भी वह नहि दोष ।
व्यय बहुहो यदि आय से, संभव हो बहु दोष ।।

479\. अर्जित से जो अधिक धन, करता है नित खर्च ।
उसका धन थिर है नहीं, मोहसमान विवर्ज ।।

480\. जो रत परोपकार में, बिनु सोचे ही आय ।
उसका धन तो शीघ्रही, कम होता रह जाय ।।

48. வலியறிதல்

வினைவலியும் தன்வலியும் மாற்றான் வலியும்
துணைவலியும் தூக்கிச் செயல். **471**

ஒல்வ தறிவது அறிந்ததன் கண்தங்கிச்
செல்வார்க்குச் செல்லாதது இல். **472**

உடைத்தம் வலியறியார் ஊக்கத்தின் ஊக்கி
இடைக்கண் முரிந்தார் பலர். **473**

அமைந்தாங் கொழுகான் அளவறியான் தன்னை
வியந்தான் விரைந்து கெடும். **474**

பீலிபெய் சாகாடும் அச்சிறும் அப்பண்டம்
சால மிகுத்துப் பெயின். **475**

நுனிக்கொம்பர் ஏறினார் அஃதிறந் தூக்கின்
உயிர்க்கிறுதி யாகி விடும். **476**

ஆற்றின் அளவறிந்து ஈக அதுபொருள்
போற்றி வழங்கும் நெறி. **477**

ஆகாறு அளவிட்டி தாயினுங் கேடில்லை
போகாறு அகலாக் கடை **478**

அளவறிந்து வாழாதான் வாழ்க்கை உளபோல
இல்லாகித் தோன்றாக் கெடும். **479**

உளவரை தூக்காத ஒப்புர வாண்மை
வளவரை வல்லைக் கெடும். **480**

काल का बोध - समयोचित कार्य जानना

481. पा लेता है दिवस में, उलूक पर जय काक ।
उचित काल की ताक में, रहता नृप जय-भाक ।।

482. सोचकर बार बहु, उचित काल में काम ।
शुरु किया जो वह करें, अस्थिर को थिर दाम ।।

483. उचित काल में युक्तियुत, जो करता है काम ।
उसको कुछ भी कठिन नहि, साध्य सभी हैं काम ।।

484. जो लगता है काम में, कालस्थलानुसार ।
कर सकता है राज्य वह, वशकर सब संसार ।।

485. जग-शासन की चाह यदि, हो तो फिक्र न लाभ ।
उचित काल की ताक में, रह निष्क्रिय चुपचाप ।।

486. जयरत अज का पृष्ठ तक, गमन-नीति है ठीक ।
रणविमुखी नृप समय ही, ताकें चुप हो ठीक ।।

447. हैं बुध रिपु के सामने, नहीं दिखाते कोप ।
कार्य साधते काल में, अन्दर ही रख कोप ।।

448. नाशकाल होते समय, रिपु-सिर-गिरता आप ।
तब तक जिगीषु मनुज को, रहना है चुपचाप ।।

489. सही काल मिलते समय, फिरनहि मिलना साध्य ।
ऐसा कृतिकर सोचकर, लखना समय असाध्य ।।

490. कार्यकाल तक बकसदृश, रहना निष्क्रिय मौन ।
कार्यकाल में कार्य को, सफल करो बिनू मौन ।।

49. ON SEIZING THE OPPORTUNE MOMENT

49. காலம் அறிதல்

பகல்வெல்லும் கூகையைக் காக்கை இகல்வெல்லும்
வேந்தர்க்கு வேண்டும் பொழுது. 481

பருவத்தோடு ஒட்ட ஒழுகல் திருவினைத்
தீராமை ஆர்க்கும் கயிறு. 482

அருவினை என்ப உளவோ கருவியான்
காலம் அறிந்து செயின். 483

ஞாலம் கருதினுங் கைகூடும் காலம்
கருதி இடத்தாற் செயின். 484

காலம் கருதி இருப்பர் கலங்காது
ஞாலம் கருது பவர். 485

ஊக்க முடையான் ஒடுக்கம் பொருதகர்
தாக்கற்குப் பேருந் தகைத்து. 486

பொள்ளென ஆங்கே புறம்வேரார் காலம்பார்த்து
உள்வேர்ப்பர் ஒள்ளி யவர். 487

செறுநரைக் காணின் சுமக்க இறுவரை
காணின் கிழக்காம் தலை. 488

எய்தற் கரியது இயைந்தக்கால் அந்நிலையே
செய்தற் கரிய செயல். 489

கொக்கொக்க கூம்பும் பருவத்து மற்றதன்
குத்தொக்க சீர்த்த இடத்து. 490

स्थल का बोध - कार्य - पूर्ति के लिए उचित जगह जानना

491. शुरू न करे कोई करम, रिपु निन्दा तजनीय ।
जब तक सैनिक दुर्ग की संस्था न स्थापनीप ।।

492. दृढपालित थल पहुँचकर, विशिष्ट जल संपन्न ।
नृप को लखकर शत्रुजन, हो जाते भय भग्न ।।

493. पाकर पालित जगह को, निज पालन में लीन ।
रणरत दुर्बल भूप भी, बनता प्रबलाधीन ।।

494. उचित जगह पहँचानकर, उस थल से रणमग्न ।
नृप को लखकर शत्रुजन, हो जाते भय भग्न ।।

495. गहरे जल में मगर की होती नहिं है हार ।
वही किनारे दिख पडे, बनता निजल-शिकार ।।

496. सबलचक्रयुत रथ बडा, न सिन्धु पर गमनीय ।
जलगामी नावें सभी, भू पर नहिं गमनीय ।।

497 यदि नृप समुंचित देश पर, रहकर बारंवार ।
कर विचार कृति में लगें, तो निश्चित जयकार ।।

498. अल्पसैन्ययुत भूप यदि, गुप्तस्थलसमवेत ।
हो, ना पायेगा निधन, रिपुबहुबलसमवेत ।।

499. दुर्गस्थल विहीन तथा, असररहित नरनाथ ।
है अजेय यदि रह रहें, निज थल पर दिनरात ।।

500. शूलपाणियुत वीर का, वधकर दंतसमेत ।
हो गज यदि पंकगत तो सियार जीतसमेत ।।

50. ON CHOOSING THE RIGHT PLACE

50. இடன் அறிதல்

தொடங்கற்க எவ்வினையும் எள்ளற்க முற்றும்
இடங்கண்ட பின்அல் லது. **491**

முரண்சேர்ந்த மொய்ம்பி னவர்க்கும் அரண்சேர்ந்தாம்
ஆக்கம் பலவுந் தரும். **492**

ஆற்றாரும் ஆற்றி அடுப இடனறிந்து
போற்றார்கண் போற்றிச் செயின். **493**

எண்ணியார் எண்ணம் இழப்பர் இடனறிந்து
துன்னியார் துன்னிச் செயின். **494**

நெடும்புனலுள் வெல்லும் முதலை அடும்புனலின்
நீங்கின் அதனைப் பிற. **495**

கடலோடா கால்வல் நெடுந்தேர் கடலோடும்
நாவாயும் ஓடா நிலத்து. **496**

அஞ்சாமை அல்லால் துணைவேண்டா எஞ்சாமை
எண்ணி இடத்தாற் செயின். **497**

சிறுபடையான் செல்லிடம் சேரின் உறுபடையான்
ஊக்கம் அழிந்து விடும். **498**

சிறைநலனும் சீரும் இலரெனினும் மாந்தர்
உறைநிலத்தோடு ஒட்டல் அரிது. **499**

காலாழ் களரில் நரியடும் கண்அஞ்சா
வேலாள் முகத்த களிறு. **500**

जाँचकर भरोसा करना-सोच विचार कर उम्मीद करना

501. धर्म अर्थ इच्छा तथा प्राणभीरूता चार।
युक्ति जांचकर दूत पर सौंपो कारोबार॥

502. जिसमें है निर्दोषिता, पाप भीरूता लाज।
औ कुलीनता है वही, नृप का प्रत्यय-भाज॥

503. दोषरहित बहुग्रंथ के, वेत्ता है धीमान्।
असकृत उनकी जाँच से, दिखता है अज्ञान॥

504. गुणावगुण को जानकर करो गुणी स्वीकार।
अवगुणवाले को सदा नहीं करो स्वीकार॥

505. गुरूता-लघुता व्यक्ति की, तत्कृतकृति की जाँच।
करके जाहिर है यथा, बनें कसौटी साँच॥

506. बंधुहीन जन पर कभी, नहि रखना विश्वास।
बंधनविहीन धैर्य से, रखता है सब आस॥

507. प्रत्यय करके अज्ञ पर, उनका कार्य-नियोग।
फलदायक होगा न औ, हो नृपबुद्धि-वियोग॥

508. जो कृति पर अज्ञात का, करता है तैनात।
वह खुद पाता है निधन, औ संतति-आघात॥

509. प्रत्यय करना चाहिए, जन पर सोच-विचार।
आशा सह विश्वस्त का, कृतिनियोग सत्कार॥

510. आशा रखना नफर पर, सोचे बिना न ठीक।
निराश रखना नफर पर, सोचकर भी न ठीक।

51. தெரிந்து தெளிதல்

அறம்பொருள் இன்பம் உயிரச்சம் நான்கின்
திறந்தெரிந்து தேறப் படும். 501

குடிப்பிறந்து குற்றத்தின் நீங்கி வடுப்பரியும்
நாணுடையான் கட்டே தெளிவு. 502

அரியகற்று ஆசற்றார் கண்ணும் தெரியுங்கால்
இன்மை அரிதே வெளிறு. 503

குணம்நாடிக் குற்றமும் நாடி அவற்றுள்
மிகைநாடி மிக்க கொளல். 504

பெருமைக்கும் ஏனைச் சிறுமைக்கும் தத்தம்
கருமமே கட்டளைக் கல். 505

அற்றாரைத் தேறுதல் ஓம்புக மற்றவர்
பற்றிலர் நாணார் பழி. 506

காதன்மை கந்தா அறிவறியார்த் தேறுதல்
பேதைமை எல்லாம் தரும். 507

தேரான் பிறனைத் தெளிந்தான் வழிமுறை
தீரா இடும்பை தரும். 508

தேறற்க யாரையும் தேராது தேர்ந்தபின்
தேறுக தேறும் பொருள். 509

தேரான் தெளிவும் தெளிந்தான்கண் ஐயுறவும்
தீரா இடும்பை தரும். 510

जाँचकर कार्य करना योग्य व्यक्ति पर कार्य सौंपदेना

511. बुरा भला जी जाँचकर, भला चाहता रोज ।
काम-काज है सौंपना, करके उसकी खोज ।।

512. आय-तरीका जाँचकर, जो बनता धनवान ।
राजकाज पर शक बिना, नियुक्त हो वह, ज्ञान ।।

513. ज्ञान नेह निर्माल्य औ, लोभ शून्य ये चार ।
जिसमें रहतें वह करें, राजकीय व्यापार ।।

514. शील जाँच में विजित कुछ, पद पर विराजमान ।
आखिर पद के मोह से, बनते कुबुद्धिमान ।।

515. राजकीय कृति पर नियत, करना उसे कसूर ।
जो कृति करने चतुर नहि, कठिनाई कर दूर ।।

516. नृप से नियुक्त है वही, जो तो कर्त्ता-शील ।
क्रिया-तत्व औ समयका, करता है परिशील ।।

517. अमुक हेतु से अमुक कृति, करने जो है योग्य ।
ऐसा विचार कर वही, राजकाजपर योग्य ।।

518. समर्थ पर कृति भार दें, फिर करने अधिकार ।
उसको देना चाहिए, यह है राजाचार ।।

519. बधुसदृश स्वीकृत करम, जो करता सप्रेम ।
निकालनेवाला उसे, खोता लक्ष्मीप्रेम ।।

520. यदि खुश हो मजदूर सब, तो हो खुश संसार ।
मजदूरों को नृप करें, चिन्तामुक्त अपार ।।

52. ON SELECTING AND EMPLOYING MEN

52. தெரிந்து வினையாடல்

நன்மையும் தீமையும் நாடி நலம்புரிந்த
தன்மையான் ஆளப் படும். 511

வாரி பெருக்கி வளம்படுத்து உற்றவை
ஆராய்வான் செய்க வினை. 512

அன்பறிவு தேற்றம் அவாவின்மை இந்நான்கும்
நன்குடையான் கட்டே தெளிவு. 513

எனைவகையான் தேறியக் கண்ணும் வினைவகையான்
வேறாகும் மாந்தர் பலர். 514

அறிந்தாற்றிச் செய்கிற்பாற்கு அல்லால் வினைதான்
சிறந்தானென்று ஏவற்பாற் றன்று. 515

செய்வானை நாடி வினைநாடிக் காலத்தோடு
எய்த உணர்ந்து செயல். 516

இதனை இதனால் இவன்முடிக்கும் என்றாய்ந்து
அதனை அவன்கண் விடல். 517

வினைக்குரிமை நாடிய பின்றை அவனை
அதற்குரிய னாகச் செயல். 518

வினைக்கண் வினையுடையான் கேண்மைவே றாக
நினைப்பானை நீங்கும் திரு. 519

நாடோறும் நாடுக மன்னன் வினைசெய்வான்
கோடாமை கோடா துலகு. 520

बंधुजनों की स्वीकृति 53 बंधुओं का संरक्षण करना

521\. निर्धनता में पूर्वकृत, बंधुजनों की प्रीति ।
याद दिलाकर सुस्तवन यह है बाँधव-रीति ।।

522\. अगर किसी को प्रेमयुत, रिश्ता ही मिल जाय ।
तो सब हितकारक उसे, रिश्ता ही हो जाय ।।

523\. प्रेमयुक्त रिश्तारहित, जीवन नहि है धन्य ।
ज्यों जल से भर ताल का तीराभाव अधन्य ।।

524\. बंधुसाहयकर जो सदा, रहता बंधुसमेत ।
उससे अर्जित वित्त तो, होगा लाभसमेत ।।

525\. जो धन देता बंधु को, प्रिय भाषण के साथ ।
घिरा हुआ है वह सदा, बंधुजनों के साथ ।।

526\. दानशील जितमन्यु, नृप, रहता है स्वाधीन ।
पर होते हैं जगत में, उसके सभी अधीन ।।

527\. वायस स्वार्जित धान को खाता काकसमेत ।
यों होगा धनवृद्धिकर, खाना बंधुसमेत ।।

528\. साम्यबुद्धि बिनु जो लखें क्षयता के आधार ।
उस नृप के बनते सभी, घनिष्ट रिश्तेदार ।।

529\. कारणवश थित बंधुता, अगर टूट हो जाय ।
फिर औ कारणवश वही, यथा पूर्व उग जाय ।।

530\. नाता तज फिर हेतुवश, जो आ पहुँचा जाय ।
विचार कर नृप भी उसे, स्वीकृत किया हि जाय ।।

53. சுற்றந் தழால்

பற்றற்ற கண்ணும் பழைமைபா ராட்டுதல்
சுற்றத்தார் கண்ணே யுள. 521

விருப்பறாச் சுற்றம் இயையின் அருப்பறா
ஆக்கம் பலவுந் தரும். 522

அளவளா வில்லாதான் வாழ்க்கை குளவளாக்
கோடின்றி நீர்நிறைந் தற்று. 523

சுற்றத்தால் சுற்றப் படஒழுகல் செல்வந்தான்
பெற்றத்தால் பெற்ற பயன். 524

கொடுத்தலும் இன்சொலும் ஆற்றின் அடுக்கிய
சுற்றத்தால் சுற்றப் படும். 525

பெருங்கொடையான் பேணான் வெகுளி அவனின்
மருங்குடையார் மாநிலத்து இல். 526

காக்கை கரவா கரைந்துண்ணும் ஆக்கமும்
அன்னநீ ரார்க்கே உள. 527

பொதுநோக்கான் வேந்தன் வரிசையா நோக்கின்
அதுநோக்கி வாழ்வார் பலர். 528

தமராகித் தன்துறந்தார் சுற்றம் அமராமைக்
காரணம் இன்றி வரும். 529

உழைப்பிரிந்து காரணத்தின் வந்தானை வேந்தன்
இழைத்திருந்து எண்ணிக் கொளல். 530

अविस्मृति की आवश्यकता

531. सुखानुभव में लग्न हो, फरज न करना भूल ।
कोपजनित दुख से अधिक, हो दुखदायक मूल ।।

532. ज्यों निर्धनता मनुज की, करती है मतिहानि ।
त्यों ही असावधानता, करती यश की हानि ।।

533. विस्मृति सिरफ न भूप को, अपयशकर हो जाय ।
पुरुषार्थी को किन्तु वह, अपयशकर ठहराय ।।

534. रहने-पर भी दुर्ग में, नहीं भीत को लाभ ।
विस्मृतिवाले को यथा, धन से नहि है लाभ ।।

535. पहले समुदित शोक को, विस्मृति से न निकाल ।
प्राप्त शोक से मनुज है, पछताता बहुकाल ।।

536. सभी काल में हर जगह, अप्रमादसम चीज ।
और न कोई जगत में, हितसुखकारक चीज ।।

537. विस्मृतिविहीन मनुज को, कोई नहीं असाध्य ।
पर विस्मृतियुत मनुज को कोई भी नहि साध्य ।।

538. नीतिमान का स्तव कथन, कार्यान्वित कर शान ।
करे न उसका भूल कर, सात जन्म सुनसान ।।

539. सुख में जो है भूलता, फरज गर्व के साथ ।
अविस्मरण सोचें वही, क्षतिगत नर की गाथ ।।

540. वांछित फल है प्राप्तकर, सकता वह इनसान ।
जो विस्मृति बिन जागकर, कृति में प्रयत्नवान ।।

54. பொச்சாவாமை

இறந்த வெகுளியின் தீதே சிறந்த
உவகை மகிழ்ச்சியிற் சோர்வு. 531

பொச்சாப்புக் கொல்லும் புகழை அறிவினை
நிச்ச நிரப்புக்கொன் றாங்கு. 532

பொச்சாப்பார்க்கு இல்லை புகழ்மை அதுவுலகத்து
எப்பால்நூ லோர்க்கும் துணிவு. 533

அச்ச முடையார்க்கு அரணில்லை ஆங்கில்லை
பொச்சாப் புடையார்க்கு நன்கு. 534

முன்னுறக் காவாது இழுக்கியான் தன்பிழை
பின்னூறு இரங்கி விடும். 535

இழுக்காமை யார்மாட்டும் என்றும் வழுக்காமை
வாயின் அதுவொப்பது இல். 536

அரியஎன்று ஆகாத இல்லைபொச் சாவாக்
கருவியால் போற்றிச் செயின். 537

புகழ்ந்தவை போற்றிச் செயல்வேண்டும் செய்யாது
இகழ்ந்தார்க்கு எழுமையும் இல். 538

இகழ்ச்சியின் கெட்டாரை உள்ளுக தாந்தம்
மகிழ்ச்சியின் மைந்துறும் போழ்து. 539

உள்ளியது எய்தல் எளிதுமன் மற்றுந்தான்
உள்ளியது உள்ளப் பெறின். 540

नीति - परिपालन सुनीति से शासन करने की रीति

541. नीति-रीति है भूप की, अनीति विन रह बीच ।
शास्त्र रीति से दण्ड नित, देना जनता-बीच ॥

542. जीव राशियाँवृष्टिका करती हैं अभिलाष ।
ज्यों जनता नय राज का करती हैं अभिलाष ॥

543. भूसुरपालित वेद औ, उसमें वर्णित धर्म ।
लक्ष्य बनाकर उभय को, नीतिगमन नृप-धर्म ॥

544. जनता के अनुसार जो, नय से करता राज ।
उसे देखता प्रीति से, सारा मनुजसमाज ॥

545. नीतिशास्त्रगत धर्म से, जो करता है राज ।
उस थल में जल बरसकर, होगा सस्यविराज ॥

546. सिरफ़ हाथगत शूल से, नृप नहि पाता जीत ।
ऋजु से देना दण्ड हो, सहाय पाने जीत ॥

547. नीति दण्ड से भूप यदि, जगपालक हो जाय ।
वही दण्ड तो शक बिना, नृपपालक बन जाय ॥

548. जनदर्शी हो सुलभ से, सुनकर उनकी माँग ।
नृप करता है न्याय नहि, औ पाता क्षति दाग ॥

549. पालन जनका शत्रु से, अपराधी का पाप ।
निरसन करना, दण्ड से, नृप के फरज न पाप ॥

550. कटुकर्मी को विहित है, मृत्यदण्ड का दान ।
फसल बढाने के लिए, घास-उखाडससान ॥

55. ON WIELDING THE SCEPTRE

55. செங்கோன்மை

ஓர்ந்துகண் ணோடாது இறைபுரிந்து யார்மாட்டும்
தேர்ந்துசெய் வஃதே முறை. 541

வானோக்கி வாழும் உலகெல்லாம் மன்னவன்
கோல்நோக்கி வாழுங் குடி. 542

அந்தணர் நூற்கும் அறத்திற்கும் ஆதியாய்
நின்றது மன்னவன் கோல். 543

குடிதழீஇக் கோலோச்சும் மாநில மன்னன்
அடிதழீஇ நிற்கும் உலகு. 544

இயல்புளிக் கோலோச்சும் மன்னவன் நாட்ட
பெயலும் விளையுளுந் தொக்கு. 545

வேலன்று வென்றி தருவது மன்னவன்
கோலதூஉம் கோடா தெனின். 546

இறைகாக்கும் வையக மெல்லாம் அவனை
முறைகாக்கும் முட்டாச் செயின். 547

எண்பதத்தான் ஓரா முறைசெய்யா மன்னவன்
தண்பதத்தான் தானே கெடும். 548

குடிபுறங் காத்தோம்பிக் குற்றம் கடிதல்
வடுவன்று வேந்தன் தொழில். 549

கொலையிற் கொடியாரை வேந்தொறுத்தல் பைங்கூழ்
களைகட் டதனொடு நேர். 550

अनीति से शासन करना
नीतिच्युत शासन रीति से अत्याचार

551. अधर्म पथ पर गमन कर, जनदुखकारी भूप ।
निर्दय घातक से भयद, कठोर मनुज सरूप ।।

552. कर-धन बिनु औ वित्त को, पाना चाहें भूप ।
ज्यों यात्री से माल का, हर्त्ता चोरसरूप ।।

553. सवाल दैनिक प्रश्न का, नहि देता जो भूप ।
धीरे धीरे तो राज्य निज़, खोयेगा वह भूप ।।

554. भावी विपत्ति सोच विनु, अधर्म से नृप राज ।
अगर करें तो भूप-धन, नष्ट व मनुजसमाज ।।

555. अधर्म शासक भूप के, जन का आँसूजाल ।
भीम शस्त्र बन भूप का, नष्ट करेगा माल ।।

556. धर्म-रीति से राजकर, थिर यश पाता भूप ।
अधर्मगति से राजकर, खोता है यश भूप ।।

557. निर्दय नृप के देश के, निवासियों का हाल ।
वृष्टिरहित थल के यथा, निवासियो का हाल ।।

558. अभावसम धन भी तभी, शोककरी बन जाय ।
भूपधर्म तज़कर जभी, शासन करता जाय ।।

559. नीति मार्ग से च्युत अगर, शासन करें नरेश ।
क्रम से भी नहि मेघ तो, देता जललवलेश ।।

560. अधर्म शासित राज में, विप्र भूलते वेद ।
औ गायें देती न पय, सचमुच यह है खेद ।।

56. கொடுங்கோன்மை

கொலைமேற்கொண் டாரிற் கொடிதே அலைமேற்கொண்டு
அல்லவை செய்தொழுகும் வேந்து. 551

வேலொடு நின்றான் இடுஎன் றதுபோலும்
கோலொடு நின்றான் இரவு. 552

நாடொறும் நாடி முறைசெய்யா மன்னவன்
நாடொறும் நாடு கெடும். 553

கூழும் குடியும் ஒருங்கிழக்கும் கோல்கோடிச்
சூழாது செய்யும் அரசு. 554

அல்லற்பட்டு ஆற்றாது அழுதகண் ணீரன்றே
செல்வத்தைத் தேய்க்கும் படை 555

மன்னர்க்கு மன்னுதல் செங்கோன்மை அஃதின்றேல்
மன்னாவாம் மன்னர்க் கொளி. 556

துளியின்மை ஞாலத்திற்கு எற்றற்றே வேந்தன்
அளியின்மை வாழும் உயிர்க்கு. 557

இன்மையின் இன்னாது உடைமை முறைசெய்யா
மன்னவன் கோற்கீழ்ப் படின். 558

முறைகோடி மன்னவன் செய்யின் உறைகோடி
ஒல்லாது வானம் பெயல். 559

ஆபயன் குன்றும் அறுதொழிலோர் நூல்மறப்பர்
காவலன் காவான் எனின். 560

डरावना कार्य न करना
प्रजा के लिए भयप्रद काम न करना

561. तटस्थ होकर दुष्ट को, विचार कर फिर दोष ।
करने देता जो नहीं, वही भूप निर्दोष ।।

562. दोषी के प्रति क्रूर हो, दण्डकाल में अल्प ।
जो देता है दण्ड वह, रखता वित्त अनल्प ।।

563. अधर्म - पालन से सभी, लोग भीत हो जाय ।
ऐसा नृप तो शीघ्र ही, जरूर बिगडा जाय ।।

564. भूप हमारा क्रूर है, सुनकर ऐसी बात ।
होकर नृप की आयु कम, विनष्ट हो अचिरात ।।

565. असुलभदर्शी जो तथा, अप्रसन्नमुख भूप ।
है उसका धन भूत से, पालित वित्त सरूप ।।

566. जो नृप दयाविहीन है, जिसका वचन कठोर ।
उस नृप की धन-दया पल भर हो कमजोर ।।

567. कटुक वचन ही बोलना, दण्डदान अनरीति ।
दोनो रिपु को जीतने, बलकारक नहि रीति ।।

568. उस नृप का धन नष्ट हो, जो कृतिकर अधिकार ।
असफल कृति से सचिव पर, करता दोषविचार ।।

569. सुदृढ दुर्ग से हीन नृप, यदि रणरत हो जाय ।
बंधुहीन रिपु भीत तो, झट वह बिगडा जाय ।।

570. ऊँचे पद पर अपढ को, नियुक्त कर यदि राज ।
करें भूप तो अपढ से, भू को भार न लाज ।।

57. AGAINST THE REIGN OF TERROR

57. வெருவந்த செய்யாமை

தக்காங்கு நாடித் தலைச்செல்லா வண்ணத்தால்
ஒத்தாங்கு ஒறுப்பது வேந்து. 561

கடிதோச்சி மெல்ல எறிக நெடிதாக்கம்
நீங்காமை வேண்டு பவர். 562

வெருவந்த செய்தொழுகும் வெங்கோல னாயின்
ஒருவந்தம் ஒல்லைக் கெடும். 563

இறைகடியன் என்றுரைக்கும் இன்னாச்சொல் வேந்தன்
உறைகடுகி ஒல்லைக் கெடும். 564

அருஞ்செவ்வி இன்னா முகத்தான் பெருஞ்செல்வம்
பேஎய்கண் டன்னது உடைத்து. 565

கடுஞ்சொல்லன் கண்ணில னாயின் நெடுஞ்செல்வம்
நீடின்றி ஆங்கே கெடும். 566

கடுமொழியும் கையிகந்த தண்டமும் வேந்தன்
அடுமுரண் தேய்க்கும் அரம். 567

இனத்தாற்றி எண்ணாத வேந்தன் சினத்தாற்றிச்
சீறின் சிறுகும் திரு. 568

செருவந்த போழ்திற் சிறைசெய்யா வேந்தன்
வெருவந்து வெய்து கெடும். 569

கல்லார்ப் பிணிக்கும் கடுங்கோல் அதுவல்லது
இல்லை நிலக்குப் பொறை. 570

कृपा - कटाक्ष

परिचित व्यक्तियो के वचन न भूलना ।

571. करुणारूपी रम्यता दिखती है हर ओर ।
इसीलिए जग ना कभी, जाता क्षति की ओर ।।

572. दया भाव यदि है नही, तो नहि है संसार ।
जीना निर्दय मनुज का,समझो जग का भार ।।

573. गीत बिना साहित्य के, नहीं फायदेमन्द ।
ज्यों करुणाविहीन नयन, नहीं फायदेमन्द ।।

574. करुणा पूरित यदि नयन, ना तो है नहि लाभ ।
वे मुख के भूषण बनें, नहि कोई औ लाभ ।।

575. करुणा भूषण नेत्र का, सदैव मानी जाय ।
दृग-भूषण नहि तो नेत्र को, व्रणसम समझा जाय ।।

576. नयन सहित नर यदि रहे, दया भाव से हीन ।
उसको तो समझो सिरफ, पादप चेतनहीन ।।

577. करूणाविहीन मनुज को, समझो अंधसमान ।
करुणागुणयुत मनुज को, समझो ही दृगमान ।।

578. जो करता है निज फरज, औ हो करूणावान ।
उसके वश में जगत है, सुस्थिर विराजमान ।।

579. अपराधी पर डालना अनुकंपा की दृष्टि ।
और सहन करना उसे, नृप की सद्गुण-सृष्टि ।।

580. मित्रदत्त विष का अशन, करना प्रत्यय मूल ।
औ मैत्री भी मोलना, दया-कामना-मूल ।।

58. கண்ணோட்டம்

கண்ணோட்டம் என்னும் கழிபெருங் காரிகை
உண்மையான் உண்டிவ் வுலகு. 571

கண்ணோட்டத் துள்ளது உலகியல் அஃதிலார்
உண்மை நிலக்குப் பொறை. 572

பண்என்னாம் பாடற்கு இயைபின்றேல் கண்என்னாம்
கண்ணோட்டம் இல்லாத கண். 573

உளபோல் முகத்தெவன் செய்யும் அளவினால்
கண்ணோட்டம் இல்லாத கண். 574

கண்ணிற்கு அணிகலம் கண்ணோட்டம் அஃதின்றேல்
புண்ணென்று உணரப் படும். 575

மண்ணோ டியைந்த மரத்தனையர் கண்ணோடு
இயைந்துகண் ணோடா தவர். 576

கண்ணோட்டம் இல்லவர் கண்ணிலர் கண்ணுடையார்
கண்ணோட்டம் இன்மையும் இல். 577

கருமஞ் சிதையாமல் கண்ணோட வல்லார்க்கு
உரிமை உடைத்திவ் வுலகு. 578

ஒறுத்தாற்றும் பண்பினார் கண்ணும்கண் ணோடிப்
பொறுத்தாற்றும் பண்பே தலை. 579

பெயக்கண்டும் நஞ்சுண் டமைவர் நயத்தக்க
நாகரிகம் வேண்டு பவர். 580

गुप्तचरों का उपयोग

गुप्तचरो के सामर्थ्य जानकर शासन करना

581. नीति-शास्त्र औ गुप्तचर दोनों नृप के नैन ।
उनके द्वारा नृप करें राजकाज दिन-रैन ।।

582. सभी काल औ देश में, जो होती है बात ।
उसे जान नृप चार से, पालक हो अचिरात ।।

583. खबर जानकर चार से, अगर न करें विचार ।
नृप रिपुवश में ग्रस्त हो, खुद पाता संहार ।।

584. दूत बंधु औ शत्रु की, कथनी, क्रिया-विचार ।
जो नृप को देता खबर, वही बना है चार ।।

585. औरों को जाने विना, धरकर वेषाकार ।
रिपु-संमुख होकर निडर, गोपनपटु है चार ।।

586. भिक्षुवेषधर शत्रु से. शंकित सुदृढाचार ।
जाकर शस्त्रागार भी, विषय जानता चार ।।

587. निज पटुता से भेद बहु, बाहर करके व्यक्त ।
यथारीति नृप को उसे, चर करता है व्यक्त ।।

588. एक चार की खबर से, अन्य चार की बात ।
मिलती हो तो ही उसे, कर लो आतमसात ।।

589. चार परस्पर विदित बिन, करें कर्मचर तीन ।
उनमें हो तो एकता, उसे गहें शकहीन ।।

590. नृप चर को यदि भेंट दें, तो देना अतिगुप्त ।
प्रकट करें तो खबर सब, नहीं रहेगी गुप्त ।।

59. ஒற்றாடல்

ஒற்றும் உரைசான்ற நூலும் இவையிரண்டும்
தெற்றென்க மன்னவன் கண். 581

எல்லார்க்கும் எல்லாம் நிகழ்பவை எஞ்ஞான்றும்
வல்லறிதல் வேந்தன் தொழில். 582

ஒற்றினான் ஒற்றிப் பொருள்தெரியா மன்னவன்
கொற்றம் கொளக்கிடந்தது இல். 583

வினைசெய்வார் தம்சுற்றம் வேண்டாதார் என்றாங்கு
அனைவரையும் ஆராய்வது ஒற்று. 584

கடாஅ உருவொடு கண்ணஞ்சாது யாண்டும்
உகாஅமை வல்லதே ஒற்று. 585

துறந்தார் படிவத்த ராகி இறந்தாராய்ந்து
என்செயினும் சோர்விலது ஒற்று. 586

மறைந்தவை கேட்கவற் றாகி அறிந்தவை
ஐயப்பாடு இல்லதே ஒற்று. 587

ஒற்றொற்றித் தந்த பொருளையும் மற்றுமோர்
ஒற்றினால் ஒற்றிக் கொளல். 588

ஒற்றொற் றுணராமை ஆள்க உடன்மூவர்
சொல்தொக்க தேறப் படும். 589

சிறப்பறிய ஒற்றின்கண் செய்யற்க செய்யின்
புறப்படுத்தா னாகும் மறை. 590

उत्साह प्राप्ति

दिल के उत्साह के साथ कार्य करना

591. जो नर है उत्साहयुत, वह है वैभववान ।
निरुत्साह शेषयुत भी, नहि है वैभववान ।।

592. उद्यमसमान चिर न औ, कोई जग में वित्त ।
गायब होते शीघ्र हीं, और सभी तो वित्त ।।

593. धन के बदले जो रखें, अपने में उत्साह ।
खोकर भी वह शेषधन, नहि भरता है आह ।।

594. कुंठित नहि है सर्वदा, जिसका तो उत्साह ।
अनाहूत भी श्री उसे, पाती चलकर राह ।।

595 कुसुमनाल की दीर्घता, नीरागाधसमेत ।
ज्यों जितना उत्साह है, उतनी आयुसमेत ।।

596. नृप निज उन्नति के लिए, सोचें ही दिनरात ।
कार्य-सिद्धि पर हो नहीं, यत्न न धोना हाथ ।।

597. बाणबिद्ध भी गज यथा, तजता नहि गांभीर्य ।
पाने पर भी कष्ट बहु, उद्यमी न निर्वीर्य ।।

598. दानशील हैं हम सभी-यों कर सदा विचार ।
उत्साहहीन नृप कभी, नहि पाते सत्कार ।।

599. उत्साही शार्दूल को, लखकर विशालकाय ।
भींमदाँत युत भीत गज, करता दौड-उपाय ।।

600. जग में जनता के लिए. बलिष्ट है उत्साह ।
निरुत्साह नर दीखते, तरुसम बिन फल-छाह ।।

60. UNFLAGGING ENERGY

60. ஊக்கம் உடைமை

உடையர் எனப்படுவது ஊக்கம் அஃதில்லார்
உடையது உடையரோ மற்று. 591

உள்ளம் உடைமை உடைமை பொருளுடைமை
நில்லாது நீங்கி விடும். 592

ஆக்கம் இழந்தேமென்று அல்லாவார் ஊக்கம்
ஒருவந்தம் கைத்துடை யார். 593

ஆக்கம் அதர்வினாய்ச் செல்லும் அசைவிலா
ஊக்க முடையா னுழை. 594

வெள்ளத் தனைய மலர்நீட்டம் மாந்தர்தம்
உள்ளத் தனையது உயர்வு. 595

உள்ளுவ தெல்லாம் உயர்வுள்ளல் மற்றது
தள்ளினும் தள்ளாமை நீர்த்து. 596

சிதைவிடத்து ஒல்கார் உரவோர் புதையம்பிற்
பட்டுப்பா டூன்றும் களிறு. 597

உள்ளம் இலாதவர் எய்தார் உலகத்து
வள்ளியம் என்னும் செருக்கு. 598

பரியது கூர்ங்கோட்டது ஆயினும் யானை
வெரூஉம் புலிதாக் குறின். 599

உரமொருவற்கு உள்ள வெறுக்கை அஃதில்லார்
மரம்மக்க ளாதலே வேறு. 600

आलस्य रहितता
सुस्तीबिनु काम करने की महत्ता

601. प्रभारहित कुलदोप को, आलसमय तम घेर ।
दीप्तिहीन कर है उसे, करता शमित अँधेर ।।

602. निज कुल-गौरव-कामना, करते हैं जो लोग ।
करते हैं आलस्य का, विनाश ही वे लोग ।।

603. अहितकरी आलस्य का, जो बनता है दास ।
उसका विनाश पूर्व ही, होता कुल का नास ।।

604. जिसमें है आलस्य औ, निश्छल नहीं प्रयास ।
कुल-गौरव भी लुप्त हो, होते दोष-विकास ।।

605. निद्रा विलंब भूल औ, सुस्ती से युत लोग ।
जल में निमग्न नावगत, नरसम पाते शोक ।।

606. राजकीय धन सुस्त को पावें अपने आप ।
फिर भी उससे सुस्त को कोई खास न लाभ ।।

607. जो रहते हैं आलसी, किये विना हि प्रयास ।
वे दोस्तों के सामने, पाते हैं उपहास ।।

608. बनते कुलीन अगर हैं आलस्य के अधीन ।
तो वे होते शीघ्र ही, रिपु के हाथ अधीन ।।

609. जो आलस्य दोष का, बनता नहीं अधीन ।
पावें वही कुलीनता, नरता दोष विहीन ।।

610. तीनों पग से विष्णु ने, स्वयं बनाया व्याप्त ।
वैसे आलसहीन नृप, शासक हो भू-व्याप्त ।।

61. ABSTENATION FROM SLOTH

61. மடி இன்மை

குடியென்னும் குன்றா விளக்கம் மடியென்னும்
மாசூர மாய்ந்து கெடும். 601

மடியை மடியா ஒழுகல் குடியைக்
குடியாக வேண்டு பவர். 602

மடிமடிக் கொண்டொழுகும் பேதை பிறந்த
குடிமடியும் தன்னினும் முந்து. 603

குடிமடிந்து குற்றம் பெருகும் மடிமடிந்து
மாண்ட உஞற்றி லவர்க்கு. 604

நெடுநீர் மறவி மடிதுயில் நான்கும்
கெடுநீரார் காமக் கலன். 605

படியுடையார் பற்றமைந்தக் கண்ணும் மடியுடையார்
மாண்பயன் எய்தல் அரிது. 606

இடிபுரிந்து எள்ளுஞ்சொல் கேட்பர் மடிபுரிந்து
மாண்ட உஞற்றி லவர். 607

மடிமை குடிமைக்கண் தங்கின்தன் ஒன்னார்க்கு
அடிமை புகுத்தி விடும். 608

குடியாண்மை யுள்வந்த குற்றம் ஒருவன்
மடியாண்மை மாற்றக் கெடும். 609

மடியிலா மன்னவன் எய்தும் அடியளந்தான்
தாஅய தெல்லாம் ஒருங்கு. 610

प्रयत्नशीलता
लगातार परिश्रम से प्राप्त भलाई

611. यह करना दुस्साध्य है - मनो भाव यह छोड ।
कार्यसिद्धि में बलकरी, सिरफ यत्न बेजोड ।।

612. कर्तव्यहीन मनुज को, त्यागेगा संसार ।
इसीलिये हर कार्य में, निष्क्रियता परिहार ।।

613. लगातार जो यत्न में, रहता है तल्लीन ।
उसमें परोपकारगुण, होगा विदित हसीन ।।

614. यत्नहीन जो है वही, क्या करता उपकार ।
असि धारी यदि भीत हो, तो क्या होगा वार ।।

615. सुख में निमग्न हो, नहीं जो कृति में तल्लीन ।
स्थाणुसदृश वह नित रहें, बंधुशोकहर दीन ।।

616. प्रयास देगा भूप को, लगातार धनयोग ।
निष्क्रियता देगी उसे, निर्धनता का योग ।।

617. काली ज्येष्ठा निवसती, आलसयुत के पास ।
लक्ष्मी खुद है निवसती, यत्नवान के पास ।।

618. सत्य जानकर कार्य की रचना में कृत यत्न ।
यदि न सफल हो अपि तथा, दूषित नहीं प्रयत्न ।।

619. यदि विधि ही उल्टा रहें, तो भी करें प्रयास ।
फल पूरा यदि ना मिलें, व्यर्थ न देहायास ।।

620. बिनु आलस जो कार्य में, सयत्न है त्रुटिहीन ।
वह निज बाधक भाग्य को जीतेगा कालीन ।।

62. MANLY EFFORT

62. ஆள்வினை உடைமை

அருமை உடைத்தென்று அசாவாமை வேண்டும்
பெருமை முயற்சி தரும். 611

வினைக்கண் வினைகெடல் ஓம்பல் வினைக்குறை
தீர்ந்தாரின் தீர்ந்தன்று உலகு. 612

தாளாண்மை என்னுந் தகைமைக்கண் தங்கிற்றே
வேளாண்மை என்னுஞ் செருக்கு. 613

தாளாண்மை இல்லாதான் வேளாண்மை பேடிகை
வாளாண்மை போலக் கெடும். 614

இன்பம் விழையான் வினைவிழைவான் தன்கேளிர்
துன்பம் துடைத்தூன்றும் தூண். 615

முயற்சி திருவினை யாக்கும் முயற்றின்மை
இன்மை புகுத்தி விடும். 616

மடியுளாள் மாமுகடி என்ப மடியிலான்
தாளுளாள் தாமரையி னாள். 617

பொறியின்மை யார்க்கும் பழியன்று அறிவறிந்து
ஆள்வினை இன்மை பழி. 618

தெய்வத்தான் ஆகாது எனினும் முயற்சிதன்
மெய்வருத்தக் கூலி தரும். 619

ஊழையும் உப்பக்கம் காண்பர் உலைவின்றித்
தாழாது உஞற்று பவர். 620

दुख में भी आनन्दित रहना
संकट में विचलित न होना

621. दुख पडने पर फिक्र बिन, रहना है सानद ।
दुखहर औ कोई नहीं, केवल वह आनद ।।

622. बाढ़-सदृश है शोकदुख, होते बारंबार ।
उनको मन में सुख समझ, बुध नहि शोकशिकार ।।

623. संकट में भी जो सदा, बनते नहीं विषन्न ।
वे चुकते हैं काम कर, दुख का दुख उत्पन्न ।।

624. बैल शकट में बद्ध हो, जाता है गन्तव्य ।
शोक दूर करना यथा, सयत्न को मन्तव्य ।।

625. लगातार दुख आ पड़ें तो भी जो धृतिमान ।
संकट पाकर भी उसे, खुद दुखता नहि आन ।।

626. धन पाकर भी जो नही, रहते हैं सन्तुष्ट ।
धन खोकर भी वे सदा, रहते नहीं अतुष्ट ।।

627. दुख का निवास देह है, ऐसा सोच विचार ।
करके ज्ञानी शोक में, न करें व्यथिताचार ।।

628. सुख का इच्छुक हो नहीं, दुख पाना विधि-कर्म ।
ऐसे विचारशलील को, कोई नहि दुखकर्म ।।

629. सुख में सुख की कामना, करते नहि जो लोग ।
दुख में भी संतापको, नहि पाते वे लोग ।।

630. जिसको लगता शोक भी, है सुख हर्ष समान ।
उसको मिलता शत्रु से, हैं भी शंसित मान ।।

63. COURAGE IN THE HOUR OF GLOOM

63. இடுக்கண் அழியாமை

இடுக்கண் வருங்கால் நகுக அதனை
அடுத்தூர்வது அஃதொப்பது இல். 621

வெள்ளத் தனைய இடும்பை அறிவுடையான்
உள்ளத்தின் உள்ளக் கெடும். 622

இடும்பைக்கு இடும்பை படுப்பர் இடும்பைக்கு
இடும்பை படாஅ தவர். 623

மடுத்தவா யெல்லாம் பகடன்னான் உற்ற
இடுக்கண் இடர்ப்பாடு உடைத்து. 624

அடுக்கி வரினும் அழிவிலான் உற்ற
இடுக்கண் இடுக்கட் படும். 625

அற்றேமென்று அல்லற் படுபவோ பெற்றேமென்று
ஓம்புதல் தேற்றா தவர். 626

இலக்கம் உடம்பிடும்பைக் கென்று கலக்கத்தைக்
கையாறாக் கொள்ளாதாம் மேல். 627

இன்பம் விழையான் இடும்பை இயல்பென்பான்
துன்பம் உறுதல் இலன். 628

இன்பத்துள் இன்பம் விழையாதான் துன்பத்துள்
துன்பம் உறுதல் இலன். 629

இன்னாமை இன்பம் எனக்கொளின் ஆகுந்தன்
ஒன்னார் விழையுஞ் சிறப்பு. 630

मंत्रियों की योग्यता के बारे में बताना

631. सैन्य समय साधन तथा दुष्कर कार्योपाय ।
इनका विमर्श जो करें, वही सचिव कहलाय ।।

632. श्रेष्ठ सचिव है नित वही, जिसमें हो दृढभाव ।
यत्नशीलता, चतुरता, विद्या कुलीन-भाव ।।

633. जिसमें पालन मित्र का, शत्रु भेद का ज्ञान ।
औ बिछुडे का संमिलन, वही सचिव तू जान ।।

634. निर्वाचिन शुभ कृत्य का, कृत्यकरण जयपूर्ण ।
जिसमें कहना सोच है, वही सचिव संपूर्ण ।।

635. धर्म जान जो, बुद्धियुत, करता है पटु बात ।
औ कृति साधक है वही सचिव जगत में ख्यात ।।

636. जो मंत्री है सहज औ रखें किताबी ज्ञान ।
उसके संमुख शत्रु की, छलकृति निरर्थवान ।।

637. कृति नय के अनुसार ही, करना नहि पर्याप्त ।
देश काल गति जानकर, करना है पर्याप्त ।।

638. निजकृति परमति रहित जो, रहता शाहंशाह ।
प्रथम फर्ज है सचिव का, देना उसे सलाह ।।

639. सत्तर करोड शत्रु से कौन करे बहु हानि ।
अहित सोचकर साथ रह, सचिव करें बहु हानि ।।

640. जो मंत्री समर्थ नहीं, सोचें वे बहु बार ।
फिर भी निजकृत कार्य को रचते हैं बेकार ।।

64. THE MINISTER OF THE STATE

64. அமைச்சு

கருவியும் காலமும் செய்கையும் செய்யும்
அருவினையும் மாண்டது அமைச்சு. 631

வன்கண் குடிகாத்தல் கற்றறிதல் ஆள்வினையோடு
ஐந்துடன் மாண்டது அமைச்சு. 632

பிரித்தலும் பேணிக் கொளலும் பிரிந்தார்ப்
பொருத்தலும் வல்லது அமைச்சு. 633

தெரிதலும் தேர்ந்து செயலும் ஒருதலையாச்
சொல்லலும் வல்லது அமைச்சு. 634

அறனறிந்து ஆன்றமைந்த சொல்லான்எஞ் ஞான்றும்
திறனறிந்தான் தேர்ச்சித் துணை. 635

மதிநுட்பம் நூலோடு உடையார்க்கு அதிநுட்பம்
யாஉள முன்னிற் பவை. 636

செயற்கை அறிந்தக் கடைத்தும் உலகத்து
இயற்கை அறிந்து செயல். 637

அறிகொன்று அறியான் எனினும் உறுதி
உழையிருந்தான் கூறல் கடன். 638

பழுதெண்ணும் மந்திரியின் பக்கத்துள் தெவ்வோர்
எழுபது கோடி உறும். 639

முறைப்படச் சூழ்ந்தும் முடிவிலவே செய்வர்
திறப்பாடு இலாஅ தவர். 640

वाक्पटुता

श्रोता के मन को आकर्षित करनेवाला भाषण

641. वाक्पटुता सबसे बडी, संस्कृति मानी जाय ।
वाक्पटुता ही सचिव को, अनुपम गुण ठहराय ।।

642. वक्ता के वच-जालसे, होते हैं हित-कष्ट ।
इसीलिए वाक्मित्व का, पालन करना इष्ट ।।

643. श्रोता के मन मुग्ध कर जो रव हैं वे वाक ।
अश्रोता को श्रवण का, अर्हनाद ही वाक ।।

644. श्रोतृवक्तृ गुण जानकर, करना शब्द प्रयोग ।
ऐसे प्रयोग से सुकृत, पावें औ धन-योग ।।

645. अगर विवक्षा जाय हो, तो ऐसा वच बोल ।
जो औरों के वचन से, अजेय हो अनमोल ।।

646. पर मन के अनुकूल वच, कहकर पर-वच भाव ।
अवगत करना सचिव का, रहे लक्ष्य का भाव ।।

647. वाक्मी विस्मृतिहीन जो, रहता नहि भयभीत ।
कोई भी उसको कभी, कर सकता नहि जीत ।।

648. उचित रीति से मधुरयुत जो करता है बात ।
उसका वच जग मानता, मर्यादा के साथ ।।

649. त्रुटि बिन जो थोडा वचन कहने में असमर्थ ।
वे कहना हैं चाहते, बहुत वचन बिनु अर्थ ।।

650. स्वार्जित विद्या अन्य को देने जो नहि योग्य ।
सुन्दर पुष्पित फूलसम वे हैं गंधायोग्य ।।

65. சொல்வன்மை

நாநலம் என்னும் நலனுடைமை அந்நலம்
யாநலத்து உள்ளதூஉம் அன்று. 641

ஆக்கமும் கேடும் அதனால் வருதலால்
காத்தோம்பல் சொல்லின்கண் சோர்வு. 642

கேட்டார்ப் பிணிக்குந் தகையவாய்க் கேளாரும்
வேட்ப மொழிவதாம் சொல். 643

திறனறிந்து சொல்லுக சொல்லை அறனும்
பொருளும் அதனினூஉங்கு இல். 644

சொல்லுக சொல்லைப் பிறிதோர்சொல் அச்சொல்லை
வெல்லுஞ்சொல் இன்மை அறிந்து. 645

வேட்பத்தாம் சொல்லிப் பிறர்சொல் பயன்கோடல்
மாட்சியின் மாசற்றார் கோள். 646

சொலல்வல்லன் சோர்விலன் அஞ்சான் அவனை
இகல்வெல்லல் யார்க்கும் அரிது. 647

விரைந்து தொழில்கேட்கும் ஞாலம் நிரந்தினிது
சொல்லுதல் வல்லார்ப் பெறின். 648

பலசொல்லக் காமுறுவர் மன்ற மாசற்ற
சிலசொல்லல் தேற்றா தவர். 649

இணரூழ்த்தும் நாறா மலரனையர் கற்றது
உணர விரித்துரையா தார். 650

कर्म की पवित्रता

कृत सब कर्म अच्छे हो जाय

651. अन्यों के साहाय्य से मिलता केवल अर्थ ।
किन्तु कर्म की शुद्धि से, सब सुछ वांछित अर्थ ।।

652. यशकर तथैव पुंण्यकर, इह पर जो है कर्म ।
नित मंत्री को चाहिए. करना वहीं सुकर्म ।।

653. जो चाहे उन्नति सदा, वह न करेंसो काम ।
मिलने की संभावना, जिससे हो बदनाम ।।

654. आ 'पड़ने पर शोक भी, निर्मल विवेकशील ।
शोक मिटाने हैं नहीं, बनते कुकर्मशील ।।

655. ज़ो है पछतावाकरी कभी न वह करणीय ।
अगर भूल से रचित हो, कभी न फिर करणीय ।।

656. भूख मिटाने मातृ की, जो जन नहीं समर्थ ।
तब, भी वह काम न करें, सदैव गर्हित अर्थ ।।

657. करके पापाचार भी, जो धन है संप्राप्त ।
उससे बढकर विज्ञ का, अभाव गुरुताप्राप्त ।।

658. बुध से दूषित कार्य भी, करके हो फलवान ।
तो भी कृति के अंत में, होगा शोक महान ।।

659. पर-पीडन से प्राप्त धन, खुद दुखकर मिट जाय ।
पुण्यलब्ध धन नष्ट हो फिर भी खुद मिल जाय ।।

660 धन का अर्जन कपट से, तथैव पालन कार्यं ।
कच्चे घट में जल यथा, भर देने का कार्यं ।।

66. PURITY OF ACTION

66. வினைத்தூய்மை

துணைநலம் ஆக்கம் தரூஉம் வினைநலம்
வேண்டிய எல்லாம் தரும். 651

என்றும் ஒருவுதல் வேண்டும் புகழொடு
நன்றி பயவா வினை. 652

ஓஒதல் வேண்டும் ஒளிமாழ்கும் செய்வினை
ஆஅதும் என்னு மவர். 653

இடுக்கண் படினும் இளிவந்த செய்யார்
நடுக்கற்ற காட்சி யவர். 654

எற்றென்று இரங்குவ செய்யற்க செய்வானேல்
மற்றன்ன செய்யாமை நன்று. 655

ஈன்றாள் பசிகாண்பான் ஆயினும் செய்யற்க
சான்றோர் பழிக்கும் வினை. 656

பழிமலைந்து எய்திய ஆக்கத்தின் சான்றோர்
கழிநல் குரவே தலை. 657

கடிந்த கடிந்தொரார் செய்தார்க்கு அவைதாம்
முடிந்தாலும் பீழை தரும். 658

அழக்கொண்ட எல்லாம் அழப்போம் இழப்பினும்
பிற்பயக்கும் நற்பா லவை. 659

சலத்தால் பொருள்செய்தே மார்த்தல் பசுமண்
கலத்துள்நீர் பெய்திரீஇ யற்று. 660

क्रिया में दृढ़ता

कर्मशील को मनोदृढ़ता जरूरी है

661. दिल की दृढ़ता है वही, जो कृति में स्थिर भाव ।
सैन्य दुर्ग से चित्त में, नहि होता दृढ भाव ।।

662. निन्दित कृति को छोडना, अघ करना पड जाय ।
तो भी दृढता छोडना, नही यही बुध-राय ।।

663. दृढ़ता उस कृति में निहित, जो आखिर में व्यक्त ।
वही काम है दुखकरी, जो मध्यम में व्यक्त ।।

664. यह कृति यों करणीय है, यों कहना आसान ।
कथनी के अनुसार ही, करना नहि आसान ।।

665. कुशल कार्ययुत सचिव का, जो है दृढता-भाव ।
वह सब से महनीय औ, रखता नृपयश भाव ।।

666 कार्यार्थी नित हैं करम, करने में दृढचित्त ।
इच्छित फल-अनुसार वे, होंगे सफलीचित्त ।।

667. धुरा-सदृश गुरु लोग हैं, रखते स्थिरता भाव ।
कारण दृढता श्रेय का, बृहत न आकृति भाव ।।

668. भीत न होकर धैर्य से, फल की इच्छायुक्त ।
आलस तजकर समय पर, कार्यकरण में युक्त ।।

669. अगर देह का क्लेश हो, फिर भी हो दृढचित्त ।
अंत भला ही समझकर सफल रहो कृतिचित्त ।।

670. नर से पूजित है वही, जो हो सुकर्मशील ।
विषय सभी में सर्वदा, औ होते दृढ़शील ।।

67. வினைத்திட்பம்

வினைத்திட்பம் என்பது ஒருவன் மனத்திட்பம்
மற்றைய எல்லாம் பிற. 661

ஊறொரால் உற்றபின் ஒல்காமை இவ்விரண்டின்
ஆறென்பர் ஆய்ந்தவர் கோள். 662

கடைக்கொட்கச் செய்தக்க தாண்மை இடைக்கொட்கின்
எற்றா விழுமந் தரும். 663

சொல்லுதல் யார்க்கும் எளிய அரியவாம்
சொல்லிய வண்ணம் செயல். 664

வீறெய்தி மாண்டார் வினைத்திட்பம் வேந்தன்கண்
ஊறெய்தி உள்ளப் படும். 665

எண்ணிய எண்ணியாங்கு எய்துப எண்ணியார்
திண்ணிய ராகப் பெறின். 666

உருவுகண்டு எள்ளாமை வேண்டும் உருள்பெருந்தேர்க்கு
அச்சாணி அன்னார் உடைத்து. 667

கலங்காது கண்ட வினைக்கண் துளங்காது
தூக்கங் கடிந்து செயல். 668

துன்பம் உறவரினும் செய்க துணிவாற்றி
இன்பம் பயக்கும் வினை. 669

எனைத்திட்பம் எய்தியக் கண்ணும் வினைத்திட்பம்
வேண்டாரை வேண்டாது உலகு. 670

काम करने की पद्धति

सफलता के साथ काम करने की रीति

671. यह कृति अनिवार्य है, यों निश्चित कर काम ।
आलस तज लो, अन्यथा, हो दुख ,नहि आराम ।।

672. जो करना है देर से, करना वही विलम्ब ।
जो नहि करना देर से, सो कर लो अविलम्ब ।।

673. अवसर मिलता जब कभी, तब कर पूरा काम ।
नहि तो जो हो साध्यकृति, पूरा कर वह काम ।।

674. कर्म अधूरा युद्ध में, बचा हुआ रणवीर ।
दोनों स्फुलिंग शेषसम, करें हानि औ चीर ।।

675. द्रव्य काल कृति करण थल, जब होते अनुकूल ।
सोच समझकर तब करम कर नहि हो प्रतिकूल ।।

676. यत्न विघ्न परिणाम ही, सम्यक सोचा जाय ।
फिर ही कार्यकलाप में लगन दिखायी जाय ।।

677. धंधे का सच हाल औ, उद्योगी का हाल ।
खूब जानकर कर्म में, लगना मालामाल ।।

678. परिचित गज से और गज, जैसा पकडा जाय ।
वैसे इककृति से अपर, कार्य-पूर्ति हो जाय ।।

679. मित्र-मदद नहि मुख्य है, यह फिर देखा जाय ।
पहले रिपु के मित्र को, वशी किया ही जाय ।।

680. आश्रित जन को भयरहित, रहने नर बलहीन ।
दोस्ती करले मनुज से, ताकत से स्वाधीन ।।

68. வினைசெயல்வகை

சூழ்ச்சி முடிவு துணிவெய்தல் அத்துணிவு
தாழ்ச்சியுள் தங்குதல் தீது. 671

தூங்குக தூங்கிச் செயற்பால தூங்கற்க
தூங்காது செய்யும் வினை. 672

ஒல்லும்வா யெல்லாம் வினைநன்றே ஒல்லாக்கால்
செல்லும்வாய் நோக்கிச் செயல். 673

வினைபகை என்றிரண்டின் எச்சம் நினையுங்கால்
தீயெச்சம் போலத் தெறும். 674

பொருள்கருவி காலம் வினையிடனொடு ஐந்தும்
இருள்தீர எண்ணிச் செயல். 675

முடிவும் இடையூறும் முற்றியாங்கு எய்தும்
படுபயனும் பார்த்துச் செயல். 676

செய்வினை செய்வான் செயல்முறை அவ்வினை
உள்ளறிவான் உள்ளம் கொளல். 677

வினையால் வினையாக்கிக் கோடல் நனைகவுள்
யானையால் யானையாத் தற்று. 678

நட்டார்க்கு நல்ல செயலின் விரைந்ததே
ஒட்டாரை ஒட்டிக் கொளல். 679

உறைசிறியார் உள்நடுங்கல் அஞ்சிக் குறைபெறின்
கொள்வர் பெரியாரப் பணிந்து. 680

दूत व्यक्ति - एक नृप से दूसरे नृप के साथ दौत्य कर्मकरनेवाले का स्वभाव

681. दूत वही है जो रखें, बंधुनेह का भाव ।
कुलीनता औ भूप से, वांछित सुशील भाव ।।

682. तीन शील हैं दूत के, ऋजुतासमेत ज्ञान ।
वाक्य कथन की निपुणता, औरनेहप्रधान ।।

683. सूचक गुण हैं दूत के, निज नृप जय की युक्ति ।
कहना पर दरबार में नयविद-पटुता-उक्ति ।।

684. स्वाभाविक मति रूप औ, सखोज विद्या तीन ।
जिसमें हैं वह दूतकृति कर सकता शक्हीन ।।

685. वही दूत है जो तजें, अनुपयुक्त पदजाल ।
नायक का हो हितकरी, कहें सुखद पदजाल ।।

686. समयोचित मतिमान औ, नीतिमान धृतिमान ।
वक्ता जो निर्भीक है, वह है दूत सुजान ।।

687. देश काल कर्तव्य का; विचार कर जो बात ।
करता है पटु खोज से, दूत वही है ज्ञात ।।

688. सदाचार उपकारिता, औ धृति से जो युक्त ।
दूत शब्द से जगत में, वह है सदा प्रयुक्त ।।

689. प्रमाद से अपशब्द भी, जो न कहें रिपु-बीच ।
योग्य दूत वह बोलता, और भूप के बीच ।।

690. शायद निज ही निधन हो, तब भी हो नहि भीत ।
औ नृपहितवादी बनें, वही दूत निर्णीत ।।

69. THE AMBASSADOR

69. தூது

அன்புடைமை ஆன்ற குடிப்பிறத்தல் வேந்தவாம்
பண்புடைமை தூதுரைப்பான் பண்பு. 681

அன்பறிவு ஆராய்ந்த சொல்வன்மை தூதுரைப்பார்க்கு
இன்றி யமையாத மூன்று. 682

நூலாருள் நூல்வல்லன் ஆகுதல் வேலாருள்
வென்றி வினையுரைப்பான் பண்பு. 683

அறிவுரு ஆராய்ந்த கல்விஇம் மூன்றன்
செறிவுடையான் செல்க வினைக்கு. 684

தொகச்சொல்லித் தூவாத நீக்கி நகச்சொல்லி
நன்றி பயப்பதாம் தூது. 685

கற்றுக்கண் அஞ்சான் செலச்சொல்லிக் காலத்தால்
தக்கது அறிவதாம் தூது. 686

கடனறிந்து காலம் கருதி இடனறிந்து
எண்ணி உரைப்பான் தலை. 687

தூய்மை துணைமை துணிவுடைமை இம்மூன்றின்
வாய்மை வழியுரைப்பான் பண்பு. 688

விடுமாற்றம் வேந்தர்க்கு உரைப்பான் வடுமாற்றம்
வாய்சோரா வன்க ணவன். 689

இறுதி பயப்பினும் எஞ்சாது இறைவற்கு
உறுதி பயப்பதாம் தூது. 690

भूप से समुचित व्यवहार
राजा से मिलजुलकर जीने का तरीका

691. राजाश्रित नर भूप के, निकट-दूर नहि जाय ।
शैत्यनिवारण केलिये, शुचि में नहि घुस जाय ।।

692. राजाश्रित नर भूप की लषित चीज पर चाह ।
रखें न तो हो भूप से, दत्तविभव की राह ।।

693. निज पालन चाहे अगर, तो हो नृपरिसमुक्त ।
करना संभव भी नहीं, नृप को शक से मुक्त ।।

694. राजदृष्टि पडते समय, पर से रहस्य बात ।
करो औरतुम छोड दो, हास्य वचन की बात ।।

695. यदि नृप रहस्य बोलता, तो न सुनो तुम गौर ।
करो न सवाल नृप कहें, खुद तो सुन लो गौर ।।

696. समय-इशारा भूप के, जानों फिर घृणहीन ।
बात कहों मनचाह पर, उससे तुम शौकीन ।।

697. विन पूछें नित भूपसे, कर लें सार्थक बात ।
पूछें तो भी भूप से, न कहें निरर्थक बात ।।

698. भूप बंधु है ज्येष्ठ नहि, यों कहकर अपमान ।
कभी नहीं कर लें सदा, दें समुचित पद-मान ।।

699. नृप से पूजित समझकर, निश्छल विवेकवान ।
नृप का अनिष्ट कार्य भी, न करें सचिव सुजान ।।

700. हम परिचित हैं भूप के, यों कह दर्पसमेत ।
करने का हक दुष्करम, होगा शोकसमेत ।।

70. CONDUCT AND SERVICE UNDER THE SOVEREIGN

70. மன்னரைச் சேர்ந்தொழுகல்

அகலாது அணுகாது தீக்காய்வார் போல்க
இகல்வேந்தர்ச் சேர்ந்தொழுகு வார். 691

மன்னர் விழைப விழையாமை மன்னரான்
மன்னிய ஆக்கம் தரும். 692

போற்றின் அரியவை போற்றல் கடுத்தபின்
தேற்றுதல் யார்க்கும் அரிது. 693

செவிச்சொல்லும் சேர்ந்த நகையும் அவித்தொழுகல்
ஆன்ற பெரியா ரகத்து. 694

எப்பொருளும் ஓரார் தொடரார்மற் றப்பொருளை
விட்டக்கால் கேட்க மறை. 695

குறிப்பறிந்து காலம் கருதி வெறுப்பில
வேண்டுப வேட்பச் சொலல். 696

வேட்பன சொல்லி வினையில எஞ்ஞான்றும்
கேட்பினும் சொல்லா விடல். 697

இளையர் இனமுறையர் என்றிகழார் நின்ற
ஒளியோடு ஒழுகப் படும். 698

கொளப்பட்டேம் என்றெண்ணிக் கொள்ளாத செய்யார்
துளக்கற்ற காட்சி யவர். 699

பழையம் எனக்கருதிப் பண்பல்ல செய்யும்
கெழுதகைமை கேடு தரும். 700

इंगित बोध
संकेत से मनोगत भाव जानना

701. आशय जानें बिन कहे, जो लख मुख का भाव ।
होगा वह नित जगत का, गहना महानुभाव ।।

702. जो मुख के संकेत से, आशय निःसंदेह ।
जाने वह सुरतुल्य हो, यदपि धरें नरदेह ।।

703. जानें मुख की चाल से, जो पर मन का भाव ।
अपने वश में कर उसे, देकर धनादिभाव ।।

704. कहे बिना संकेत से, जो जानें पर-भाव ।
वे परसम हैं रूप में, मति में नहि समभाव ।।

705. जो मुखादि संकेत से, ना जानें पर-भाव ।
उसकी आखें व्यर्थ है, यदपि धरें दृगभाव ।।

706. ज्यों दर्शाता हैं स्फटिक, वस्तु वर्ण के भेद ।
त्यो दर्शाता वदन हैं, मनोभाव के भेद ।।

707. द्वेष राग की सूचना, करता है मुख-रूप ।
दुनिया में धिषणासहित, और न वदनसरूप ।।

708. इंगितविद के सामने, कहना है बेकार ।
इंगितविद मुखभाव से जानें शोकाधार ।।

709. दिखलायेंगे दृग हमें, वैर राग का भाव ।
इंगितविद से भूप सब, जानें सदसद भाव ।।

710. जो दृग से हो जानता, पर के मन की राय ।
अन्य भावविद बोलने वही योग्य कहलाय ।।

71. DIVINING THE SOVERIGN'S MIND

71. குறிப்பறிதல்

கூறாமை நோக்கிக் குறிப்பறிவான் எஞ்ஞான்றும்
மாறாநீர் வையக்கு அணி. 701

ஐயப் படாஅது அகத்தது உணர்வானைத்
தெய்வத்தோ டொப்பக் கொளல். 702

குறிப்பிற் குறிப்புணர் வாரை உறுப்பினுள்
யாது கொடுத்துங் கொளல். 703

குறித்தது கூறாமைக் கொள்வாரோ டேனை
உறுப்போ ரனையரால் வேறு. 704

குறிப்பிற் குறிப்புணரா வாயின் உறுப்பினுள்
என்ன பயத்தவோ கண். 705

அடுத்தது காட்டும் பளிங்குபோல் நெஞ்சம்
கடுத்தது காட்டும் முகம். 706

முகத்தின் முதுக்குறைந்தது உண்டோ உவப்பினும்
காயினும் தான்முந் துறும். 707

முகம்நோக்கி நிற்க அமையும் அகம்நோக்கி
உற்ற துணர்வார்ப் பெறின். 708

பகைமையுங் கேண்மையும் கண்ணுரைக்கும் கண்ணின்
வகைமை உணர்வார்ப் பெறின். 709

நுண்ணியம் என்பார் அளக்குங்கோல் காணுங்கால்
கண்ணல்லது இல்லை பிற. 710

संकेत से मनोगत भाव जानना

711. सभालक्ष्य को जानकर, और समझ कथनीय ।
शब्दजालविद भीड में बोलें विचारणीय ।।

712. अर्थ शब्द के दोष तज, सदस्य की रुचि जान ।
प्रयोग कर औ शब्द का, शब्द-रीति भी जान ।।

713. सदस्य-रुचि जाने बिना, जो वक्ता बन जाय ।
वे पटुवक्ता ही नहीं, अपढ कहाया जाय।।

714. दर्शाओं पाण्डित्य निज, पण्डितगोष्ठीमध्य ।
रहो चूनसम मौन हो, अनपढ-गोष्ठीमध्य ।।

715. ज्ञानी भाषन पूर्व से, निजभाषण बुधमध्य ।
नहि दे रहना विनय से, उत्तम गुण नहि मध्य ।।

716. दुर्वच का उपयोग जो, करता है बुध-बीच ।
मुक्तिमार्ग से भ्रष्टसम, ज्ञात वही है नीच ।।

717. शब्द तत्व औं खोज में प्रवीण जन के पास ।
शास्त्र निपुण का ज्ञान ही, पाता खूब प्रकाश ।।

718. आगे बढते खेत में, पानीसींचसमान ।
अर्थविदों के सामने, बुध-भाषण गुणवान।।।

719. सूक्ष्म कथन में चतुर जो, है प्राज्ञों के बीच ।
प्रमाद से भाषण न दें, वह मूर्खो के बीच ।।

720. गंदे आंगन में अमृत, बिखरे हुए समान ।
ज्ञानी भाषण मूर्ख के, बीच न विराजमान ।।

72. FEELING THE PULSE OF THE KING'S COUNCIL CHAMBER

72. அவை அறிதல்

அவையறிந்து ஆராய்ந்து சொல்லுக சொல்லின்
தொகையறிந்த தூய்மை யவர். 711

இடைதெரிந்து நன்குணர்ந்து சொல்லுக சொல்லின்
நடைதெரிந்த நன்மை யவர். 712

அவையறியார் சொல்லல்மேற் கொள்பவர் சொல்லின்
வகையறியார் வல்லதூஉம் இல். 713

ஒளியார்முன் ஒள்ளிய ராதல் வெளியார்முன்
வான்சுதை வண்ணம் கொளல். 714

நன்றென்ற வற்றுள்ளும் நன்றே முதுவருள்
முந்து கிளவாச் செறிவு. 715

ஆற்றின் நிலைதளர்ந் தற்றே வியன்புலம்
ஏற்றுணர்வார் முன்னர் இழுக்கு. 716

கற்றறிந்தார் கல்வி விளங்கும் கசடறச்
சொல்தெரிதல் வல்லார் அகத்து. 717

உணர்வது உடையார்முன் சொல்லல் வளர்வதன்
பாத்தியுள் நீர்சொரிந் தற்று. 718

புல்லவையுள் பொச்சாந்தும் சொல்லற்க நல்லவையுள்
நன்கு செலச்சொல்லு வார். 719

அங்கணத்துள் உக்க அமிழ்தற்றால் தங்கணத்தர்
அல்லார்முன் கோட்டி கொளல். 720

सभा कंपविहीनता
सभा में डरे बिना भाषण-रीति

721. शब्द रूप औ भीड की, गति-विधि-वेत्ता लोग ।
थककर भी करते नहीं, दुर्वच का उपयोग ।।
722. सबसे पटु बुध है वही, जो खुद विषय अधीत ।
स्पष्ट कहें बुध मध्य में, श्लाध्य और निर्णीत ।।
723. प्राण छोडने युद्ध में, उद्यत हैं बहु लोग ।
संसद में हैं भयरहित, भाषणपटु कम लोग ।।
724. सीखी बातें समिति में, स्पष्ट बतायी जाय ।
गुरू बुध से अविदित विषय, खुद ही सीखा जाय ।।
725. सीखे शाब्दिक ज्ञान फिर, सीखें आर्थिक बात ।
सभाकंप बिन सुगम हो, समाधान की बात ।।
726. अधीर की तलवार से रण में क्या है लाभ ।
सभाकंपयुत मनुज को, पोथी से क्या लाभ ।।
727. हिजडों की तलवार ज्यों, होती है बेकार ।
सभा-भीरू का ज्ञान त्यों, बनता है बेकार ।।
728. सभात्रस्त यदि स्पष्ट जो, व्यक्त न करता भाव ।
तो उसको विद्या सभी, बनती विफली भाव ।।
729. साक्षर जो यदि बोलने डरता पण्डित-बीच ।
तो वह अनपढ मनुज से समझा जाता नीच ।।
730. सभाकंपयुत कथन में, पटु नहि जो धीमान ।
वे जीवित भी जगत में, हैं निर्जीवसमान ।।

73. அவை அஞ்சாமை

*வகையறிந்து வல்லவை வாய்சோரார் சொல்லின்
தொகையறிந்த தூய்மை யவர்.* 721

*கற்றாருள் கற்றார் எனப்படுவர் கற்றார்முன்
கற்ற செலச்சொல்லு வார்.* 722

*பகையகத்துச் சாவார் எளியர் அரியர்
அவையகத்து அஞ்சா தவர்.* 723

*கற்றார்முன் கற்ற செலச்சொல்லித் தாம்கற்ற
மிக்காருள் மிக்க கொளல்.* 724

*ஆற்றின் அளவறிந்து கற்க அவையஞ்சா
மாற்றம் கொடுத்தற் பொருட்டு.* 725

*வாளொடென் வன்கண்ணர் அல்லார்க்கு நூலொடென்
நுண்ணவை அஞ்சு பவர்க்கு.* 726

*பகையகத்துப் பேடிகை ஒள்வாள் அவையகத்து
அஞ்சு மவன்கற்ற நூல்.* 727

*பல்லவை கற்றும் பயமிலரே நல்லவையுள்
நன்கு செலச்சொல்லா தார்.* 728

*கல்லா தவரின் கடையென்ப கற்றறிந்தும்
நல்லார் அவையஞ்சு வார்.* 729

*உளரெனினும் இல்லாரொடு ஒப்பர் களன்அஞ்சிக்
கற்ற செலச்சொல்லா தார்.* 730

राष्ट्र

राष्ट्र की बनावट

731. राष्ट्र वही है हो जहाँ, क्षयविहीन बहु धान ।
पटु जन मिलकर ठहरते, क्षयविहीन धनवान ।।

732. राष्ट्र वही है जो सदा, देता है अतिधान ।
औ सब से ही श्लाघ्य हो, नहि हो विनाशवान ।।

733. राष्ट्र वही है जो धरें अन्य जनों का भार ।
माल उपज कर भूप को कर लें कर उपहार ।।

734. अमिट भूख नहि है जहाँ, और न अजस्र रोग ।
रिपु-हमला भी नहि वहाँ, करें "राष्ट्र" - उपयोग।।

735. विभिन्न दल से युक्त नहि, जो नहि रिपुतायुक्त ।
खूनी नृप गणयुक्त नहि, वही राष्ट्र है उक्त ।।

736. अति उत्तम है राष्ट्र वह, जो रिपु से क्षयहीन ।
रिपु से क्षय हो अगर तो, भी नहि उपजविहीन ।।

737. अंग राष्ट्र के उक्त हैं, निर्झर औ तालाब। ।
सुदृढ किला, गिरि शैल से, निर्गम सरिता-आप ।।

738. भूषणमय हैं राष्ट्र के, अरोगता धन-भाव ।
उपज वृद्धि सुख-ज़िंदगी, दुर्ग व शत्रु-बचाव ।।

739. सधान्य हो जो सहज से, श्रेष्ठ वही है राष्ट्र ।
सधान्य हो जो यत्न से, श्रेष्ठ नहीं वह राष्ट्र ।।

740. प्रजा-भूप के बीच में अगर नहीं सौजन्य ।
उक्तशीलयुत राष्ट्र तो, कभी नहीं है धन्य ।।

74. நாடு

தள்ளா விளையுளும் தக்காரும் தாழ்விலாச்
செல்வரும் சேர்வது நாடு. 731

பெரும்பொருளால் பெட்டக்க தாகி அருங்கேட்டான்
ஆற்ற விளைவது நாடு. 732

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு. 733

உறுபசியும் ஓவாப் பிணியும் செறுபகையும்
சேரா தியல்வது நாடு. 734

பல்குழுவும் பாழ்செய்யும் உட்பகையும் வேந்தலைக்கும்
கொல்குறும்பும் இல்லது நாடு. 735

கேடறியாக் கெட்ட விடத்தும் வளங்குன்றா
நாடென்ப நாட்டின் தலை. 736

இருபுனலும் வாய்ந்த மலையும் வருபுனலும்
வல்லரணும் நாட்டிற்கு உறுப்பு. 737

பிணியின்மை செல்வம் விளைவின்பம் ஏமம்
அணியென்ப நாட்டிற்கிவ் வைந்து. 738

நாடென்ப நாடா வளத்தன நாடல்ல
நாட வளந்தரு நாடு. 739

ஆங்கமை வெய்தியக் கண்ணும் பயமின்றே
வேந்தமை வில்லாத நாடு. 740

किला

देश की सुरक्षा का स्थल

741. युयुत्सु भूपों के लिए, मददगार है दुर्ग ।
शरणार्थी जन के लिए, पालनघर है दुर्ग ॥

742. जो जल औ मरूभूमि से, आवृत, हो वह दुर्ग ।
औ जिसमें गिरि, अधिक हो, छाहदार वनदुर्ग ॥

743. ग्रंथकार की राय है गढ़ के गुण हैं चार ।
चौडा ऊँचा दृढ तथा, रिपु को दुर्गाकार ॥

744. वही दुर्ग है जो रखें, रक्ष्य जगह अविशाल ।
शेष जगह विस्तृतमयी, निरुत्साह रिपु-हाल ॥

745. वही किला हैशत्रु से, गम्य न मालामाल ॥
जो हो बसने के लिए, उचित ससुख चिरकाल ॥

746. माल सभी से युक्त हो, जब हो शत्रु-अपाय ।
तब जो पालित सैन्य से, वही दुर्ग कहलाय ॥

747. हमला कर या युद्ध कर, अथवा कर छलजात ।
वशीभूत जो थल नहीं, वही दुर्ग है ज्ञात ॥

748. हमला होते समय भी, जहाँ नहीं कर भाग ।
रिपुहर लडता सैन्य हो, वह गढ का विभु भाग ॥

749. अन्दर रह रिपु सैन्य पर, भट पाते हैं जीत ।
ऐसी जयकर भूमि ही गढ़पद से निर्णीत ॥

750. पूर्व कथित गुणयुक्त भी, तब हो गढ़ बेकार ।
जब रणपटु करते नहीं, सैनिक कारोबार ॥

75. அரண்

ஆற்று பவர்க்கும் அரண்பொருள் அஞ்சித்தற்
போற்று பவர்க்கும் பொருள். 741

மணிநீரும் மண்ணும் மலையும் அணிநிழல்
காடும் உடையது அரண். 742

உயர்வகலம் திண்மை அருமைஇந் நான்கின்
அமைவரண் என்றுரைக்கும் நூல். 743

சிறுகாப்பிற் பேரிடத்த தாகி உறுபகை
ஊக்கம் அழிப்பது அரண். 744

கொளற்கரிதாய்க் கொண்டகூழ்த் தாகி அகத்தார்
நிலைக்கெளிதாம் நீரது அரண். 745

எல்லாப் பொருளும் உடைத்தாய் இடத்துதவும்
நல்லாள் உடையது அரண். 746

முற்றியும் முற்றா தெறிந்தும் அறைப்படுத்தும்
பற்றற் கரியது அரண். 747

முற்றாற்றி முற்றி யவரையும் பற்றாற்றிப்
பற்றியார் வெல்வது அரண். 748

முனைமுகத்து மாற்றலர் சாய வினைமுகத்து
வீறெய்தி மாண்டது அரண். 749

எனைமாட்சித் தாகியக் கண்ணும் வினைமாட்சி
இல்லார்கண் இல்லது அரண். 750

धनार्जन की रीति
पैसा कमाने का तरीका

751. अनुपयुक्त को पटु बना, देता है धन-माल ।
ऐसे उत्तम वित्त से, बडा और न हि माल ।।

752. आदर देते हैं नहीं' निर्धन को सब लोग ।
गौरव देते हैं सदा, अमीर को सब लोग ।।

753. वित्त दीप बनता हुआ, बुझे बिना द्युतिमान ।
स्वाश्रित-विरोध तमस का, नाशक है गतिमान ।।

754. उचित नीति से वित्त जो, अर्जित है निर्दोष ।
वह धन दर्शक धर्म का, देता है संतोष ।।

755. प्यार-दया से रहित हो, अर्जित जो धनमात्र ।
वह धन सुखद न, खेदकर, निश्चित वर्जितमात्र ।।

756. जो धन खुद हो लब्ध हो औ कर से भी लब्ध ।
रिपु से प्रदत्त धन सभी, वे ही नृप को लब्ध ।।

757. जो हो करूणा दीन पर, वह करूणा सुतरूप ।
होकर वैभव-धाय से, पालित हो दृढरूप ।।

758. ज्यों नर गिरि चढ देखता, है गज रण बिनु भीति ।
त्यों नर रख धन हाथ में कृति करता बिनु भीति ।।

759. वित्त कमाना चाहिए, शत्रु गर्वहर अस्त्र ।
धनरूपी तलवारसम, तेज और नहि अस्त्र ।।

760. काम-धरम दोनों उसे, मिलते हैं आसान ।
जो करता अर्जित सही, विधि से वित्त महान ।।

76. THE ACQUISITION OF WEALTH

76. பொருள் செயல்வகை

பொருளல் லவரைப் பொருளாகச் செய்யும்
பொருளல்லது இல்லை பொருள். 751

இல்லாரை எல்லாரும் எள்ளுவர் செல்வரை
எல்லாரும் செய்வர் சிறப்பு. 752

பொருளென்னும் பொய்யா விளக்கம் இருளறுக்கும்
எண்ணிய தேயத்துச் சென்று. 753

அறன்ஈனும் இன்பமும் ஈனும் திறனறிந்து
தீதின்றி வந்த பொருள். 754

அருளொடும் அன்பொடும் வாராப் பொருளாக்கம்
புல்லார் புரள விடல். 755

உறுபொருளும் உல்கு பொருளும்தன் ஒன்னார்த்
தெறுபொருளும் வேந்தன் பொருள். 756

அருளென்னும் அன்பீன் குழவி பொருளென்னும்
செல்வச் செவிலியால் உண்டு. 757

குன்றேறி யானைப்போர் கண்டற்றால் தன்கைத்தொன்று
உண்டாகச் செய்வான் வினை. 758

செய்க பொருளைச் செறுநர் செருக்கறுக்கும்
எஃகதனிற் கூரியது இல். 759

ஒண்பொருள் காழ்ப்ப இயற்றியார்க்கு எண்பொருள்
ஏனை இரண்டும் ஒருங்கு. 760

फौज की महिमा

सेना से होनेवाली भलाई के बारे में कहना

761. भूप धनों में सैन्य वह, सबसे विदित महान ।
अंग सभी से सहित हो, जो जयकर धृतिमान ।।

762. परंपरागत सैन्य ही, क्षति से कभी न भीत ।
रिपु के हमले में चतुर, घावों से नहि भीत ।।

763. अहि-रिपू चूहे सिंधुसम, गरजें क्या हो लाभ ।
सबल सैन्य के सामने, दुर्बल को नहि लाभ ।।

764. सैन्य वही है जो कभी, पीछे हटा न जाय ।
सहज वीरतायुक्त हो, छल से त्रस्त न जाय ।।

765. आकर यम ही रण करें, तो भी मिल इक साथ ।
जो है करता सामना, वही सैन्य निष्णात ।।

766. सदाचार और वीरता, मान तथा विश्वास ।
सैन्य-शील है चार ये, इनसे बल विन्यास ।।

767. व्यूह बनाकर जो करें, रिपु-रोध कर उपाय ।
और चढें रिपु-मारने वही सैन्य कहलाय ।।

768. शत्रुमार की सह्यता, रणपटुता का भाव ।
यदि न रहें तो भी चमू, रखें व्यूह का भाव ।।

769. लघु होना परिमाण में, दैन्य-घृणा के शील ।
ये नहि जिस में सैन्य वह, होगा नित जयशील ।।

770. यद्यपि रख ले नित चमू, वीरों को रणधीर ।
तो भी सेनापति रहित, वह हो चपल-अधीर ।।

77. படைமாட்சி

உறுப்பமைந்து ஊறஞ்சா வெல்படை வேந்தன்
வெறுக்கையு ளெல்லாம் தலை. 761

உலைவிடத்து ஊறஞ்சா வன்கண் தொலைவிடத்துத்
தொல்படைக் கல்லால் அரிது. 762

ஒலித்தக்கால் என்னாம் உவரி எலிப்பகை
நாகம் உயிர்ப்பக் கெடும். 763

அழிவின்று அறைபோகா தாகி வழிவந்த
வன்க ணதுவே படை 764

கூற்றுடன்று மேல்வரினும் கூடி எதிர்நிற்கும்
ஆற்ற லதுவே படை 765

மறமானம் மாண்ட வழிச்செலவு தேற்றம்
எனநான்கே ஏமம் படைக்கு. 766

தார்தாங்கிச் செல்வது தானை தலைவந்த
போர்தாங்கும் தன்மை யறிந்து. 767

அடற்றகையும் ஆற்றலும் இல்லெனினும் தானை
படைத்தகையால் பாடு பெறும். 768

சிறுமையும் செல்லாத் துனியும் வறுமையும்
இல்லாயின் வெல்லும் படை 769

நிலைமக்கள் சால உடைத்தெனினும் தானை
தலைமக்கள் இல்வழி இல். 770

फौज़ की बलिष्ठता

सैनिकों की उत्तम वीरता

771. रिपुओं मेरे अधिप से लडकर नहि मर जाय ।
शिला सदृश बहु मृत बने, वह भी समझा जाय ।।

772. शर शश पर लग जाय यदि, तो भी लक्ष्य हि मोघ ।
शर गज पर नहि विद्ध यदि, तो भी लक्ष्य अमोघ ।।

773. रिपु को रण में जीतना, वीरकर्म कहलाय ।
वीर-कर्म की श्रेष्ठता, दुख में शत्रु-सहाय ।।

774. कर-शर गज पर फेंककर, और खोजकर बाण ।
निज उरगत शर प्राप्तकर, खुश होगा शरवान ।।

775 रिस से रिपु को देखते, दृग लख रिपू की मार ।
निमेष कर लें तो विदित, वही वीर की हार ।।

776. जितने दिन घायल नहीं, उतने दिन हैं व्यर्थ ।
जिस दिन घायल वीर हो, वह दिन कैसा व्यर्थ ।।

777. कीर्ति कमाने के लिए, सैनिक तजते प्राण ।
धरते भी हैं जो कड़ वह है शोभावान ।।

778. प्राण छोडने युद्ध में, दत्तचित्त रण-धीर ।
क्रुद्ध भूप रोकें अगर, तो भी लेंगे तीर ।।

779. प्राणत्यागी शपथ के, पहले जो मर जाय ।
शपथ-भंग का दण्ड तो, उसे दिया नहि जाय ।।

780. अगर मरण से भूप दृग, आँसू से भर जाय ।
तो ऐसे ही मरण का, वरण श्रेष्ठ समझाय ।।

78. படைச்செருக்கு

என்னைமுன் நில்லன்மின் தெவ்விர் பலர்என்னை
முன்நின்று கல்நின் றவர். 771

கான முயலெய்த அம்பினில் யானை
பிழைத்தவேல் ஏந்தல் இனிது. 772

பேராண்மை என்ப தறுகண்ஒன் றுற்றக்கால்
ஊராண்மை மற்றதன் எஃகு. 773

கைவேல் களிற்றொடு போக்கி வருபவன்
மெய்வேல் பறியா நகும். 774

விழித்தகண் வேல்கொண் டெறிய அழித்திமைப்பின்
ஓட்டன்றோ வன்க ணவர்க்கு. 775

விழுப்புண் படாதநாள் எல்லாம் வழுக்கினுள்
வைக்கும்தன் நாளை எடுத்து. 776

சுழலும் இசைவேண்டி வேண்டா உயிரார்
கழல்யாப்புக் காரிகை நீர்த்து. 777

உறின்உயிர் அஞ்சா மறவர் இறைவன்
செறினும்சீர் குன்றல் இலர். 778

இழைத்தது இகவாமைச் சாவாரை யாரே
பிழைத்தது ஒறுக்கிற் பவர். 779

புரந்தார்கண் நீர்மல்கச் சாகிற்பின் சாக்காடு
இரந்துகோள் தக்க துடைத்து. 780

मित्रता - दोस्ती की विशेषता

781. अर्जित करने योग्य नहि, दोस्ती सम औ माल ।
रिपु से पालक मित्रता, सर्वोपरि है माल ।।

781. बढती हि बंधु-मित्रता, पूरण चाँद-समान ।
अपढ-सख्य है उतरता, क्षयगत चाँद-समान ।।

783. सीख सीखकर ग्रंथ के, विषय सुखद बन जाय ।
सुशील की मैत्री सदा, सुखदायक बन जाय ।।

784. हास्य-मोद मिलने सदा, करना मात्र न सख्य ।
देने भी सलाह सतत, दुख में करना सख्य ।।

785. मैत्री करने के लिए, न जरुरी सहवास ।
मैत्री होने के लिए, ऐक्य भाव का वास ।।

786. विकसित मुख ही के लिए, नहि हो मैत्री भाव ।
विकसित मन-मुख के लिए, होगा मैत्रीभाव ।।

787. हटा मित्र को कुपथ से, सत्पथ में ले जाय ।
दुख में दुखना साथ ही, मैत्री वह कहलाय ।।

788. हटे वसन को कर यथा, खुद है लेता थाम ।
त्यों दुख मे करना मदद, सही यार का काम ।।

789. एकरूपता हो सदा, रीति सभी से त्राण ।
भर सक करना मदद, दोस्ती की पहचान ।।

790. मैत्री-महत्व तब घटें, जब घोषित हो जाय ।
ये ईदृश मेरेलिए इनका हूँ हि सहाय ।।

79. நட்பு

செயற்கரிய யாவுள நட்பின் அதுபோல்
வினைக்கரிய யாவுள காப்பு. 781

நிறைநீர நீரவர் கேண்மை பிறைமதிப்
பின்நீர பேதையார் நட்பு. 782

நவில்தொறும் நூல்நயம் போலும் பயில்தொறும்
பண்புடை யாளர் தொடர்பு. 783

நகுதற் பொருட்டன்று நட்டல் மிகுதிக்கண்
மேற்சென்று இடித்தற் பொருட்டு. 784

புணர்ச்சி பழகுதல் வேண்டா உணர்ச்சிதான்
நட்பாம் கிழமை தரும். 785

முகநக நட்பது நட்பன்று நெஞ்சத்து
அகநக நட்பது நட்பு. 786

அழிவி னவைநீக்கி ஆறுய்த்து அழிவின்கண்
அல்லல் உழப்பதாம் நட்பு. 787

உடுக்கை இழந்தவன் கைபோல ஆங்கே
இடுக்கண் களைவதாம் நட்பு. 788

நட்பிற்கு வீற்றிருக்கை யாதெனில் கொட்பின்றி
ஒல்லும்வாய் ஊன்றும் நிலை. 789

இனையர் இவர்எமக்கு இன்னயாம் என்று
புனையினும் புல்லென்னும் நட்பு. 790

दोस्ती की जाँच

मित्रों की दोस्ती पहचानना

791. सुगम न दोस्ती तोडना, हित बनने के बाद ।
सोचे बिनु मैत्रीकरण, दुखकर है बुध-वाद ।।

792. बिन जाँचे कृत मित्रता, लगातार बहुबार ।
मरणहेतुमय शोक का, स्वयं बनें आधार ।।

793. बंधुशीलता दोष-गुण, कुल सब की कर जाँच। ।
फिर ही करनी चाहिए, दोस्ती सार्थक साँच ।।

794. पाप भीरु हो जो तथा, कुलीन हो गुणवान ।
उसकी दोस्ती कीजिए, देकर वित्त महान ।।

795. कटु वच कहकर या रुला, समझावें ब्योहार। ।
ऐसे पटु को जाँचकर, दोस्ती कर अविकार ।।

796. एक रीति से खेद भी, लाभयुक्त बन जाय ।
दुख में तो वह मीत का, माप-दण्ड कहलाय ।।

797. अविवेकी की मित्रता, प्रमाद से हो जाय। ।
अहित समझ तजना उसे, लाभ बताया जाय ।।

798. ऐसी कृति भी कीजिये, जिसमें नहि उत्साह। ।
ऐसा दोस्त न चाहिए, दुख में तज लें राह ।।

799. दुख में जिसकी मित्रता, होती है बेकार। ।
मृत्युकाल भी स्मृति वहीं, देगी शोक अपार ।।

800. दोषहीन गुणवान की, दोस्ती कर ली जाय ।
धन दें भी गुणहीन की, दोस्ती तज ली जाय ।।

80. நட்பாராய்தல்

நாடாது நட்டலிற் கேடில்லை நட்டபின்
வீடில்லை நட்பாள் பவர்க்கு. 791

ஆய்ந்தாய்ந்து கொள்ளாதான் கேண்மை கடைமுறை
தான்சாம் துயரம் தரும். 792

குணனும் குடிமையும் குற்றமும் குன்றா
இனனும் அறிந்தியாக்க நட்பு. 793

குடிப்பிறந்து தன்கண் பழிநாணு வானைக்
கொடுத்தும் கொளல்வேண்டும் நட்பு. 794

அழச்சொல்லி அல்லது இடித்து வழக்கறிய
வல்லார்நட்பு ஆய்ந்து கொளல். 795

கேட்டினும் உண்டோர் உறுதி கிளைஞரை
நீட்டி அளப்பதோர் கோல். 796

ஊதியம் என்பது ஒருவற்குப் பேதையார்
கேண்மை ஒரீஇ விடல். 797

உள்ளற்க உள்ளஞ் சிறுகுவ கொள்ளற்க
அல்லற்கண் ஆற்றறுப்பார் நட்பு. 798

கெடுங்காலைக் கைவிடுவார் கேண்மை அடுங்காலை
உள்ளினும் உள்ளம் சுடும். 799

மருவுக மாசற்றார் கேண்மைஒன் றீத்தும்
ஒருவுக ஒப்பிலார் நட்பு. 800

पुराणी मित्रता
पुराणे दोस्तों के दोषों को सहना

801. चिर परिचित नर से रचित, जो कुछ भी हो काम।
उसे न रोके मानना, चिर मैत्री का नाम ।।

802. चिर मैत्री का अंग है, हक से करना कार्य ।
फरज समझ कर शिष्ट को, उसे सदा स्वीकार्य ।।

803. यदि हकसे कृत मित्रकृति, निजकृतसम बन जाय ।
तो नहि स्वीकृति मित्रता, लाभरहित हो जाय ।।

804. हक से ही पूछे बिना करके इच्छित कार्य ।
फिर करना तारीफ़ भी, शिष्टों से स्वीकार्य ।।

805. निन्दित कृति यदि मित्र से, पूरी भी हो जाय ।
अबोधहम से कृति हुई, ऐसा समझा जाय ।।

806. चिर दृढ परिचित यार से, अगर हुआ परिताप ।
तो भी मर्यादा उसे, तजते नहि हैं आप ।।

807. सनेह परिचित से अगर, दुख उत्थित हो जाय। ।
तब भी साथी की लगन, कभी नहीं घट जाय ।।

808. मित्र-दोस जो नहि सुनें, यदपि बताया जाय ।
वह दिन शुभ है मित्र को, दोस किया जब जाय।।

809. बहुत पुराणी मित्रता, रखते हैं जो लोग ।
दुनिया उनको चाहती, देगी गौरव-योग ।।

810. दोष करें चिर मित्र यदि, तब भी न तजें यार ।
वैरी भी उस यार पर, दिखलावे खुद प्यार ।।

81. பழைமை

பழைமை எனப்படுவது யாதெனின் யாதும்
கிழமையைக் கீழ்ந்திடா நட்பு. 801

நட்பிற் குறுப்புக் கெழுதகைமை மற்றதற்கு
உப்பாதல் சான்றோர் கடன். 802

பழகிய நட்பெவன் செய்யும் கெழுதகைமை
செய்தாங்கு அமையாக் கடை 803

விழைதகையான் வேண்டி யிருப்பர் கெழுதகையாற்
கேளாது நட்டார் செயின். 804

பேதைமை ஒன்றோ பெருங்கிழமை என்றுணர்க
நோதக்க நட்டார் செயின். 805

எல்லைக்கண் நின்றார் துறவார் தொலைவிடத்தும்
தொல்லைக்கண் நின்றார் தொடர்பு. 806

அழிவந்த செய்யினும் அன்பறார் அன்பின்
வழிவந்த கேண்மை யவர். 807

கேளிழுக்கம் கேளாக் கெழுதகைமை வல்லார்க்கு
நாளிழுக்கம் நட்டார் செயின். 808

கெடாஅ வழிவந்த கேண்மையார் கேண்மை
விடாஅர் விழையும் உலகு. 809

விழையார் விழையப் படுப பழையார்கண்
பண்பின் தலைப்பிரியா தார். 810

बुरी मित्रता

बुरे गुण वालों की दोस्ती का स्वभाव

811. नेही-समान मित्रता, करते हैं खल लोग ।
उनकी दोस्ती नहि बढे, घटने में सुख भोग ।।

812. स्वार्थी बनकर जो करें, मित्रामित्र-विचार ।
उसकी दोस्ती लब्ध हो, या न उभय बेकार ।।

813. तीनों समगुणवान हैं, स्वार्थी साथी लोग ।
धनलोलुप गणिका तथा, वंचक तस्कर लोग ।।

814. रण में पति को अधगिरा, भागा वाजिसमान ।
मददहीन हित से अलग, रहना श्रेयोमान ।।

815. नीच-मित्रता विपद में अनुपयुक्त ठहराय ।
ऐसी दोस्ती ना मिलें वह हित समझा जाय ।।

816. बुद्धिहीन की मित्रता, गर्हित समझी जाय ।
उससे बुध की शत्रुता, हितकर समझी जाय ।।

817. हास्य रसिक की मित्रता, देती है आराम ।
उससे बढकर दस गुना, रिपु से हो आराम ।।

818. साध्य-कार्य को मित्र जो, करता है दुस्साध्य ।
उसकी दोस्ती बिन कहे, तजना हो आराध्य ।।

819. जो नहि करता है करम, कथनी के अनुसार ।
उसकी दोस्ती स्वप्न में, भी हो क्लेशाधार ।।

820. स्तुति करके जो गेह में, दूषित करें विगेह ।
उसकी दोस्ती छोड दें, औ न दिखावें नेह ।।

82. தீ நட்பு

பருகுவார் போலினும் பண்பிலார் கேண்மை
பெருகலிற் குன்றல் இனிது. 811

உறின்நட்டு அறின்ஒரூஉம் ஒப்பிலார் கேண்மை
பெறினும் இழப்பினும் என். 812

உறுவது சீர்தூக்கும் நட்பும் பெறுவது
கொள்வாரும் கள்வரும் நேர். 813

அமரகத்து ஆற்றுஅறுக்கும் கல்லாமா அன்னார்
தமரின் தனிமை தலை. 814

செய்தேமஞ் சாராச் சிறியவர் புன்கேண்மை
எய்தலின் எய்தாமை நன்று. 815

பேதை பெருங்கெழீஇ நட்பின் அறிவுடையார்
ஏதின்மை கோடி உறும். 816

நகைவகைய ராகிய நட்பின் பகைவரால்
பத்தடுத்த கோடி உறும். 817

ஒல்லும் கருமம் உடற்று பவர்கேண்மை
சொல்லாடார் சோர விடல். 818

கனவினும் இன்னாது மன்னோ வினைவேறு
சொல்வேறு பட்டார் தொடர்பு. 819

எனைத்தும் குறுகுதல் ஓம்பல் மனைக்கெழீஇ
மன்றில் பழிப்பார் தொடர்பு. 820

कपट - मित्रता
अनमेल असमान मित्रताः

821. अन्दर से नहि मित्रता पर हो दोस्ती बाह्य ।
निहाउसम पाकर समय, वह मारक हो काट्य ।।
822. नाता बिनु जो बंधुसम, बनता है अभिनीत ।
उसकी दोस्ती स्थिर नही, स्त्रीदिलसम निर्णीत ।।
823. पढ़ने पर भी विविध औ, अच्छे ग्रंथ महान ।
रिपु तो बनते नहि सखी, यद्यपि हो मतिमान ।।
824. बहि रह हँसमुख हृदय में, जो सोचें कुविचार ।
उस कपटी को देखकर, डरिये अनेक बार ।।
825. ऐक्य भावयुत जो नही, सुनकर उसकी बात ।
लग जाना है कार्य में, नहीं हर्ष की बात ।।
826. सखासदृश हितकर वचन, यदि रिपु कहें ललाम ।
तो दुर वच वे व्यर्थ ही, होते प्रकट तमाम।। ।
827. जैसे दुख की सूचना, करता विनीत चाप ।
वैसे रिपु के विनयपद, सूचित करते ताप।। ।
828. वैरी के कर युग्म में निलीन है हथियार ।
रिपु के दृग जल-धार में निलीन वध हथियार ।।
829. ज्यों रिपु मन में हास रख प्रकट करें बहि नेह।
त्यों मन में मैत्री न रख, प्रकट करें बहि नेह।। ।
830. दोस्ती करके शत्रु यदि, बनता मित्रसमान ।
तो मुख से ही मित्रता, कर फिर उसे न मान ।।

83. FALSE FRIENDSHIP

83. கூடா நட்பு

சீரிடம் காணின் எறிதற்குப் பட்டடை
நேரா நிரந்தவர் நட்பு. 821

இனம்போன்று இனமல்லார் கேண்மை மகளிர்
மனம்போல வேறு படும். 822

பலநல்ல கற்றக் கடைத்தும் மனம்நல்லர்
ஆகுதல் மாணார்க்கு அரிது. 823

முகத்தின் இனிய நகாஅ அகத்தின்னா
வஞ்சரை அஞ்சப் படும். 824

மனத்தின் அமையா தவரை எனைத்தொன்றும்
சொல்லினால் தேறற்பாற்று அன்று. 825

நட்டார்போல் நல்லவை சொல்லினும் ஒட்டார்சொல்
ஒல்லை உணரப் படும். 826

சொல்வணக்கம் ஒன்னார்கண் கொள்ளற்க வில்வணக்கம்
தீங்கு குறித்தமை யான். 827

தொழுதகை யுள்ளும் படையொடுங்கும் ஒன்னார்
அழுதகண் ணீரும் அனைத்து. 828

மிகச்செய்து தம்மெள்ளு வாரை நகச்செய்து
நட்பினுள் சாப்புல்லற் பாற்று. 829

பகைநட்பாம் காலம் வருங்கால் முகம்நட்டு
அகநட்பு ஒரீஇ விடல். 830

मूर्खता

831. लाभकरी कृति छोडना, मौढ्य बताया जाय ।
करना भी कृति हानिकर मौढ्य कहाया जाय ।।

832. दूषित चरित्र शास्त्र में जो भी सम्यक उक्त ।
उनपर रखना चाह ही परम मूढता उक्त ।।

833. हित निस्पृहता, क्रूरता, कुकर्म में ना लाज ।
सोच समझ की रहितता, विमूढ के हैं काज ।।

834. ऐसा विमूढ और नहिं, जो हो शास्त्राधीत। ।
पटु पर के उपदेश में, नहि कर्मठ, अविनीत ।।

835. जो अघ देता जीव को, बाधा सातों जन्म ।
वह अघकर दुख भोगने चतुर मूढ इक जन्म ।।

836. कर्मतत्व समझे बिना, मूढ करें यदि काम ।
तो वह धारीहथकडी या होगा ना काम ।।

837. मूढ-हाथ में वित्त हो, तो भोगें औ लोग ।
किन्तु भूख से तडपते, होंगे घर के लोग ।।

838. मदिरा पीकर मस्त नर, पाता है जो हाल ।
धन पाकर भी मूढ जन, पाता है वह हाल ।।

839. विमूढ जन का विरह तो, दुखद नही ठहराय ।
इससे, दोस्ती मूढ की, सुखद सदा बन जाय ।।

840. बुध गोष्ठी में मूढ का घुसना नहि सुख देय ।
धोये बिनु पद सेज पर रखना नहि सुख देय। । ।।

84. பேதைமை

பேதைமை என்பதொன்று யாதெனின் ஏதங்கொண்டு
ஊதியம் போக விடல். 831

பேதைமை யுள்எல்லாம் பேதைமை காதன்மை
கையல்ல தன்கண் செயல். 832

நாணாமை நாடாமை நாரின்மை யாதொன்றும்
பேணாமை பேதை தொழில். 833

ஓதிஉணர்ந்தும் பிறர்க்குரைத்தும் தான் அடங்காப்
பேதையிற் பேதையார் இல். 834

ஒருமைச் செயலாற்றும் பேதை எழுமையும்
தான்புக் கழுந்தும் அளறு. 835

பொய்படும் ஒன்றோ புனைபூணும் கையறியாப்
பேதை வினைமேற் கொளின். 836

ஏதிலார் ஆரத் தமர்பசிப்பர் பேதை
பெருஞ்செல்வம் உற்றக் கடை 837

மையல் ஒருவன் களித்தற்றால் பேதைதன்
கையொன்று உடைமை பெறின். 838

பெரிதினிது பேதையார் கேண்மை பிரிவின்கண்
பீழை தருவதொன்று இல். 839

கழாஅக்கால் பள்ளியுள் வைத்தற்றால் சான்றோர்
குழாஅத்துப் பேதை புகல். 840

अल्पज्ञता - अल्पज्ञानवत्ता

841. सन्मति का अभाव अधम अभाव ही ठहराय ।
ना हीं अन्याभाव को अभाव समझा जाय ।।

842. मतिविहीन यदि प्रीति से, देता हैं धन-माल ।
धनहर्ता का पुण्य वह, दाता का नहि चाल ।।

843. जितना दुख है भोगता, विमूढ अपने आप ।
उसके रिपू को सुकर नहि देना उतना ताप ।।

844. नादानी उसको कहें जिससे अपने आप ।
हम ही विवेकयुक्त हैं, यों हो भ्रम की छाप ।।

845. लघुमति यदि अनघीत को, कहता खूब अधीत ।
तो उसके अधीत विषय में, पर को शक निर्णीत ।।

846. निजी दोष को जानकर, बिना मिटायें मंद ।
गुह्य अंग को वसन सें, छादित करता बंध ।।

847. गुप्त विषय को मंदमति, बाहर करता व्यक्त ।
होगा अपने आप ही महान पीडासक्त ।।

848. सुकर्म पर से उक्त भी, नहि कर खुद अनजान ।
जडमति को आमरण हो, बीमारीमय प्राण ।।

849. उपदेशक नासमझ को, रहें न खुद मतिमान ।
जडमति हठ से आप ही, दीख पडें मतिमान ।।

850. जिसकी सत्ता जग कहें, उसे न जो स्वीकार ।
करें उसे ही मान ले नरमय प्रेताकार ।।

85. புல்லறிவாண்மை

அறிவின்மை இன்மையுள் இன்மை பிறிதின்மை
இன்மையா வையாது உலகு. 841

அறிவிலான் நெஞ்சுவந்து ஈதல் பிறிதுயாதும்
இல்லை பெறுவான் தவம். 842

அறிவிலார் தாம்தம்மைப் பீழிக்கும் பீழை
செறுவார்க்கும் செய்தல் அரிது. 843

வெண்மை எனப்படுவது யாதெனின் ஒண்மை
உடையம்யாம் என்னும் செருக்கு. 844

கல்லாத மேற்கொண்டு ஒழுகல் கசடற
வல்லதூஉம் ஐயம் தரும். 845

அற்றம் மறைத்தலோ புல்லறிவு தம்வயின்
குற்றம் மறையா வழி. 846

அருமறை சோரும் அறிவிலான் செய்யும்
பெருமிறை தானே தனக்கு. 847

ஏவவும் செய்கலான் தான்தேறான் அவ்வுயிர்
போஒம் அளவுமோர் நோய். 848

காணாதான் காட்டுவான் தான்காணான் காணாதான்
கண்டானாம் தான்கண்ட வாறு. 849

உலகத்தார் உண்டென்பது இல்லென்பான் வையத்து
அலகையா வைக்கப் படும். 850

भेद - बुद्धि

851. आपस में मिलने नहीं, देता है जो भाव ।
दुर्गुण वर्धक रोग वह, है ही विभेद-भाव ।।

852. यदि कोई रहने अलग, करें अहित का काम ।
तो बदले में अहित नहि, करें भला वह काम ।।

853. भेद भाव सब से बडा, दुखद रोग निर्णीत ।
दूर करें, उस रोग को, तो चिर यश निर्णीत ।।

854. भेद बुद्धि सब से बडी, बीमारी कहलाय ।
भेद-बुद्धि से रहित को, होगा हर्ष निकाय ।।

855. भेद-भाव का सामना, कर जो हो प्रतिकूल ।
उस पर जय की बात है, निश्चित ही निर्मूल ।।

856. भेद-भाव को जो सही, समझ रखें मति-भेद ।
जीवन में उपलब्ध हो, उसे कष्ट औ खेद। ! ।

857. भेद-बुद्धि से लोग जो, बनते दुर्मति युक्त ।
वे नहि जानें नीति को, जयद तत्व से युक्त ।।

858. भेद-बुद्धि जो छोडते, वे पाते सौभाग्य ।
भेद-बुद्धियुत जो हुए, वे पाते दुर्भाग्य ।।

859. जब मिलता है श्रेय ही, तब न भेद की याद ।
जब मिलता है अशिव खुद, तभी भेद की याद ।।

860. भेद-बुद्धि से मनुज को मिलते हैं सब खेद ।
मैत्री से नय-मार्ग में धन मिलना बिनु खेद ।।

86. இகல்

இகலென்ப எல்லா உயிர்க்கும் பகலென்னும்
பண்பின்மை பாரிக்கும் நோய். 851

பகல்கருதிப் பற்றா செயினும் இகல்கருதி
இன்னாசெய் யாமை தலை. 852

இகலென்னும் எவ்வநோய் நீக்கின் தவலில்லாத்
தாவில் விளக்கம் தரும். 853

இன்பத்துள் இன்பம் பயக்கும் இகலென்னும்
துன்பத்துள் துன்பம் கெடின். 854

இகலெதிர் சாய்ந்தொழுக வல்லாரை யாரே
மிகலூக்கும் தன்மை யவர். 855

இகலின் மிகலினிது என்பவன் வாழ்க்கை
தவலும் கெடலும் நணித்து. 856

மிகல்மேவல் மெய்ப்பொருள் காணார் இகல்மேவல்
இன்னா அறிவி னவர். 857

இகலிற்கு எதிர்சாய்தல் ஆக்கம் அதனை
மிகலூக்கின் ஊக்குமாம் கேடு. 858

இகல்காணான் ஆக்கம் வருங்கால் அதனை
மிகல்காணும் கேடு தரற்கு. 859

இகலானாம் இன்னாத எல்லாம் நகலானாம்
நன்னயம் என்னும் செருக்கு. 860

दुश्मनी का महत्व

दुश्मनी के महत्व से होनेवाली बुराइयाँ

861. अपने से जो है बली, उसका रखो न वैर ।
अपने से जो दुबल है, चाहो उसका वैर ।।

862. प्रेमहीन असहाय जो, अगर न रखता शक्ति ।
कुंठित कर सकता नहीं, वह तो अरि की शक्ति ।

863. भीरू कृपण बेमेल औ, नेहहीन अनजान ।
ये सब अरि को जीतकर, गाते क्या जयगान ।।

864. इन्द्रिय-विजयी जो नहीं, यदि कोपी रह जाय ।
उसे जीतना कब किसे सरल न तो बन जाय ।।

865. वह रिपु को नहि जीतना, जो नहि जानें नीति ।
अहितकरी दुश्शील हो, औ न रखें अघ-भीति ।।

866. रहता है जो कोपयुत, औ अतिकामसमेत ।
उसकी रिपुता मोल लो, अभिलाषा समवेत ।।

867. काम शुरु कर फिर अगर, जो करता विपरीत ।
देकर भी कुछ शत्रुता उसकी हो सुगृहीत ।।

868. है गुणविहीन और जो, दोषों से संपन्न ।
तो वह बन असहाय हो, रिपु से मरणासन्न ।।

869. नीतिशास्त्रविद जो न औ, यदि रिपु हो भयभीत ।
तो सुख मिलता व्यक्ति को, पा उस रिपु की जीत ।।

870. अनपढ की है शत्रुता करना सरल हि काम ।
कर सकता नहि जो उसे, कब वह पावें नाम ।।

87. HATRED OF THE ENEMY

87. பகைமாட்சி

வலியார்க்கு மாறேற்றல் ஓம்புக ஓம்பா
மெலியார்மேல் மேக பகை. 861

அன்பிலன் ஆன்ற துணையிலன் தான்துவ்வான்
என்பரியும் ஏதிலான் துப்பு. 862

அஞ்சும் அறியான் அமைவிலன் ஈகலான்
தஞ்சம் எளியன் பகைக்கு. 863

நீங்கான் வெகுளி நிறையிலன் எஞ்ஞான்றும்
யாங்கணும் யார்க்கும் எளிது. 864

வழிநோக்கான் வாய்ப்பன செய்யான் பழிநோக்கான்
பண்பிலன் பற்றார்க்கு இனிது. 865

காணாச் சினத்தான் கழிபெருங் காமத்தான்
பேணாமை பேணப் படும். 866

கொடுத்தும் கொளல்வேண்டும் மன்ற அடுத்திருந்து
மாணாத செய்வான் பகை. 867

குணனிலனாய்க் குற்றம் பலவாயின் மாற்றார்க்கு
இனனிலனாம் ஏமாப்பு உடைத்து. 868

செறுவார்க்குச் சேண்இகவா இன்பம் அறிவிலா
அஞ்சும் பகைவர்ப் பெறின். 869

கல்லான் வெகுளும் சிறுபொருள் எஞ்ஞான்றும்
ஒல்லானை ஒல்லாது ஒளி. 870

रिपु बल को जानना
रिपु की स्थिति को पहचानना

871. रिपुता हितकर कर्म नहि ऐसा कार्यकलाप ।
कोई करना, खेल से, ना चाहें भी ख्वाब।। ।

872. चाप-सीर-धर कृषक की, रिपुता कर स्वीकार ।
पर वच हलधर कृषक की, रिपुता कर इनकार ।।

873. बहुरिपुता का मोल जो, लेता है बिनु मेल ।
पागल से बढ रिक्त से वह खाता है मेल ।।

874. मित्र बनाता शत्रु को, जो भी हो गुणवान ।
उसकी महिमा से जगत, ठहरा है गतिमान ।।

875. एकाकी असहाय नर, यदि रखता हो वैर ।
तो तुरंत इक शत्रु को, मित्र बनाना खैर ।।

876 रिपु को जाने या नाहि, जब होता दुख-काल ।
तब रिपू का संयोग नहि, विरह न मध्यम चाल ।।

877. नये मित्र से शोक निज, प्रकट न करना ठीक ।
रिपु से निज बलहीनता, प्रकट न करना ठींक ।।

878. निज बल वर्धक कार्यविद, खुद जो करें बचाव ।
रिपुजन अपने आप तो, खोयेगा हि प्रताप।। ।।

879. पौधा कांटेदार यदि, हो तो झट कर छेद ।
वर्धित कांटेदार तो छेदक को कर खेद ।।

880. शत्रुगर्व का जो नहीं करता है विध्वंस ।
तो ही रिपु के फूंकते पाता वह विध्वंस ।।

88. THE NATURE OF ENEMITY

88. பகைத்திறம் தெரிதல்

பகைஎன்னும் பண்பி லதனை ஒருவன்
நகையேயும் வேண்டற்பாற்று அன்று. 871

வில்லேர் உழவர் பகைகொளினும் கொள்ளற்க
சொல்லேர் உழவர் பகை. 872

ஏமுற் றவரினும் ஏழை தமியனாய்ப்
பல்லார் பகைகொள் பவன். 873

பகைநட்பாக் கொண்டொழுகும் பண்புடை யாளன்
தகைமைக்கண் தங்கிற்று உலகு. 874

தன்துணை இன்றால் பகைஇரண்டால் தான்ஒருவன்
இன்துணையாக் கொள்கவற்றின் ஒன்று. 875

தேறினும் தேறா விடினும் அழிவின்கண்
தேறான் பகாஅன் விடல். 876

நோவற்க நொந்தது அறியார்க்கு மேவற்க
மென்மை பகைவ ரகத்து. 877

வகையறிந்து தற்செய்து தற்காப்ப மாயும்
பகைவர்கண் பட்ட செருக்கு. 878

இளைதாக முள்மரம் கொல்க களையுநர்
கைகொல்லும் காழ்த்த விடத்து. 879

உயிர்ப்ப உளரல்லர் மன்ற செயிர்ப்பவர்
செம்மல் சிதைக்கலா தார். 880

आन्तरिक दुश्मनी

बाहरी दुश्मनी का मूल आन्तरिक- दुश्मनी

881. रोगकरी ज्यों छाँह-जल, देते हैं दुख दर्द ।
त्यो बाँधव के गुण बुरे, पैदा करते दर्द ।।

882. असिसम रिपु से बाहरी, कभी नहीं हो भीत ।
गूढ़शत्रु से बंधुसम, हो जाओ भयभीत ।।

883. डरकर रिपु भे भीतरी, कर लो अपना त्राण ।
ना तो सछेद पात्रसम, रिपु हर लेगा प्राण ।।

884. जो दृढ रिपुता भीतरी, रखता है, दिन रात ।
उसको रिपुता आप ही देगी विरहोत्पात ।।

885. यदि बांधव की शत्रुता, भीतर ही हो जाय ।
वह हत्यासम दोष का, कारण तो बन जाय ।।

886. निज साथी की शत्रुता, यदि पैदा हो जाय ।
तो फिर बचना मरण से, दुर्लभ समझा जाय ।।

887. ताम्रयोगसम गूढरिपु, मेल दिखाते खूब। ।
पर अन्दर से मेल बिनु, रहते उलटे खूब ।।

888. असि के घर्षण से यथा, प्रनष्ट लोहा-खंड ।
तथा गूढरिपु लोग भी, होंगे क्षीण प्रचंड ।।

889. तिलकण समान यदपि लघु, होता निगूढ वैर ।
तो भी देगा नहि वही, कुलगत गौरव खैर ।।

890. निवाससम इक गेह में, त्रिकट साँप के साथ ।
जीवन-यापन दुखद है, गूढशत्रु के साथ ।।

89. HIDDEN HATE

89. உட்பகை

நிழல்நீரும் இன்னாத இன்னா தமர்நீரும்
இன்னாவாம் இன்னா செயின். 881

வாள்போல் பகைவரை அஞ்சற்க அஞ்சுக
கேள்போல் பகைவர் தொடர்பு. 882

உட்பகை அஞ்சித்தற் காக்க உலைவிடத்து
மட்பகையின் மாணத் தெறும். 883

மனம்மாணா உட்பகை தோன்றின் இனம்மாணா
ஏதம் பலவும் தரும். 884

உறல்முறையான் உட்பகை தோன்றின் இறல்முறையான்
ஏதம் பலவுந் த்ரும். 885

ஒன்றாமை ஒன்றியார் கண்படின் எஞ்ஞான்றும்
பொன்றாமை ஒன்றல் அரிது. 886

செப்பின் புணர்ச்சிபோல் கூடினும் கூடாதே
உட்பகை உற்ற குடி. 887

அரம்பொருத பொன்போலத் தேயும் உரம்பொருது
உட்பகை உற்ற குடி. 888

எள்பக வன்ன சிறுமைத்தே ஆயினும்
உட்பகை உள்ளதாம் கேடு. 889

உடம்பாடு இலாதவர் வாழ்க்கை குடங்கருள்
பாம்போடு உடனுறைந் தற்று. 890

महान लोगों के प्रति अपराध न करना
बड़ों की नावहेलना

891. कार्यकुशल की चतुरता, विदित नही की जाय ।
वही त्राण-उपकरण में, महान समझा जाय ।।

892. यदि लोगों के प्रति बडा, किया जाय अपमान।
दुख देगा ब्योहार वह, तो अजस्र तू जान ।।

893. यदि चाहें खुद बिगडना, तो बिनु सुन कर दोष ।
यदि चाहें रिपु से निधन, पटु के प्रति कर दोष ।।

894. मारक यम को हाथ से, हो आह्वानसमान ।
पटु के प्रति असमर्थ का, अनहित चलायमान ।।

885. प्रबल भूप के कोप का, जो बनता है पात्र ।
नृप से बचकर वह कहीं जी सकता न सगात्र ।।

896. जलने पर भी आग से, बच सकते हैं प्राण ।
पटु के प्रति कृत अहित से, शक्य न धरना प्राण ।।

897. महामहिम यदि तापसी, करें भूप पर कोप।
तो नृप का साम्रज्य सब हो जायेगा लोप ।।

898. गिरिसम सज्जन-चित्त में, अनहित सोचा जाय ।
तो भी जग में दृढ धनी, सवंश मर मिट जाय ।।

899. लक्ष्यपुरुष यदि तापसी, होवें कोपसमेत ।
इन्द्र भूप तो भ्रष्टपद, बिगडें राजसमेत ।।

900. तपोबली सज्जन अगर, हो रिस से भर पूर ।
तो वह सहाय सहित भी हो बचने से दूर ।।

90. NOT OFFENDING THE GREAT

90. பெரியாரைப் பிழையாமை

ஆற்றுவார் ஆற்றல் இகழாமை போற்றுவார்
போற்றலுள் எல்லாம் தலை. 891

பெரியாரைப் பேணாது ஒழுகின் பெரியாரால்
பேரா இடும்பை தரும். 892

கெடல்வேண்டின் கேளாது செய்க அடல்வேண்டின்
ஆற்று பவர்கண் இழுக்கு. 893

கூற்றத்தைக் கையால் விளித்தற்றால் ஆற்றுவார்க்கு
ஆற்றாதார் இன்னா செயல். 894

யாண்டுச்சென்று யாண்டும் உளராகார் வெந்துப்பின்
வேந்து செறப்பட் டவர். 895

எரியாற் சுடப்படினும் உய்வுண்டாம் உய்யார்
பெரியார்ப் பிழைத்தொழுகு வார். 896

வகைமாண்ட வாழ்க்கையும் வான்பொருளும் என்னாம்
தகைமாண்ட தக்கார் செறின். 897

குன்றன்னார் குன்ற மதிப்பின் குடியொடு
நின்றன்னார் மாய்வர் நிலத்து. 898

ஏந்திய கொள்கையார் சீறின் இடைமுரிந்து
வேந்தனும் வேந்து கெடும். 899

இறந்தமைந்த சார்புடைய ராயினும் உய்யார்
சிறந்தமைந்த சீரார் செறின். 900

पत्नी का अनुवर्तन
स्त्री वच सुनकर काम करने से होनेवाले अहितः

901. स्त्री-वच-कारी श्रेष्ठ नहि, भजता धार्मिक लाभ ।
घृणित मोह से नापि वह, पाता आर्थिक लाभ ।।

902. निज पौरुष चाहे बिना, जो चाहे स्त्री-भाव ।
उसका धन बनकर शरम, देगा लज्ज-भाव ।।

903. जिसका स्वभाव सर्वदा, होता स्त्री से भीत ।
गुरु बिच उसका आचरण, लज्जास्पद निर्णीत ।।

904. स्त्री से जो भय भीत है, आमुष्मिक सुखभोग ।
वह नहि पाता, नापि औ, कृति-पटुता स्तुति भोग ।।

905. जो पत्नी से सर्वदा रहता है भयभीत ।
सज्जन के हित कर्म में वही रहेगा भीत ।।

906. स्त्रीस्कंधों से भीत जो, सुरसम समय बिताय ।
सचमुच वह तो श्रेय का, लायक नहि बन जाय ।।

907. स्त्रीवचकारी पुरुष का, पौरुष है नहि मान्य ।
लज्जित स्त्री का भाव तो, सचमुच ही संमान्य ।।

908. जो करता है आचरण, स्त्री के मनोनुकूल ।
वह न करेगा धर्म औ, हित ना प्रियानुकूल।।

909. जो स्त्री के आदेश से करता है निज कर्म ।
आर्थिक धार्मिक सुखकरी नहि करता वह कर्म ।।

910. विमर्शकारी औ धनी होते हैं जो लोग ।
स्त्रीगत माया-जाल में नहि फँसते वे लोग ।।

91. SUBMISSION TO ONE'S WIFE

91. பெண்வழிச் சேறல்

மனைவிழைவார் மாண்பயன் எய்தார் வினைவிழைவார்
வேண்டாப் பொருளும் அது. 901

பேணாது பெண்விழைவான் ஆக்கம் பெரியதோர்
நாணாக நாணுத் தரும். 902

இல்லாள்கண் தாழ்ந்த இயல்பின்மை எஞ்ஞான்றும்
நல்லாருள் நாணுத் தரும். 903

மனையாளை அஞ்சும் மறுமையி லாளன்
வினையாண்மை வீறெய்தல் இன்று. 904

இல்லாளை அஞ்சுவான் அஞ்சுமற் றெஞ்ஞான்றும்
நல்லார்க்கு நல்ல செயல். 905

இமையாரின் வாழினும் பாடிலரே இல்லாள்
அமையார்தோள் அஞ்சு பவர். 906

பெண்ணேவல் செய்தொழுகும் ஆண்மையின் நாணுடைப்
பெண்ணே பெருமை உடைத்து. 907

நட்டார் குறைமுடியார் நன்றாற்றார் நன்னுதலாள்
பெட்டாங்கு ஒழுகு பவர். 908

அறவினையும் ஆன்ற பொருளும் பிறவினையும்
பெண்ஏவல் செய்வார்கண் இல். 909

எண்சேர்ந்த நெஞ்சத் திடனுடையார்க்கு எஞ்ஞான்றும்
பெண்சேர்ந்தாம் பேதைமை இல். 910

वेश्या

एक सीमा में जकडी नारियाँ

911. मनरति बिनुधन के लिए, जो दर्शाती प्यार ।
उस नारी के मधुर वच, देंगे शोक अपार ।।

912. गणिका कहती मधुर वच, धन के ही अनुसार ।
सोचो उसकी चाल पर, उस पर करो न प्यार ।।

913. नारी धनेप्सित ज्यों मृषा बनती अनुनयशील ।
मृतानुवर्तन तमस में, त्यों है असभ्यशील ।।

914. धर्मी विवेकसहित ही, होते हैं जो लोग ।
वेश्या स्त्री का अचिर सुख. चाहते न वे लोग ।।

915. ज्ञान किताबी प्राप्तकर, जो नर हैं मतिमान ।
नहि वेश्या के अचिर सुख, चाहें वे इनसान ।।

916. यशोभिलाषी सभ्य जन, नाच-गान से मुग्ध ।
कारक गणिका-दृष्टि पर, नहि होते हैं मुग्ध ।।

917. जो रहता है सर्वदा, चंचल दृढताहीन ।
धनरत, गणिका-स्कंध पर, रहता है वह लीन ।।

918. कपटी गणिका की सुरति, मोहनवार समान ।
लगती है नासमझ को, बगैर अनुसंधान ।।

919. दोष बोध से अपरिचित, होते निकृष्ट लोग ।
गणिका भुजमय नरक का, करते हैं वे भोग ।।

920. जो लक्ष्मी से त्यक्त हैं, उनके नातेदार ।
ये तीनों हैं, कंचनी, द्यूत, सुरा मतिहार ।।

92. WANTON WOMEN

92. வரைவின் மகளிர்

அன்பின் விழையார் பொருள்விழையும் ஆய்தொடியார்
இன்சொல் இழுக்குத் தரும். 911

பயன்தூக்கிப் பண்புரைக்கும் பண்பில் மகளிர்
நயன்தூக்கி நள்ளா விடல். 912

பொருட்பெண்டிர் பொய்ம்மை முயக்கம் இருட்டறையில்
ஏதில் பிணந்தழீஇ யற்று. 913

பொருட்பொருளார் புன்னலம் தோயார் அருட்பொருள்
ஆயும் அறிவி னவர். 914

பொதுநலத்தார் புன்னலம் தோயார் மதிநலத்தின்
மாண்ட அறிவி னவர். 915

தந்நலம் பாரிப்பார் தோயார் தகைசெருக்கிப்
புன்னலம் பாரிப்பார் தோள். 916

நிறைநெஞ்சம் இல்லவர் தோய்வர் பிறநெஞ்சில்
பேணிப் புணர்பவர் தோள். 917

ஆயும் அறிவினர் அல்லார்க்கு அணங்கென்ப
மாய மகளிர் முயக்கு. 918

வரைவிலா மாணிழையார் மென்றோள் புரையிலாப்
பூரியர்கள் ஆழும் அளறு. 919

இருமனப் பெண்டிரும் கள்ளும் கவறும்
திருநீக்கப் பட்டார் தொடர்பு. 920

सुरापान न करना

सुरा-पान न करने की विशेषता:

921. मदिरा-सेवी मनुज से, रिपु जन भी नहि भीत।
और सुयश उसको नहीं, मिलता यों निर्णीत ।।

922. सुरा-पान मत कीजिये, शिष्टों से संमान।
जो पाना चाहें नहीं, वे कर लें मधु-पान ।।

923. मद्यप सुत को देखकर, माता को हो खेद।
औ मद्यप को, देखकर शिष्टों को हो खेद ।।

924. सुरा-पान के दोष से, दोषी जो ठहराय।
लज्जा रूपी सुंदरी, उससे भाग हि जाय ।।

925. धन नाशक निज देह की सुध-नाशक मधुपान।
सदाचार से अपरिचित, है तो मौढ्य-समान ।।

926. सुप्त मनुज मृत मनुज से, नहि होता है भिन्न।
नित मद्यप है विषपसम, इसमें मत नहि भिन्न ।।

927. छिप-छिप जो पीकर सुरा, खोता ही है ज्ञान।
औरों बिच वह हास्य का, विषय बनें बिनु मान ।।

928. "मधुपीकर मैं अज्ञ हूँ" यों नहि बोला जाय।
नशा-हाल में चित्त का, दोष प्रकट हो जाय ।।

929. समझाकर मधुमस्त को, सुधारना नहि साध्य।
नीरमग्न को दीप से करना खोज न साध्य ।।

930. मद्यप मधु यदि बिनु पिये, औ मद्यप का हाल।
लखता तो वह सोच लें, विवशी मद्यप-हाल ।।

93. AGAINST DRUNKNESSES

93. கள்ளுண்ணாமை

உட்கப் படாஅர் ஒளியிழப்பர் எஞ்ஞான்றும்
கட்காதல் கொண்டொழுகு வார். 921

உண்ணற்க கள்ளை உணில்உண்க சான்றோரால்
எண்ணப் படவேண்டா தார். 922

ஈன்றாள் முகத்தேயும் இன்னாதால் என்மற்றுச்
சான்றோர் முகத்துக் களி. 923

நாண்என்னும் நல்லாள் புறங்கொடுக்கும் கள்ளென்னும்
பேணாப் பெருங்குற்றத் தார்க்கு. 924

கையறி யாமை யுடைத்தே பொருள்கொடுத்து
மெய்யறி யாமை கொளல். 925

துஞ்சினார் செத்தாரின் வேறல்லர் எஞ்ஞான்றும்
நஞ்சுண்பார் கள்ளுண் பவர். 926

உள்ளொற்றி உள்ளூர் நகப்படுவர் எஞ்ஞான்றும்
கள்ளொற்றிக் கண்சாய் பவர். 927

களித்தறியேன் என்பது கைவிடுக நெஞ்சத்து
ஒளித்ததூஉம் ஆங்கே மிகும். 928

களித்தானைக் காரணம் காட்டுதல் கீழ்நீர்க்
குளித்தானைத் தீத்துரீஇ யற்று. 929

கள்ளுண்ணாப் போழ்தில் களித்தானைக் காணுங்கால்
உள்ளான்கொல் உண்டதன் சோர்வு. 930

जुआ - द्यूत खेल की बुराइयाँ

931. जुआ खेलना इष्ट नहिं, यदपि विदित पण-जीत
झष-निगला काँटा यथा, पण-धन कर अनरीत ।

932. इक- रूपया है फायदा, सौ से बढ नुकसान ।
ऐसे पण में निरत का, जीवन है सुनसान ।।

933. पणपटुता यदि द्यूत में कहता अर्जित-माल ।
तो वह उससे अलग हो, बनता रिपु का माल ।।

934. बहुत अहितकर कीर्ति का नाशक द्यूतसमान ।
अभावदायक जगत में, कोई और न आन ।।

935. जो तजता नहि द्यूतघर, पणपटुता औ द्यूत। ।
यदपि रहें वह मालयुत, तो भी रंकीभूत ।।

936. पणमय दारिद-नारि से, ग्रस्त रहें जो लोग ।
इह नहि खाते पेट भर, औ वे भोगें शोक ।।

937. पण-घर में जिसका समय, अगर बीत हो जाय ।
उसका धन औ शील तो क्षय होकर मिट जाय ।।

938 माल वित्त का नाशकर, असत्य भाषणमूल। ।
करुणावर्जित हो जुआ, शोक भोग का मूल ।।

939. कैतव की लोला अगर, अपनायी ही जाय ।
विद्या धन यश वसन औ अन्न दूर हो जाय ।।

940. नष्टवित्त नर द्यूत में, फिर हो वित्तासक्त ।
दुखपीडित भी नर यथा रहता प्राणासक्त ।।

94. சூது

வேண்டற்க வென்றிடினும் சூதினை வென்றதூஉம்
தூண்டிற்பொன் மீன்விழுங்கி யற்று. 931

ஒன்றெய்தி நூறிழக்கும் சூதர்க்கும் உண்டாங்கொல்
நன்றெய்தி வாழ்வதோர் ஆறு. 932

உருளாயம் ஓவாது கூறின் பொருளாயம்
போஒய்ப் புறமே படும். 933

சிறுமை பலசெய்து சீரழிக்கும் சூதின்
வறுமை தருவதொன்று இல். 934

கவறும் கழகமும் கையும் தருக்கி
இவறியார் இல்லாகி யார். 935

அகடாரார் அல்லல் உழப்பர்சூ தென்னும்
முகடியால் மூடப்பட் டார். 936

பழகிய செல்வமும் பண்பும் கெடுக்கும்
கழகத்துக் காலை புகின். 937

பொருள்கெடுத்துப் பொய்மேற் கொளீஇ அருள்கெடுத்து
அல்லல் உழப்பிக்கும் சூது. 938

உடைசெல்வம் ஊண்ஒளி கல்விஎன்று ஐந்தும்
அடையாவாம் ஆயம் கொளின். 939

இழத்தொறூஉம் காதலிக்கும் சூதேபோல் துன்பம்
உழத்தொறூஉம் காதற்று உயிர். 940

दवा - नीरोग - जीवन की दवा

941. श्रम-भोजन की न्यूनता, यदि या अति हो जाय ।
वात-पित्त-कफ से तभी, रूज पैदा हो जाय ।।

942. जीर्ण हुआ यदि अन्न तो, फिर खाना है ठीक ।
तन को दवा न चाहिए, इसमें नहीं अलीक ।।

943. हजम हुआ तो अशन कर, सीमित भोजन, जान ।
है चिर जीवन के लिए, यही तरीका, जान ।।

944. खादित भोजन हजम हो, फिर तन के अनुसार ।
लगने पर तो भूख ही, लेना है आहार ।।

945. दोषरहित भोजन करें, यदि मित तृप्तिसमेत ।
तो देही की देह नहि, होगी रोगसमेत ।।

946. अल्पाशी को सुख यथा, मिलता है चिरकाल ।
अत्याशी में रुज तथा, रहता है चिरकाल ।।

947. भूख-हाल जाने विना, औ बिनु पथ्य विचार ।
अति भोजन ही यदि करें, तो हो रोग अपार ।

948. डाक्टर जाने रोगथिति तथैव रोग-निदान ।
रोग हरण फिर जानकर, कर लें भेषज-पान ।।

949. डाक्टर रोगी हाल औ ज्वरादि सारा काज ।
औषध-बेला सोच औ सम्यक करें इलाज ।।

950. वैद्य-शास्त्र में विहित हैं केवल विभाग चार ।
रूग्नसहायक, वैद्य औ बीमारी, बीमार ।।

95. மருந்து

மிகினும் குறையினும் நோய்செய்யும் நூலோர்
வளிமுதலா எண்ணிய மூன்று. 941

மருந்தென வேண்டாவாம் யாக்கைக்கு அருந்தியது
அற்றது போற்றி உணின். 942

அற்றால் அளவறிந்து உண்க. அஃதுடம்பு
பெற்றான் நெடிதுய்க்கு மாறு. 943

அற்றது அறிந்து கடைப்பிடித்து மாறல்ல
துய்க்க துவரப் பசித்து. 944

மாறுபாடு இல்லாத உண்டி மறுத்துண்ணின்
ஊறுபாடு இல்லை உயிர்க்கு. 945

இழிவறிந்து உண்பான்கண் இன்பம்போல் நிற்கும்
கழிபே ரிரையான்கண் நோய். 946

தீயள வன்றித் தெரியான் பெரிதுண்ணின்
நோயள வின்றிப் படும். 947

நோய்நாடி நோய்முதல் நாடி அதுதணிக்கும்
வாய்நாடி வாய்ப்பச் செயல். 948

உற்றான் அளவும் பிணியளவும் காலமும்
கற்றான் கருதிச் செயல். 949

உற்றவன் தீர்ப்பான் மருந்துழைச் செல்வானென்று
அப்பால்நாற் கூற்றே மருந்து. 950

951. कुलीन लज्जावान है सदाचार से युक्त ।
शेष सहज हो शरम औ चरित्र से हि अयुक्त ।।

952. कुलीन रखते हैं सदा, ये तीनों ही शील ।
सदाचार औ सत्यता, तथैव लज्जा शील ।।

953. सच्चे कुलीन के सहज, गुण होते हैं चार। ।
अविदूषण औ सुमुखता, मधुवच, दानाचार ।।

954. कुलीन कभी न नीच का, करता कार्य कलाप ।
यद्यपि अपने पास हो, कोटि कोटि धनलाभ ।।

955. ऊँचे कुल में अवतरित, यदपि रंक बन जाय ।
तो भी परोपकार-गुण, उससे तजा न जाय ।।

956. कुलगौरव का अगर जो, करता है परिपाल ।
होने पर भी रंक वह, नहि करता छल-जाल ।।

957. कुलीन का लघु दोष ज्यों सब को है मालूम ।
कलंक नभस्थ चाँद का सब को त्यों मालूम ।।

958. कुलीन सुशील जो नहीं, रखता ही है नेह ।
उसके कुलत्व में सहज, हो पर को संदेह ।।

959. उगते अंकुर देखकर जमीन गुण ज्यों ज्ञात ।
त्यों कुलीन से वंशगुण, खुद है होता ज्ञात।।

960. यदि पाना चाहें भला, तो बन लज्जाशील ।
कुलीनता चाहे अगर, तो बन विनम्रशील ।।

96. குடிமை

இற்பிறந்தார் கண்அல்லது இல்லை இயல்பாகச்
செப்பமும் நாணும் ஒருங்கு. 951

ஒழுக்கமும் வாய்மையும் நாணும்இம் மூன்றும்
இழுக்கார் குடிப்பிறந் தார். 952

நகைஈகை இன்சொல் இகழாமை நான்கும்
வகைஎன்ப வாய்மைக் குடிக்கு. 953

அடுக்கிய கோடி பெறினும் குடிப்பிறந்தார்
குன்றுவ செய்தல் இலர். 954

வழங்குவ துள்வீழ்ந்தக் கண்ணும் பழங்குடி
பண்பில் தலைப்பிரிதல் இன்று. 955

சலம்பற்றிச் சால்பில செய்யார்மா சற்ற
குலம்பற்றி வாழ்தும்என் பார். 956

குடிப்பிறந்தார் கண்விளங்கும் குற்றம் விசும்பின்
மதிக்கண் மறுப்போல் உயர்ந்து. 957

நலத்தின்கண் நாரின்மை தோன்றின் அவனைக்
குலத்தின்கண் ஐயப் படும். 958

நிலத்தில் கிடந்தமை கால்காட்டும் காட்டும்
குலத்திற் பிறந்தார்வாய்ச் சொல். 959

நலம்வேண்டின் நாணுடைமை வேண்டும் குலம்வேண்டின்
வேண்டுக யார்க்கும் பணிவு. 960

गौरव

अपने कुलगौरव को अवनति हो जाय तो प्राण का परित्याग करना

961. जीने कुल का नाशकर करना नहि है काम।
आवश्यक औ श्रेष्ठ ही क्यों नहि हो वह काम ।।

962. जो नर है नित चाहता कीर्ति तथा संमान।
वह कुल का अनुचित करम, नहि करता तू जान ।।

963. विनम्र रहना चाहिए, धनी-दशा पर्यन्त।
उन्नत रहना चाहिए, रिक्त-दशा पर्यन्त ।

964. केशपाश ज्यों शीश से, गिरकर बनते व्यर्थ।
कुलीन पद-से भ्रष्ट हो, बनते है त्यों व्यर्थ ।।

965. गिरिसम उन्नत लोग यदि, करते कृति लघु नीच।
तो ही तुरंत लोग वे, कहलाते हैं नीच ।।

966. निज निंदक के साथ जो फिरते हैं दिन रात।
स्वर्ग-कीर्ति उनको नहीं, कहाँ पुण्य की बात ।।

967. निज निंदक का हो वशी. नित धरने से प्राण।
यही भला है रिक्त हो, तज लेना है प्राण ।।

968. गौरव का जब भंग हो, तब जीवन-निर्वाह।
ना तो तन धारण दवा, नापि मुक्ति की राह ।।

969. रोम पतन से चमर मृग ज्यों तजता है प्राण।
कुलीन गौरव के लिए, त्यों तजते हैं प्राण ।।

970. मान-हानि की भीति से, मानी तजते प्राण।
जग में करते लोग सब, उनके यश का गान ।।

97. மானம்

இன்றி யமையாச் சிறப்பின ஆயினும்
குன்ற வருப விடல். 961

சீரினும் சீரல்ல செய்யாரே சீரொடு
பேராண்மை வேண்டு பவர். 962

பெருக்கத்து வேண்டும் பணிதல் சிறிய
சுருக்கத்து வேண்டும் உயர்வு. 963

தலையின் இழிந்த மயிரனையர் மாந்தர்
நிலையின் இழிந்தக் கடை 964

குன்றின் அனையாரும் குன்றுவர் குன்றுவ
குன்றி அனைய செயின். 965

புகழ்இன்றால் புத்தேள்நாட்டு உய்யாதால் என்மற்று
இகழ்வார்பின் சென்று நிலை. 966

ஒட்டார்பின் சென்றொருவன் வாழ்தலின் அந்நிலையே
கெட்டான் எனப்படுதல் நன்று. 967

மருந்தோமற்று ஊன்ஓம்பும் வாழ்க்கை பெருந்தகைமை
பீடழிய வந்த இடத்து. 968

மயிர்நீப்பின் வாழாக் கவரிமா அன்னார்
உயிர்நீப்பர் மானம் வரின். 969

இளிவரின் வாழாத மானம் உடையார்
ஒளிதொழுது ஏத்தும் உலகு. 970

महत्व - सद्गुणवाले बडे लोगों का स्वभाव

971. महत्वकर है मनुज को, कृति करना सोत्साह ।
कलंककर है औ उसे, जीना बिनु उत्साह ।।

972. मानव सब है जन्म से, रहते एक समान ।
वे गुण-कृति के भेद से होते हैं असमान ।।

973. ऊँचे पद-आसीन, भी नहि हो नीच महान ।
नीचे पद आसीन भी, महान नहि लघुमान ।।

974. खुद करता है त्राण जो दृढमन सतीसमान ।
महत्व होता है उसे, और न महत्ववान ।।

975. जो महान कृतिचतुर हो, जिनको कुछ न असाध्य ।
औरों से जो साध्य नहि, वह उनको है साध्य ।।

976. "महान नर को पूज कर गह लें उनकी राय ।
नीच मनुज में नहि कभी होती ऐसी राय ।।

977. महानता गुण तुच्छ में, यदि पैदा हो जाय ।
तो बहु अत्याचार का, वह कारण बन जाय ।।

978. महान मानव हैं सदा, होते विनम्रशील ।
पर होते हैं तुच्छ नर, सदा विकत्थनशील ।।

979. महान नर का शील है, रहना सदा विनम्र ।
ओछे नर का शील है, रहना मद-अविनम्र ।।

980. महान नर पर दोष हैं कभी न करते व्यक्त ।
ओछे नर पर दोष हैं सदैव करते व्यक्त ।।

98. பெருமை

ஒளிஒருவற்கு உள்ள வெறுக்கை இளிஒருவற்கு
அஃதிறந்து வாழ்தும் எனல். 971

பிறப்பொக்கும் எல்லா உயிர்க்கும் சிறப்பொவ்வா
செய்தொழில் வேற்றுமை யான். 972

மேலிருந்தும் மேலல்லார் மேலல்லர் கீழிருந்தும்
கீழல்லார் கீழல் லவர். 973

ஒருமை மகளிரே போலப் பெருமையும்
தன்னைத்தான் கொண்டொழுகின் உண்டு. 974

பெருமை உடையவர் ஆற்றுவார் ஆற்றின்
அருமை உடைய செயல். 975

சிறியார் உணர்ச்சியுள் இல்லை பெரியாரைப்
பேணிக்கொள் வேம்என்னும் நோக்கு. 976

இறப்பே புரிந்த தொழிற்றாம் சிறப்புந்தான்
சீரல் லவர்கண் படின். 977

பணியுமாம் என்றும் பெருமை சிறுமை
அணியுமாம் தன்னை வியந்து. 978

பெருமை பெருமிதம் இன்மை சிறுமை
பெருமிதம் ஊர்ந்து விடல். 979

அற்றம் மறைக்கும் பெருமை சிறுமைதான்
குற்றமே கூறி விடும். 980

सद्गुणों की संपूर्णता

981. फरज समझ कर उचित गुण, अपनाते जो लोग ।
होंगे सद्‌गुण सहज ही, उनमें नित अवियोग ।।

982. सुन्दरता है शिष्ट की, अंदर का गुण रूप ।
सुन्दरता नहिं शिष्ट की, बाह्य देह का रूप ।।

983. प्रेम शरम उपकार औ, दया सत्य का शील ।
ढोकर महत्व भार को, खंभसदृश को कील ।।

984. जीव हनन जिसमें नहीं, वही तपस कहलाय ।
और दोष ना कथन ही गुण महान कहलाय ।।

985. कार्य सिद्धि की चतुरता, सविनय है ब्योहार ।
और वही बरताव हो, रिपुनाशक-हथियार ।।

986. पूर्ण गुणों को परखने, एक मात्र हथियार ।
हेय मनुज से मानना, है अपनी ही हार ।।

987. निज अपकारी को अगर, मंगल किया न जाय ।
तो महत्व गुण से नफा, क्या ही पाया जाय ।।

988. यदि समृद्ध-गुण शीलता, रहती जिसके पास ।
निर्धनतामय हेयता, तो नहि उसके पास ।

989. सद्‌गुण सागर-सदृश ही रहते हैं जो लोग ।
सबल काल के फेर में विचलित नहि वे लोग ।।

990. सद्‌गुणधारी लोग यदि सुगुण बिना रह जाय ।
तो हो असह्य भार से भू शोकी हो जाय ।।

99. சான்றாண்மை

கடன்என்ப நல்லவை எல்லாம் கடன்அறிந்து
சான்றாண்மை மேற்கொள் பவர்க்கு. 981

குணநலம் சான்றோர் நலனே பிறநலம்
எந்நலத்து உள்ளதூஉம் அன்று. 982

அன்புநாண் ஒப்புரவு கண்ணோட்டம் வாய்மையொடு
ஐந்துசால்பு ஊன்றிய தூண். 983

கொல்லா நலத்தது நோன்மை பிறர்தீமை
சொல்லா நலத்தது சால்பு. 984

ஆற்றுவார் ஆற்றல் பணிதல் அதுசான்றோர்
மாற்றாரை மாற்றும் படை. 985

சால்பிற்குக் கட்டளை யாதெனில் தோல்வி
துலையல்லார் கண்ணும் கொளல். 986

இன்னாசெய் தார்க்கும் இனியவே செய்யாக்கால்
என்ன பயத்ததோ சால்பு. 987

இன்மை ஒருவற்கு இளிவன்று சால்பென்னும்
திண்மைஉண் டாகப் பெறின். 988

ஊழி பெயரினும் தாம்பெயரார் சான்றாண்மைக்கு
ஆழி எனப்படு வார். 989

சான்றவர் சான்றாண்மை குன்றின் இருநிலந்தான்
தாங்காது மன்னோ பொறை. 990

सभ्यता का व्यवहार

सब का अनुसरण करके बरताव करना

991. सब से मिलकर अगर जो, सब को करें निहार ।
सुलभ सभ्य की राह का वह तो करता पार ।।

992. प्रेमपूर्ण बरताव औ, सदकुल में अवतार ।
दोनों सज्जन-भाव के, सूचक होते सार ।

993. मिलकर रहना देह से, सच्चा नहीं मिलाप ।
मिलकर रहना भाव से, समझा सही मिलाप ।।

994. धर्म-नीति-रत सुजन हैं, करते परोपकार ।
उनके गुण की स्तुति सदा, करता है संसार ।।

995. परदूषण भी खेल में, करना है दुख-मूल ।
परानुसारी वैर में, भी रहते अनुकूल ।।

996. सभ्यों के आधार पर, जीवित है संसार ।
बिनु उनके, वह भूमि में, घुस हो भस्माकार ।।

997. सभ्यशील बिनु जो रखें, असिसम मति की धार ।
तो भी उसको काष्ट-सम, जग समझें बेकार ।।

998. जो बिनु सनेह शत्रु से, कटु करता व्योहार ।
दोषयुक्त ही तो उसे, कहता है संसार ।।

999. प्यार-सहित जो नहि करें, अच्छा ही ब्योहार।
तो दिन भी उसको लगें, निशिसम तमसाकार ।।

1000. सद्गुण-विहीन मनुज का, अर्जित हो जो अर्थ ।
वह धन बरतन-दोषसे, फटे दूधसम व्यर्थ ।।

100. COURTESY

100. பண்புடைமை

எண்பதத்தால் எய்தல் எளிதென்ப யார்மாட்டும்
பண்புடைமை என்னும் வழக்கு. 991

அன்புடைமை ஆன்ற குடிப்பிறத்தல் இவ்விரண்டும்
பண்புடைமை என்னும் வழக்கு. 992

உறுப்பொத்தல் மக்களொப்பு அன்றால் வெறுத்தக்க
பண்பொத்தல் ஒப்பதாம் ஒப்பு. 993

நயனொடு நன்றி புரிந்த பயனுடையார்
பண்புபா ராட்டும் உலகு. 994

நகையுள்ளும் இன்னாது இகழ்ச்சி பகையுள்ளும்
பண்புள பாடறிவார் மாட்டு. 995

பண்புடையார்ப் பட்டுண்டு உலகம் அதுஇன்றேல்
மண்புக்கு மாய்வது மன். 996

அரம்போலும் கூர்மைய ரேனும் மரம்போல்வர்
மக்கட்பண்பு இல்லா தவர். 997

நண்பாற்றா ராகி நயமில செய்வார்க்கும்
பண்பாற்றா ராதல் கடை. 998

நகல்வல்லர் அல்லார்க்கு மாயிரு ஞாலம்
பகலும்பாற் பட்டன்று இருள். 999

பண்பிலான் பெற்ற பெருஞ்செல்வம் நன்பால்
கலந்தீமை யால்திரிந் தற்று. 1000

निरर्थक अर्थ - प्रयोजन रहित धन:

1001. अर्जित कर धन गेह भर, जो न करें उपयोग ।
मृत-समान उस मनुज के, धन से क्या सुख-भोग ।।

1002. वित्त साध्य सब समझ जो, कृपण रहे धनयुक्त ।
ओछे से तो वह बने, प्रेत जन्म से युक्त ।।

1003. अर्जित धन से जो नही, करता यशकर दान ।
भूमें उसका जन्म ही, माना भारसमान ।।

1004. नहि करने से दान ही, जो सब का नहि इष्ट ।
स्वयं निधन के बाद वह, क्या देखें उच्छिष्ठ ।।

1005. करता नहि खुद भोग जो, औ नहि परोपकार ।
उस करोडपति का विभव, हो जाता बेकार ।।

1006. दान किये बिनु पात्र पर, खुद जो करें न भोग ।
स्वार्जित धन के रोग से, वह करता दुख-भोग ।।

1007. दान किये बिन रिक्त को, जो रखता बहु अर्थ ।
जरा-प्राप्त रमणी यथा, उसका धन है व्यर्थ ।।

1008. सब का जो नहि इष्ट है, औ को नहि दें अर्थ ।
फल युत विषतरू नगर बिच, ज्यों उसका धन व्यर्थ ।।

1009. अशन-धर्म-रति बिनु किये, जो रखता बहु वित्त ।
उसका धन तो अंत में, बनता है पर-वित्त ।।

1010. बरसा घन फिर नीर से जैसे ही परिपूर्ण ।
त्यों अमीर की रिक्तता क्षणिक काल से पूर्ण ।।

101. நன்றியில் செல்வம்

வைத்தான்வாய் சான்ற பெரும்பொருள் அஃதுண்ணான்
செத்தான் செயக்கிடந்தது இல். 1001

பொருளானாம் எல்லாமென்று ஈயாது இவறும்
மருளானாம் மாணாப் பிறப்பு. 1002

ஈட்டம் இவறி இசைவேண்டா ஆடவர்
தோற்றம் நிலக்குப் பொறை. 1003

எச்சமென்று என்எண்ணுங் கொல்லோ ஒருவரால்
நச்சப் படாஅ தவன். 1004

கொடுப்பதூஉம் துய்ப்பதூஉம் இல்லார்க்கு அடுக்கிய
கோடிஉண் டாயினும் இல். 1005

ஏதம் பெருஞ்செல்வம் தான்துவ்வான் தக்கார்க்கொன்று
ஈதல் இயல்பிலா தான். 1006

அற்றார்க்கொன்று ஆற்றாதான் செல்வம் மிகநலம்
பெற்றாள் தமியள்மூத் தற்று. 1007

நச்சப் படாதவன் செல்வம் நடுவூருள்
நச்சு மரம்பழுத் தற்று. 1008

அன்பொரீஇத் தற்செற்று அறம்நோக்காது ஈட்டிய
ஒண்பொருள் கொள்வார் பிறர். 1009

சீருடைச் செல்வர் சிறுதுனி மாரி
வறங்கூர்ந் தனையது உடைத்து. 1010

लज्जित भाव

अनुचित कार्य करने पर लज्जित होना

1011. अनुचित कृति के करण से होता लज्जा-भाव ।
स्त्री की लज्जा सहज है, यों बहु लज्जा-भाव ।।

1012. खाना कपडा आदि हैं, नर के लिए समान।
विशेष, गुण है शिष्ट में, शर्मिंदा का ज्ञान ।।

1013. जीव सभी हैं देह का करते ज्यों अवलंब ।
त्यों महत्वगुण भी शरम का, करता है अवलंब ।।

1014. अलंकार है शिष्ट का, केवल लज्जा-भाव ।
नहि उसकी गंभीर गति, वर बिन लज्जा-भव ।।

1015. जो है लज्जित देखकर निजी पराया दोष ।
उसको ही है बोलती दुनिया लज्जा-कोष ।।

1016. अपना पालक शरम का, पालक यदि नहि संत ।
तो वे नहि हैं चाहते, जग का भोग अनंत ।।

1017. लाज निभाने के लिए सलज्ज तजते प्राण ।
जीने कभी न छोड़ते सलज्ज-लज्जा त्राण ।।

1018. लज्जाकारी और को जो करता है कर्म ।
वह लज्जित होता नहीं, लज्जित तो है धर्म ।।

1019. सदाचार की ही कमी, हरती है कुल-मान ।
निर्लज्जता हरती सब, सुखकारी कल्याण।।

1020. जो जीते हैं हृदय में, बिना लाज-संमान।
वे रस्सी में लटकती पुतली हि के समान।।

102. TRUE MODESTY

102. நாணுடைமை

கருமத்தான் நாணுதல் நாணுத் திருநுதல்
நல்லவர் நாணுப் பிற. 1011

ஊணுடை எச்சம் உயிர்க்கெல்லாம் வேறல்ல
நாணுடைமை மாந்தர் சிறப்பு. 1012

ஊனைக் குறித்த உயிரெல்லாம் நாண்என்னும்
நன்மை குறித்தது சால்பு. 1013

அணிஅன்றோ நாணுடைமை சான்றோர்க்கு அஃதின்றேல்
பிணிஅன்றோ பீடு நடை. 1014

பிறர்பழியும் தம்பழியும் நாணுவார் நாணுக்கு
உறைபதி என்னும் உலகு. 1015

நாண்வேலி கொள்ளாது மன்னோ வியன்ஞாலம்
பேணல மேலா யவர். 1016

நாணால் உயிரைத் துறப்பர் உயிர்ப்பொருட்டால்
நாண்துறவார் நாண்ஆள் பவர். 1017

பிறர்நாணத் தக்கது தான்நாணா னாயின்
அறம்நாணத் தக்கது உடைத்து. 1018

குலஞ்சுடும் கொள்கை பிழைப்பின் நலஞ்சுடும்
நாணின்மை நின்றக் கடை. 1019

நாண்அகத் தில்லார் இயக்கம் மரப்பாவை
நாணால் உயிர்மருட்டி யற்று. 1020

कुलगौरव की रक्षा

1021. "कुलगौरवकर कृत्य से, च्युत मैं नहि" की उक्ति ,
महत्व सब से सर्वदा, बढकर है यह उक्ति ।।

1022. अच्छा प्रयत्न ज्ञान विभु इन दोनों से युक्त ।
सतत सतत अभ्याससे, कुल हो गौरव युक्त ।।

1023. कुलगौरव की वृद्धि में, जो हो दृढसंकल्प ।
विधि-सहाय कटिबद्ध हो, उसमें हो न विकल्प ।।

1024. कुलगौरव की वृद्धि में, जो करता आयास ।
उसका कार्य-कलाप तो, पूरा हो अविनास ।।

1025. निर्दोषी कुल-वृद्धिकर, जीवित है जो व्यक्ति ।
जग में घेरा बंधुसे, रहता है वह व्यक्ति ।।

1026. पौरुष की पहचान तो, वही बतायी जाय ।
निजकुल गौरव-अर्थ जो, जतन किया ही जाय ।।

1027. ज्यों ढोते रण भार को, रणपटु नेता लोग ।
त्यों ढोते कुल भार को, कुल-पालन-पटु लोग ।।

1028. निजकुल गौरव के लिए, नहीं देखना काल। ।
काल-ताक आलस्य से, क्षय कुल का विकराल ।।

1029. कुल-कलंकहर काम में, जो हो प्रयत्नवान ।
उसका शरीर खेद का, क्या हो जन्मस्थान ।।

1030. जिस कुल में सुत दुख सही, नहि पैदा हो जाय ।
वह कुल-तरु दुख-परशु से, निपतित ही हो जाय ।।

103. ADDING TO THE GLORY OF THE FAMILY

103. குடிசெயல் வகை

கருமம் செயஒருவன் கைதூவேன் என்னும்
பெருமையின் பீடுடையது இல். 1021

ஆள்வினையும் ஆன்ற அறிவும் எனஇரண்டின்
நீள்வினையால் நீளும் குடி. 1022

குடிசெய்வல் என்னும் ஒருவற்குத் தெய்வம்
மடிதற்றுத் தான்முந் துறும். 1023

சூழாமல் தானே முடிவெய்தும் தம்குடியைத்
தாழாது உஞற்று பவர்க்கு. 1024

குற்றம் இலனாய்க் குடிசெய்து வாழ்வானைச்
சுற்றமாச் சுற்றும் உலகு. 1025

நல்லாண்மை என்பது ஒருவற்குத் தான்பிறந்த
இல்லாண்மை ஆக்கிக் கொளல். 1026

அமரகத்து வன்கண்ணர் போலத் தமரகத்தும்
ஆற்றுவார் மேற்றே பொறை. 1027

குடிசெய்வார்க்கு இல்லை பருவம் மடிசெய்து
மானம் கருதக் கெடும். 1028

இடும்பைக்கே கொள்கலங் கொல்லோ குடும்பத்தைக்
குற்றம் மறைப்பான் உடம்பு. 1029

இடுக்கண்கால் கொன்றிட வீழும் அடுத்தூன்றும்
நல்லாள் இலாத குடி. 1030

खेतीबारी - कृषि उद्योग का महत्व

1031. बहु धंधों से पूर्ण जग, है ही कृषिप्रधान ।
तन-दुखकर कृषिकर्म है, फिर भी यही प्रधान ।।

1032. कृषक कर्म पर अन्यजन निर्भर रहते एव ।
जगत की ज्यों है धुरी, त्यों किसान वर एव ।।

1033. कृषिजीवी जो लोग हैं वे रहते स्वाधीन ।
शेष और को नमन कर जीते अन्याधीन ।।

1034. धानों से संपन्न औ करुणायुक्त किसान ।
निजनृप-वश में भूप को लाते ही हैं आन ।।

1035. खेतीजीवी और से नही माँगते भीख ।
देते हैं उनको कृषक, जो लेते हैं भीख ।।

1036. यदि हल धर-कर खेत में, होते चेष्टाहीन ।
तो यति जन की जिन्दगी, हो आशा से हीन ।।

1037. खेत जोतकर कर सुखा, भू का चौथा भाग ।
बीज लगा तो खाद बिन, बढ़ें शस्यफल भाग ।।

1038. खेत जोतने से भला, खाद डालना मुख्य ।
फिर तृण निकाल पालना, जल-सिंचन से मुख्य ।।

1039. भूस्वामी यदि सतत ना, करें भूमि की देख ।
तो नापसंद दारसम, भू भी हो अनदेख ।

1040. अभाव कहकर कर्मकृषि, नहि करते जो लोग ।
लख उनकी अविवेकिता, हँसता, खुद भूलोक ।।

104. உழவு

சுழன்றும்ஏர்ப் பின்னது உலகம் அதனால்
உழந்தும் உழவே தலை. 1031

உழுவார் உலகத்தார்க்கு ஆணிஅஃ தாற்றாது
எழுவாரை எல்லாம் பொறுத்து. 1032

உழுதுண்டு வாழ்வாரே வாழ்வார்மற் றெல்லாம்
தொழுதுண்டு பின்செல் பவர். 1033

பலகுடை நீழலும் தங்குடைக்கீழ்க் காண்பர்
அலகுடை நீழ லவர். 1034

இரவார் இரப்பார்க்கொன்று ஈவர் கரவாது
கைசெய்தூண் மாலை யவர். 1035

உழவினார் கைம்மடங்கின் இல்லை விழைவதூஉம்
விட்டேம்என் பார்க்கும் நிலை. 1036

தொடிப்புழுதி கஃசா உணக்கின் பிடித்தெருவும்
வேண்டாது சாலப் படும். 1037

ஏரினும் நன்றால் எருஇடுதல் கட்டபின்
நீரினும் நன்றதன் காப்பு. 1038

செல்லான் கிழவன் இருப்பின் நிலம்புலந்து
இல்லாளின் ஊடி விடும். 1039

இலமென்று அசைஇ இருப்பாரைக் காணின்
நிலமென்னும் நல்லாள் நகும். 1040

निर्धनता - दरिद्रता से होनेवाली बुराइयाँ

1041. अभावसम यदि शोककर, क्या है पूछा जाय ।।
उसका उत्तर रिक्तता, यही बताया जाय ।।

1042. अभाव-अघकर मनुज से जो करता यदि नेह ।
नहि इह-पर के भोग-सुख, छूते उसकी देह ।।

1043. अभाव रूपी चाह से, जो भी होता ग्रस्त ।
उसके यश कुल नाम सब, तो हो जाते अस्त ।।

1044. रहता यदपि कुलीन ही, फिर भी अनुचित बात ।
जो कर लें उस दोष का, कारण अभाव ज्ञात ।।

1045. अभाव रूपी शोक से जो पीडित दिन-रात ।
उसको अजस्र रीति से होती दुख की बात ।।

1046. शास्त्र निपुण औ तत्वविद, जो रखता नहि अर्थ
उसका भाषण धाक बिन, हो जाता है व्यर्थ ।।

1047. धर्म-लोपकर रिक्तता, धरता है जो व्यक्ति ।
उसे पराया समझ माँ, करती व्यक्त विरक्ति ।।

1048. कल का अभाव भारसम, दर्दनाक हो घोर ।
वही रिक्तता आज भी दर्दनाक हो घोर ।।

1049. अग्नि-आँच में नींद ले सकना हो आसान ।
पर अभाव में नींद ले सकना नहि आसान ।।

1050. भोगोचित धन हीन नर, अगर न ले संयास ।
तो हो नहि पर-गेह में, पीच-लवण का ह्रास ।।

105. நல்குரவு

இன்மையின் இன்னாதது யாதெனின் இன்மையின்
இன்மையே இன்னா தது. 1041

இன்மை எனஒரு பாவி மறுமையும்
இம்மையும் இன்றி வரும். 1042

தொல்வரவும் தோலும் கெடுக்கும் தொகையாக
நல்குரவு என்னும் நசை. 1043

இற்பிறந்தார் கண்ணேயும் இன்மை இளிவந்த்
சொற்பிறக்கும் சோர்வு தரும். 1044

நல்குரவு என்னும் இடும்பையுள் பல்குரைத்.
துன்பங்கள் சென்று படும். 1045

நற்பொருள் நன்குணர்ந்து சொல்லினும் நல்கூர்ந்தார்
சொற்பொருள் சோர்வு படும். 1046

அறஞ்சாரா நல்குரவு ஈன்றதா யானும்
பிறன்போல நோக்கப் படும். 1047

இன்றும் வருவது கொல்லோ நெருநலும்
கொன்றது போலும் நிரப்பு. 1048

நெருப்பினுள் துஞ்சலும் ஆகும் நிரப்பினுள்
யாதொன்றும் கண்பாடு அரிது. 1049

துப்புரவு இல்லார் துவரத் துறவாமை
உப்பிற்கும் காடிக்கும் கூற்று. 1050

भीख - मांगना

मान खोये बिना याचना करना

1051. दानशील जो मनुज है, उससे माँगो भीख ।
अदान दानीदोष है, दोष न याचक-भीख ।।

1052. दानी से यदि सहज ही, मिलता याचित अर्थ ।
तो याचन सुखदेय है, औ न कभी-शोकार्थ ।।

1053. कपट रहित औ फर्ज से, सहित मनुज से भीख ।
याचक को भूषणकरी, इसमें नहीं अलीक ।।

1054. जो न छिपाना जानते, सपने में भी माल ।
उनसे माँगन दानसम, याचक को खुशहाल ।।

1055. गोपन बिन हैं सामने देते दानी लोग ।
इसीलिए हैं याचते जग में याचक लोग ।।

1056. गोपन रूपी रोग से, नहि जो दाता ग्रस्त ।
उनको लखकर रिक्त के, सब दुख होते अस्त ।।

1057. किये बिन अपमान जो सनेह करते दान ।
याचक उनको देखकर, पाते तृप्ति महान ।।

1058. शीतस्थल युत जग बडा, यदि हो याचकहीन ।
गुडियासम तो जग रहें, चलता रस्साधीन ।।

1059. याचक जनता भीखकर, अगर न लेती दान ।
दाताओं को तो नहीं, मिलते यश - संमान ।।

1060. याचक दानी व्यक्ति से, नहीं दिखावें कोप ।
सबक सिखाता रिक्त को, अपना ही धन लोप ।।

106. BEGGING

106. இரவு

இரக்க இரத்தக்கார்க் காணின் கரப்பின்
அவர்பழி தம்பழி யன்று. 1051

இன்பம் ஒருவற்கு இரத்தல் இரந்தவை
துன்பம் உறாஅ வரின். 1052

கரப்பிலா நெஞ்சின் கடனறிவார் முன்நின்று
இரப்புமோ ரேஎர் உடைத்து. 1053

இரத்தலும் ஈதலே போலும் கரத்தல்
கனவிலும் தேற்றாதார் மாட்டு. 1054

கரப்பிலார் வையகத்து உண்மையான் கண்ணின்று
இரப்பவர் மேற்கொள் வது. 1055

கரப்பிடும்பை இல்லாரைக் காணின் நிரப்பிடும்பை
எல்லாம் ஒருங்கு கெடும். 1056

இகழ்ந்தெள்ளாது ஈவாரைக் காணின் மகிழ்ந்துள்ளம்
உள்ளுள் உவப்பது உடைத்து. 1057

இரப்பாரை இல்லாயின் ஈர்ங்கண்மா ஞாலம்
மரப்பாவை சென்றுவந் தற்று. 1058

ஈவார்கண் என்னுண்டாம் தோற்றம் இரந்துகோள்
மேவார் இலாஅக் கடை 1059

இரப்பான் வெகுளாமை வேண்டும் நிரப்பிடும்பை
தானேயும் சாலும் கரி. 1060

याचना से डरना

मानहरी याचन से डरना

1061. कपटहीन जो प्यार से, देते सम्यक दान ।
उनसे भी नहि माँगना, कोटि गुणा गुणवान ।।

1062. नर जीवित हो भीख से, विधि-विचार हो जाय ।
तो याचक सम घूमकर, वह भी मर मिट जाय ।।

1063. निर्धन दुख तो भीख से, दूर किया ही जाय ।
ऐसे धैर्य विचार से, और न बली उपाय ।।

1064. दुखकर दारिद-समय में, अयाचना की नीति ।
दुनिया से व्यापक बडी, रख लें महिमा रीति ।।

1065. निर्मल नीरसमान है, स्वार्जित सुपक्व पीच ।
उसका सेवन मधुरतम, बाकी रस है नीच ।।

1066. पशु को पानी चाहिए, यों याचन की नीति ।
सूचक जिह्वा के लिए, अवगौरव की रीति ।।

1067. कपटी से नहि याचना, यदपि पडें भी माँग ।
यों याचक जन से सदा, मैं ही लूँगा माँग ।।

1068. माँगनरूपी नाव यदि, बिना त्राण रह जाय ।
तो छिपावमय भूमि से, टकराकर मिट जाय ।।

1069. याचन-दुख की याद से, चित्त पिघल हो जाय ।
छल-अदान की याद से, मन तो मर मिट जाय ।।

1070. "दान मना है" श्रवण कर, याचक तजते प्राण ।
वित्त छिपाये मनुज के, कहाँ गुप्त हो प्राण ।।

107. THE DEAD OF BEGGING

107. இரவச்சம்

கரவாது உவந்தீயும் கண்ணன்னார் கண்ணும்
இரவாமை கோடி யுறும். 1061

இரந்தும் உயிர்வாழ்தல் வேண்டின் பரந்து
கெடுக உலகியற்றி யான். 1062

இன்மை இடும்பை இரந்துதீர் வாமென்னும்
வன்மையின் வன்பாட்டது இல். 1063

இடமெல்லாம் கொள்ளாத் தகைத்தே இடமில்லாக்
காலும் இரவொல்லாச் சால்பு. 1064

தெண்ணீர் அடுபுற்கை யாயினும் தாள்தந்தது
உண்ணலி னூங்கினியது இல். 1065

ஆவிற்கு நீரென்று இரப்பினும் நாவிற்கு
இரவின் இளிவந்தது இல். 1066

இரப்பன் இரப்பாரை எல்லாம் இரப்பின்
கரப்பார் இரவன்மின் என்று. 1067

இரவென்னும் ஏமாப்பில் தோணி கரவென்னும்
பார்தாக்கப் பக்கு விடும். 1068

இரவுள்ள உள்ளம் உருகும் கரவுள்ள
உள்ளதூஉம் இன்றிக் கெடும். 1069

கரப்பவர்க்கு யாங்கொளிக்குங் கொல்லோ இரப்பவர்
சொல்லாடப் போஒம் உயிர். 1070

नीच जन - **शुभगुण विहीन नीचों का स्वभाव**

1071. नीच लोग आकार से, अन्य जनों के तुल्य ।
औ चीजों में जगत की, नहि है ऐसा तुल्य ।।

1072. निज हितविद मतिमान से, भाग्यवान है नीच ।
भला-बुरा का फिक्र नहि, उसके दिल के बीच ।।

1073. नीच मनुज भी जगत में, रहता देवसमान ।
मनमानी आचरणमें, दोनों एक-समान ।।

1074. अपने से जो अधम हैं उनको लखकर नीच ।
"हम उन से वर" बोलते सदर्प जनता-बीच ।।

1075. दण्ड भीति से नीचजन, अपनाते आचार ।
इच्छितार्थ भी वे कहीं, गहते हैं आचार ।।

1076. अपने श्रुत जो भेद हैं, उनको अपने आप ।
अन्यों से कहते अधम, समान ढोल-कलाप ।।

1077. कंठ पकड आघात बिनु, "जो फैलावे बाह ।
तो भी झाडेंगे नहीं औछे झूठी बाँह ।।

1078 दुख सुनते ही उच्चजन, होते और सहाय ।
पिष्ट ईखसम नीच जन बनते अन्यसहाय ।।

1079. पोषित सज्जित और को, यदि देखे जन नीच ।
तो उसका झट जलन से, दूषण करें गलीज ।।

1080. किस धंधे के योग्य नहिं, यदि संकट पड जाय ।
नीच लोग तो आप ही, क्रीतदास बन जाय ।।

(अर्थ कांड समाप्त)

108. கயமை

மக்களே போல்வர் கயவர் அவரன்ன
ஒப்பாரி யாங்கண்டது இல். 1071

நன்றறி வாரிற் கயவர் திருவுடையர்
நெஞ்சத்து அவலம் இலர். 1072

தேவர் அனையர் கயவர் அவருந்தாம்
மேவன செய்தொழுக லான். 1073

அகப்பட்டி ஆவாரைக் காணின் அவரின்
மிகப்பட்டுச் செம்மாக்கும் கீழ். 1074

அச்சமே கீழ்களது ஆசாரம் எச்சம்
அவாஉண்டேல் உண்டாம் சிறிது. 1075

அறைபறை அன்னர் கயவர்தாம் கேட்ட
மறைபிறர்க்கு உய்த்துரைக்க லான். 1076

ஈர்ங்கை விதிரார் கயவர் கொடிறுடைக்கும்
கூன்கைய ரல்லா தவர்க்கு. 1077

சொல்லப் பயன்படுவர் சான்றோர் கரும்புபோல்
கொல்லப் பயன்படும் கீழ். 1078

உடுப்பதூஉம் உண்பதூஉம் காணின் பிறர்மேல்
வடுக்காண வற்றாகும் கீழ். 1079

எற்றிற் குரியர் கயவரொன்று உற்றக்கால்
விற்றற்கு உரியர் விரைந்து. 1080

कामकांड गांधर्वविवाहाध्याय दर्शन व वितर्क
लावण्यकी पीडा गुप्तसंयोग

प्रिय—(स्वगत)

1081. क्या यह सूर की अंगना, या तो श्रेष्ठ मयूर ।
या कुण्डलधर मानुषी, मन शक से भरपूर ।।

1082. ऐसा लगता है मुझे, इसके नयन विलोक ।
मानो देवी सैन्ययुत, उतरी हो भूलोक ।।

1083. समझ लिया मैंने अभी, स्त्रीत्व भाव के साथ ।
धर्मराज रणरत रहें, विशाल दृग के साथ ।।

1084. स्त्रीगुणयुत इस युवति के यों दीखें दृगजाल ।
दर्शक जन के प्राण का घातक औ विकराल ।।

1085. इसकी आँखें दीखती, धर्मराज की भाँति ।
या हो दृगगुणसहित हो, या हो मृग की भाँति ।।

1086. इसकी आंखें अगर हो, छादित भौं से भीम ।
तो वे मुझको कंपकर, दुखद नही निस्सीम ।।

1087. इसके उन्नत पयद पर, थित दिखते परिधान
मत्त करी के वदन पर, रचे हुए परिधान ।।

1088 रण थल में रिपु को भयद, मेरी कायिक शक्ति ।
इसके ललाट-नजर में, बनी पराजित शक्ति ।।

1089. मृग-नयनी इस युवति को, भूषित शरम विलोक ।
बाकी गहने वहन से, लाभ न कहता लोक ।।

1090. मद्यप को मधु-पान से, मिलता है आनंद ।
दर्शित सब को प्यार तो, देता है आनंद ।।

109. தகையணங்குறுத்தல்

அணங்குகொல் ஆய்மயில் கொல்லோ கனங்குழை
மாதர்கொல் மாலுமென் நெஞ்சு. 1081

நோக்கினாள் நோக்கெதிர் நோக்குதல் தாக்கணங்கு
தானைக்கொண் டன்னது உடைத்து. 1082

பண்டறியேன் கூற்றென் பதனை இனியறிந்தேன்
பெண்டகையால் பேரமர்க் கட்டு. 1083

கண்டார் உயிருண்ணும் தோற்றத்தால் பெண்டகைப்
பேதைக்கு அமர்த்தன கண். 1084

கூற்றமோ கண்ணோ பிணையோ மடவரல்
நோக்கம்இம் மூன்றும் உடைத்து. 1085

கொடும்புருவம் கோடா மறைப்பின் நடுங்கஞர்
செய்யல மன்இவள் கண். 1086

கடாஅக் களிற்றின்மேல் கட்படாம் மாதர்
படாஅ முலைமேல் துகில். 1087

ஒண்ணுதற் கோஒ உடைந்ததே ஞாட்பினுள்
நண்ணாரும் உட்குமென் பீடு. 1088

பிணையேர் மடநோக்கும் நாணும் உடையாட்கு
அணிஎவனோ ஏதில தந்து. 1089

உண்டார்கண் அல்லது அடுநறாக் காமம்போல்
கண்டார் மகிழ்செய்தல் இன்று. 1090

संकेत जानना - भावपरिज्ञान

प्रिय (स्वगत) —

1091. प्यारी की इक दृष्टि है, दुखद रोग का मूल ।
इसकी अपरा दृष्टि है रोगहरण का मूल ।।

1092. प्यार-विषय में नैन की, कपटमयी लघु दृष्टि ।
आधा से भी अधिक औ, दिख पडती गुरु दृष्टि ।।

1093. मुझ को लखकर प्रेमिका, सलज्ज हुई विनम्र ।
प्यार-फसल का नीरसम, थीं उसकी कृति नम्र ।।

1094. जब लखता हूँ मैं उसे, तब वह लखती भूमि ।
जबकि न लखता तब मुझे, लख हसती, नहि भूमि ।।

1095. यदपि न वह सीधी नजर, रखती मेरी ओर ।
फिर भी तिरछीं नज़र से, देख हसी मम ओर ।।

1096. यदपि पराया सदृश वह, बोलें कड़वी बात ।
तो भी रिपु की बात नहि, जल्दी होगी ज्ञात ।।

1097. द्वेषहीन कटु वचन औ, रिपुसम दृष्टि-निपात ।
अन्यसदृश थित मित्र की, सांकेतिक हैं बात ।।

1098. मैं जब लखता हूँ उसे, तब वह हँसती मंद ।
चंचल उसके हास्य में, दिखता रूप अमंद ।।

सखी — प्रिय से

1099. परिचयविहीन मनुजसम, साधारण अवलोक ।
प्रेमी गण में सहज हो, यों कहते हैं लोग ।।

1100. अगर परस्पर पीव-दृग लखके इक हो जाय ।
फिर तो वार्तालाप से, लाभ न समझा जाय ।।

110. குறிப்பறிதல்

இருநோக்கு இவளுண்கண் உள்ளது ஒருநோக்கு
நோய்நோக்கொன் றந்நோய் மருந்து. 1091

கண்களவு கொள்ளும் சிறுநோக்கம் காமத்தில்
செம்பாகம் அன்று பெரிது. 1092

நோக்கினாள் நோக்கி இறைஞ்சினாள் அஃதவள்
யாப்பினுள் அட்டிய நீர். 1093

யான்நோக்குங் காலை நிலன்நோக்கும் நோக்காக்கால்
தான்நோக்கி மெல்ல நகும். 1094

குறிக்கொண்டு நோக்காமை அல்லால் ஒருகண்
சிறக்கணித்தாள் போல நகும். 1095

உறாஅ தவர்போல் சொலினும் செறாஅர்சொல்
ஒல்லை உணரப் படும். 1096

செறாஅச் சிறுசொல்லும் செற்றார்போல் நோக்கும்
உறாஅர்போன்று உற்றார் குறிப்பு. 1097

அசையியற்கு உண்டாண்டோர் ஏஎர்யான் நோக்கப்
பசையினள் பைய நகும். 1098

ஏதிலார் போலப் பொதுநோக்கு நோக்குதல்
காதலார் கண்ணே யுள. 1099

கண்ணொடு கண்ணிணை நோக்கொக்கின் வாய்ச்சொற்கள்
என்ன பயனும் இல. 1100

संभोग का आनंद

प्रिय स्वगत—

1101. श्रुति, दर्शन, रसना तथा स्पर्श-गंध सुख-भोग ।
छवियुतवलयी नारि में, मिलते नहि औ भोग ।।

1102. दवा रोग की और है पर यह भूषित नार ।
मदन रोग का आप ही, करती है परिहार ।।

प्रिय सखीसे—

1103. निज, इच्छित स्त्रीं-कँध पर, तन रख शैय्या भोग ।।
श्रीधर के वैकुंठ से, बडा सुखद है भोग ।।

1104. यह स्त्री किस संसार में, पाती ऐसी आग ।
विरह-मिलन में तप्त औ शीतल हो जो आग ।।

प्रिय सखीसे —

1105 कुसुमकेश धर युवति के, कंधे इच्छित काल ।
इच्छित माल-समान हैं देते सुख तत्काल ।।

1106. इस नारी के कंध के, स्पर्शन से मम प्राण ।
वर्द्धित हैं इस हेतु से अमृतज कंधविधान ।।

1107. बितरण से निज द्रव्य के, मिलता है जो सौख्य ।
नारी के आश्लेष से मिलता है वह सौख्य ।।

1108. गाढ़ालिंगन आपसी, बिच बिन हवा-प्रवेश ।
प्रेमी जनता के लिए, सुखकर यह आश्लेष ।।

1109. प्रणयकलह, और संधिकर, तथा मिलन उपभोग ।
प्रेमी जनता के लिए, सिद्ध हुए सुखभोग ।।

प्रिय स्वगत—

1110. ज्यों दिखती है मूढ़ता, अधिक सोच के बाद ।
मोद सजी में त्यों मिले बहु रंभण के बाद ।।

111. DELIGHT OF INTER-COURSE

111. புணர்ச்சி மகிழ்தல்

கண்டுகேட்டு உண்டுயிர்த்து உற்றறியும் ஐம்புலனும்
ஒண்டொடி கண்ணே உள. 1101

பிணிக்கு மருந்து பிறமன் அணியிழை
தன்நோய்க்குத் தானே மருந்து. 1102

தாம்வீழ்வார் மென்றோள் துயிலின் இனிதுகொல்
தாமரைக் கண்ணான் உலகு. 1103

நீங்கின் தெறூஉம் குறுகுங்கால் தண்ணென்னும்
தீயாண்டுப் பெற்றாள் இவள். 1104

வேட்ட பொழுதின் அவையவை போலுமே
தோட்டார் கதுப்பினாள் தோள். 1105

உறுதோறு உயிர்தளிர்ப்பத் தீண்டலால் பேதைக்கு
அமிழ்தின் இயன்றன தோள். 1106

தம்மில் இருந்து தமதுபாத்து உண்டற்றால்
அம்மா அரிவை முயக்கு. 1107

வீழும் இருவர்க்கு இனிதே வளியிடை
போழப் படாஅ முயக்கு. 1108

ஊடல் உணர்தல் புணர்தல் இவைகாமம்
கூடியார் பெற்ற பயன். 1109

அறிதோறு அறியாமை கண்டற்றால் காமம்
செறிதோறும் சேயிழை மாட்டு. 1110

नायक के द्वारा नायिका की सुन्दरता का वर्णन

प्रिय स्वगत—

1111. प्रसून "अनिच्च" ओ जियें, यदपि रहें मृदुभाव।
तो भी मेरी प्रेमिका, रखती मृदुतर भाव ।।

1112. प्यारी के दृग बहु-लखे, मम, मन, फूल समान।
मधुर समझकर जब लखें तब नहि चेष्ठावान ।।

प्रिय सखासे—

1113. प्यारी-कंत्रे बेगुसम, पल्लवसम हो रंग।
मोतीसम रद, शूल सम, दृग खुशबू सम अंग ।।

1114. ललना के दृग देखकर, नीलोत्पल के फूल।
सलज्ज नतसिर हो गए, समझ न निजानुकूल ।। ।

प्रिय स्वगत—

1115. "अनिच्च" की ठंडलसहित ढोके स्त्री-कटि-भाग।
बजने ना दें हितकरी वाद्यवृन्द के राग ।।

1116. स्त्री मुख तथैव चांद के, देखेबिना विभेद ।
तारे विमुग्धहो गये, शक से सदा सखेद ।।

1117. क्षय-होकर फिर पूर्ण हो शोभित शशि सकलंक।
पर नित महिला-वदन हो अतिशोभित निकलंक ।।

1118. रे शशि जिन्दावाद हो, यदि स्त्रीवदन-समान।
चमकदार बन जाय तो, तू प्रिय मेरा, जान ।।

1119. रे शशि चाहे अगर तू कुसुमनयन-मुख भाव।
तो कइयों के सामने, ना हो प्रादुर्भाव ।।

प्रिय सखीसे—

1120. प्रसून "अनिच्च" हंस-पर, क्षुपसम कांटेदार ।
स्त्री-मृदु कदमों के लिए, दुखद कर्कशाकार ।।

112. நலம் புனைந்துரைத்தல்

நன்னீரை வாழி அனிச்சமே நின்னினும்
மென்னீரள் யாம்வீழ் பவள். 1111

மலர்காணின் மையாத்தி நெஞ்சே இவள்கண்
பலர்காணும் பூவொக்கும் என்று. 1112

முறிமேனி முத்தம் முறுவல் வெறிநாற்றம்
வேலுண்கண் வேய்த்தோள் அவட்கு. 1113

காணிற் குவளை கவிழ்ந்து நிலன்நோக்கும்
மாணிழை கண்ணொவ்வேம் என்று. 1114

அனிச்சப்பூக் கால்களையாள் பெய்தாள் நுசுப்பிற்கு
நல்ல படாஅ பறை. 1115

மதியும் மடந்தை முகனும் அறியா
பதியிற் கலங்கிய மீன். 1116

அறுவாய் நிறைந்த அவிர்மதிக்குப் போல
மறுவுண்டோ மாதர் முகத்து. 1117

மாதர் முகம்போல் ஒளிவிட வல்லையேல்
காதலை வாழி மதி. 1118

மலரன்ன கண்ணாள் முகமொத்தி யாயின்
பலர்காணத் தோன்றல் மதி. 1119

அனிச்சமும் அன்னத்தின் தூவியும் மாதர்
அடிக்கு நெருஞ்சிப் பழம். 1120

प्यार की विशेषता बताना
निज प्यार की अधिकता बताना

प्रिय स्वगत—

1121 पय में मिश्रित शहद ज्यों, होता है सुस्वाद ।
सुभाषिनी की लार त्यों, सितरद्गत सुस्वाद ।।

1122. जैसा तन औ प्राण का, हो घनिष्ठ संबन्ध ।
वैसा मम इस नारि से, हो प्यारा संबन्ध ।।

1123. दृगपुतली निकल तू, जानें यही निदान ।
सुभालयुत मम नारि को इच्छित नहिं है स्थान ।।

1124 सुविभूषित स्त्री-मिलन-से, मैं हूँ अमृतासन्न ।
मम प्यारी के विरह से, मैं हूँ मरणासन्न ।।

प्रिय सखी से—

1125. रणकर छवियुत लोचनी, विस्मृति में न विलीन ।
सदैव उसके शील की, स्मृति में मैं हूँ लीन ।।

प्रिया स्वगत—

1126. प्रेमी दृग में से कभी, नहिं जाते औ राह ।
पलक मारने से मृदुल, वे नहिं करते आह ।।

1127. ओ प्रेमी दृग में बसे, काजल से प्रिय-लोप ।
हो यों दृग मे सोच हो, काजल लेपन-लोप ।।

1128. प्रेमी ठहरे जिगर में, ना हो लापरवाह ।
करे नहीं भोजन गरम, ताकि न हो प्रिय-दाह ।।

1129 प्रिय-ओझल की भीति से, खोल न करती नैन ।
पुर-जन उसको कोसते, विरक्त वह दिन रैन ।।

1130. प्रिय दिल में नित है बसा, जाने बिन यह बात ।
पुरजन निर्मम कह उसे, करते निंदित बात ।।

113. COGNIZING THE EXCELLENCE OF LOVE

113. காதற் சிறப்புரைத்தல்

பாலொடு தேன்கலந் தற்றே பணிமொழி
வாலெயிறு ஊறிய நீர். 1121

உடம்பொடு உயிரிடை என்னமற் றன்ன
மடந்தையொடு எம்மிடை நட்பு. 1122

கருமணியிற் பாவாய்நீ போதாய்யாம் வீழும்
திருநுதற்கு இல்லை இடம். 1123

வாழ்தல் உயிர்க்கன்னள் ஆயிழை சாதல்
அதற்கன்னள் நீங்கு மிடத்து. 1124

உள்ளுவன் மன்யான் மறப்பின் மறப்பறியேன்
ஒள்ளமர்க் கண்ணாள் குணம். 1125

கண்ணுள்ளின் போகார் இமைப்பின் பருவரார்
நுண்ணியர்எங் காத லவர். 1126

கண்ணுள்ளார் காத லவராகக் கண்ணும்
எழுதேம் கரப்பாக்கு அறிந்து. 1127

நெஞ்சத்தார் காத லவராக வெய்துண்டல்
அஞ்சுதும் வேபாக்கு அறிந்து. 1128

இமைப்பின் கரப்பாக்கு அறிவல் அனைத்திற்கே
ஏதிலர் என்னும்இவ் வூர். 1129

உவந்துறைவர் உள்ளத்துள் என்றும் இகந்துறைவர்
ஏதிலர் என்னும்இவ் வூர். 1130

लज्जा का परित्याग बताना

काम भाव से लज्जा खोने की बात बताना

प्रिय: सखी से—

1131. मुक्त काम फिर काम से, पीडित हुए पुमान ।
ताडपत्रमयहय चढें, "मडल-रीति" बलवान ।।

1132. विरह खेद ही बिन सहे, शरीर तथा हि प्राण ।
लाज छोड़कर "मडल" का पथ चढने धृतिमान ।।

1133. सद् पौरुष औ लाजगुण, मुझ को कल थे प्राप्त ।
कामी बन लेना "मडल" आज मुझे है प्राप्त ।।

1134. सद् पौरुष औ लाज की, नौका भी गतिमान ।
उसे बहन कर ले गयी, काम-बाढ बलवान ।।

1135. मालासम कंगनधरी, मेरी प्यारी शाम ।
दुख व "मडल" चढना मुझे, देती थी अविराम ।।

1136. प्यारी-वियोग यादकर, नींद न लेते नैन ।
स्मृति आती है "मडल" की, ही भी आधी रैन ।।

1137. सागरसम स्मर-रोग से, यदपि दुखी स्त्रीजात ।
फिर भी सहिष्णु बिन 'मडल' सचमुच विशेष जात ।।

प्रिया स्वगत—

1138. संयमविहीन स्त्रीहृदय औ अति है ही दयनीय ।
यों न सोचकर बिनु छिपे, काम हुआ प्रकटीय ।।

1139. सबको विदित न आप को, यों विचार मम काम ।
नगर-गली में घूमता, मोहित हो अविराम ।।

1140. हमें जैसे दुख भोगने, नही मिला अवकाश ।
हमें देखकर नासमझ, जन करते है हास ।।

114. UNASHAMED BEHAVIOUR

114. நாணுத் துறவுரைத்தல்

காமம் உழந்து வருந்தினார்க்கு ஏமம்
மடலல்லது இல்லை வலி. 1131

நோனா உடம்பும் உயிரும் மடலேறும்
நாணினை நீக்கி நிறுத்து. 1132

நாணொடு நல்லாண்மை பண்டுடையேன் இன்றுடையேன்
காமுற்றார் ஏறும் மடல். 1133

காமக் கடும்புனல் உய்க்குமே நாணொடு
நல்லாண்மை என்னும் புணை. 1134

தொடலைக் குறுந்தொடி தந்தாள் மடலொடு
மாலை உழக்கும் துயர். 1135

மடலூர்தல் யாமத்தும் உள்ளுவேன் மன்ற
படல்ஒல்லா பேதைக்கென் கண். 1136

கடலன்ன காமம் உழந்தும் மடலேறாப்
பெண்ணின் பெருந்தக்கது இல். 1137

நிறையரியர் மன்அளியர் என்னாது காமம்
மறையிறந்து மன்று படும். 1138

அறிகிலார் எல்லாரும் என்றேஎன் காமம்
மறுகின் மறுகும் மருண்டு. 1139

யாங்கண்ணின் காண நகுப அறிவில்லார்
யாம்பட்ட தாம்படா வாறு. 1140

प्रवाद बताना

अन्यों से आरोपित प्रवाद को बताना

प्रिय: सखी से:—

1141. प्रवाद से मम प्यार के होंगे स्थायी प्राण ।
मुझे विदित यह भाग्य से, पुरजन हो अनजान ।।

1142. कुसुमदृगी की श्रेष्ठता, जाने बिन पुर-लोग ।
हुए सहायक बोलकर, प्रेमी के अभियोग ।।

1143 पुरजन के अभियोग से, यदपि न अब संयोग ।
तो भी प्रवाद सुखद हो, प्राप्त संदृश संयोग ।।

1144. पुरजन के अपवाद से, होता प्यार-विकास ।
बिनु प्रवाद खोकर दशा, कृश हो प्यार-विलास ।।

1145. पीं पीकर मद्यप सुरा, ज्यों, हो मधु पर सक्त ।
लगा लगाकर दोष त्यों, काम सुखद हो शक्त ।।

प्रिया: सखी से—

1146. नायक को मैंने लखा, इक ही वासर-मात्र ।
प्रवाद फैला किन्तु तो, फणिसम पर शशिगात्र ।।

1147. प्यार-फजल को है बनी, प्रवाद रूपी खाद ।
वह बढती औ नीर बन, माँ की कठोर बात ।।

1148. पुरजन के अपवाद से, प्रेम-दमन की बात ।
ज्यों घी से शांत अनल त्यों नहि संभव-बात ।।

1149. जिसने कह दी एकदा, निर्भयता की बात ।
क्यों वह अब अपवाद से, सोचें लज्जित बात ।।

सखी प्रिया से—

1150. निज वांछित अभियोग हैं फैलाते पुर-लोग ।
प्रेमी जन सह-गमन में, देगा ही सहयोग ॥

115. அலர் அறிவுறுத்தல்

அலரெழ ஆருயிர் நிற்கும் அதனைப்
பலரறியார் பாக்கியத் தால். 1141

மலரன்ன கண்ணாள் அருமை அறியாது
அலரெமக்கு ஈந்ததிவ் வூர். 1142

உறாஅதோ ஊரறிந்த கௌவை அதனைப்
பெறாஅது பெற்றன்ன நீர்த்து. 1143

கவ்வையால் கவ்விது காமம் அதுஇன்றேல்
தவ்வென்னும் தன்மை இழந்து. 1144

களித்தொறும் கள்ளுண்டல் வேட்டற்றால் காமம்
வெளிப்படுந் தோறும் இனிது. 1145

கண்டது மன்னும் ஒருநாள் அலர்மன்னும்
திங்களைப் பாம்புகொண் டற்று. 1146

ஊரவர் கௌவை எருவாக அன்னைசொல்
நீராக நீளும்இந் நோய். 1147

நெய்யால் எரிநுதுப்பேம் என்றற்றால் கௌவையால்
காமம் நுதுப்பேம் எனல். 1148

அலர்நாண ஒல்வதோ அஞ்சலோம்பு என்றார்
பலர்நாண நீத்தக் கடை. 1149

தாம்வேண்டின் நல்குவர் காதலர் யாம்வேண்டும்
கௌவை எடுக்கும்இவ் வூர். 1150

पातिव्रत - विरह ताप की असहयता

सखी प्रिय से—

1151. यदि हो अब अवियोग तो, मुझे बताया जाय।
और जनों को फिर मिलन, तभी बताया जाय ॥

प्रिया सखी से—

1152. पहले तो उनकी नजर, देती थी आनंद।
वियोग भय से दुखद है, अब उनका संबन्ध ॥
1153. सुधी प्यार का इकसमय, हो तो घटित वियोग।
प्रिय वाणी अवियोग पर, आस न रखते लोग।
1154. प्रिय अभयद जो व्यक्ति यदि, बिछुडा फिर हो जाय।
उनके वच का प्रत्ययी, दोषी नहि बन जाय ॥
1155. प्रिय वियोग होने कभी, अवसर दिया न जाय।
बिछुडा प्रियजन फिर मिलें, यह दुर्लभ हो जाय ॥
1156 प्रिय यदि होकर निर्दयी, कहते विरह-विचार।
तो निराश उनका बनें, फिर आगमन-विचार ॥
1157 नेता जन के विरह की पीडा दायक बात।
नेत्री-कृश-कर बलय से हो जाती है ज्ञात ॥
1158. विनु इंगितविद सहचरी, जीना है दुखमूल।
बढकर उससे प्रियविरह, माना है दुखमूल।
1159. छूने से ही वायुसख, देता है संताप।
कामरोग तो विरह में देता है बहुताप ॥
1160. प्रिय-वियोग स्वीकार कर विरह-ताप कर नाश।
स्त्रियाँ बहुत ही विरहिनी, जीती हैं न निराश ॥

116. பிரிவாற்றாமை

செல்லாமை உண்டேல் எனக்குரை மற்றுநின்
வல்வரவு வாழ்வார்க்கு உரை. 1151

இன்கண் உடைத்தவர் பார்வல் பிரிவஞ்சும்
புன்கண் உடைத்தால் புணர்வு. 1152

அரிதரோ தேற்றம் அறிவுடையார் கண்ணும்
பிரிவோ ரிடத்துண்மை யான். 1153

அளித்தஞ்சல் என்றவர் நீப்பின் தெளித்தசொல்
தேறியார்க்கு உண்டோ தவறு. 1154

ஓம்பின் அமைந்தார் பிரிவோம்பல் மற்றவர்
நீங்கின் அரிதால் புணர்வு. 1155

பிரிவுரைக்கும் வன்கண்ண ராயின் அரிதவர்
நல்குவர் என்னும் நசை. 1156

துறைவன் துறந்தமை தூற்றாகொல் முன்கை
இறைஇறவா நின்ற வளை. 1157

இன்னாது இனன்இல்ஊர் வாழ்தல் அதனினும்
இன்னாது இனியார்ப் பிரிவு. 1158

தொடிற்சுடின் அல்லது காமநோய் போல
விடிற்சுடல் ஆற்றுமோ தீ. 1159

அரிதாற்றி அல்லல்நோய் நீக்கிப் பிரிவாற்றிப்
பின்இருந்து வாழ்வார் பலர். 1160

वियोगिनी नायिका का विरह विलाप

प्रिया सखी से:—

1161. छिपा रही हूँ रातदिन, मन्मथ का ज्वर ताप ।
पर सिंचन में स्रोत सम व्यक्त हुआ ज्वर-ताप ।।

1162. मैं नहि सकती हूँ छिपा, प्रिय से उत्थित रोग ।
प्रिय से स्मररूज-कथन में हो लज्जा का भोग ।।

1163. मेरे तनगत जीव की, काँवर की इक ओर ।
इच्छा दुस्सह लटकती, तथा लाज औ ओर ।।

1164. काम सिन्धु गंभीर से, स्थिर हो विराजमान ।
उसी उदधि को तारने, नहि बचाव जलयान ।।

1165. दोस्ती के हो समय में, दुखकर जो बन जाय ।
रिपुता में उससे दुखद, क्या ही किया न जाय ।।

1166. मिलन समय में सिन्धुसम, लगती चाह महान ।
विरह ताप में चाह वह, दधि से भी सुमहान ।

1167. काम-स्रोत में तैरकर, नहि पाती हूँ पार ।
एकांकी मैं रात भर, जागृत हूँ अविकार ।।

1168. निद्रित करती जीव गण, सब को दयालु रात ।
निशिसहाय मैं ही बनी, तज निद्रा की बात ।।

1169. विलंब समान आजकल लगता है निशि-काल ।
बिछुडे के भी सितम से निशि बनती विकराल ।।

1170. मनोवेग सम दृग अगर, दौडें प्रिय के पास ।
तो प्रवाहमय अश्रु में, सज्जन की नहि आस ।

117. PANGS OF SEPARATION

117. படர் மெலிந்து இரங்கல்

மறைப்பேன்மன் யானிஃதோ நோயை இறைப்பவர்க்கு
ஊற்றுநீர் போல மிகும். 1161

கரத்தலும் ஆற்றேன்இந் நோயைநோய் செய்தார்க்கு
உரைத்தலும் நாணுத் தரும். 1162

காமமும் நாணும் உயிர்காவாத் தூங்கும்என்
நோனா உடம்பி னகத்து. 1163

காமக் கடல்மன்னும் உண்டே அதுநீந்தும்
ஏமப் புணைமன்னும் இல். 1164

துப்பின் எவனாவர் மன்கொல் துயர்வரவு
நட்பினுள் ஆற்று பவர். 1165

இன்பம் கடல்மற்றுக் காமம் அஃதடுங்கால்
துன்பம் அதனிற் பெரிது. 1166

காமக் கடும்புனல் நீந்திக் கரைகாணேன்
யாமத்தும் யானே உளேன். 1167

மன்னுயிர் எல்லாம் துயிற்றி அளித்திரா
என்னல்லது இல்லை துணை. 1168

கொடியார் கொடுமையின் தாம்கொடிய இந்நாள்
நெடிய கழியும் இரா. 1169

உள்ளம்போன்று உள்வழிச் செல்கிற்பின் வெள்ளநீர்
நீந்தல மன்னோஎன் கண். 1170

विरहिनी की व्यथित आँखें

प्रिया सखी से –

1171. नयन दिखाकर नाथ को, हुए कामरूज मूल ।
क्यों पर वे दृग विरह में, बने रुदन के मूल।।

1172. कल दिल में सोचे बिना, प्रिय को देखे नैन ।
निजी भूल जाने बिना आज हुए बेचैन ।।

1173. प्रिय को उस दिन देखकर, आँखें बनी सकाम ।
अभी बहाना अश्रुजल, मजाक का यह काम ।।

1174. काजल युत दृग चित में, कर पैदा स्मर-ताप ।
रो रो कर सूखे हुए, आँसू बिनु ही आप ।।

1175. सागर से विभु कामरूज पैदा कर मम नैन ।
अनिद्र-सुख अब भोग कर, रहते हैं बेचैन ।।

1176. पैदा करके चित्त में काम-रोग मम नैन ।
बिनु निद्रा दुख में पडे, यह भी अच्छी सैन ।।

1177. पसन्दकर प्रिय को लखे, मेरे लोचन आज ।
बिलख बिलख कर अस्रुबिन, सूखे रहें विराज ।।

1178. मन से नहि, वाक से दर्शाया ही नेह ।
प्रिय को दृग देखे बिना, आतुर निस्संदेह ।।

1179. प्रिय के सुयोग विरह में नींद न लेते नैन ।
इसी तरह का शोक दुख पाते हैं दिन-रैन ।।

1180. मेरे सम दृष्टिधर का, घोषित पटह-समान ।
भेद जानना नगर की जनता को आसान ।।

118. PINING FOR THE SIGHT OF THE LOVER

118. கண்விதுப்பழிதல்

கண்தாம் கலுழ்வ தெவன்கொலோ தண்டாநோய்
தாம்காட்ட யாம்கண் டது. 1171

தெரிந்துணரா நோக்கிய உண்கண் பரிந்துணராப்
பைதல் உழப்பது எவன். 1172

கதுமெனத் தாம்நோக்கித் தாமே கலுழும்
இதுநகத் தக்கது உடைத்து. 1173

பெயலாற்றா நீருலந்த உண்கண் உயலாற்றா
உய்வில்நோய் என்கண் நிறுத்து. 1174

படலாற்றா பைதல் உழக்கும் கடலாற்றாக்
காமநோய் செய்தஎன் கண். 1175

ஓஒ இனிதே எமக்கிந்நோய் செய்தகண்
தாஅம் இதற்பட் டது. 1176

உழந்துழந்து உள்நீர் அறுக விழைந்திழைந்து
வேண்டி யவர்க்கண்ட கண். 1177

பேணாது பெட்டார் உளர்மன்னோ மற்றவர்க்
காணாது அமைவில கண். 1178

வாராக்கால் துஞ்சா வரின்துஞ்சா ஆயிடை
ஆரஞர் உற்றன கண். 1179

மறைபெறல் ஊரார்க்கு அரிதன்றால் எம்போல்
அறைபறை கண்ணா ரகத்து. 1180

विरहिनी के मन में पीलापन से उत्थित शोक

प्रिय, स्वगत—

1181. मैंने प्रिय के विरह को मान लिया उस काल ।
अब मैं किससे क्या कहूँ पीलापन का हाल ।।

प्रिया सखी से—

1182. प्रिय ने मुझ को दे दिया सगर्व पीला रंग ।
फैल रहा है वह अभी, मेरे सारे अंग ।।

1183. प्रियने मुझ से हड़प लीं, सुन्दरता औ लाज ।
बदले में दी पीलिया, औ मन्मथरुज आज ।।

1184. प्रिय के वच में सोचती, करती प्रिय-गुण गान ।
फिर भी आयी पीलिया विदित न छल या आन ।।

1185 मेरा प्रिय तजकर मुझे, जाता उधर विलोक ।
तन पर फैली पीलिया, इधर सतत अवलोक ।।

1186. दीपशमन की तम यथा, लखता ही है राह ।
विवर्णता विश्लेष पर, रखती तथा निगाह ।।

1187. प्रिय के आश्लेष से, विरत रही जिस काल ।
पीलापन मम देह भर, फैल गया उस काल ।।

1188. पीलापन इसको मिला यों सब कहते दोष ।
"इसको प्रियने क्यों तजा" कौन बोलता दोष ।।

1189. विरहमूल नायक अगर, सकुशल ही रह जाय ।
तो मेरा सारा, बदन, पीला ही हो जाय ।।

1190. विरही निर्दय यार का दूषण किया न जाय ।
तो मैं पीली से नाम मम, प्रचलित ही हो जाय ।।

119. GRIEVING AT THE CHANGE IN COMPLEXION

119. பசப்புறு பருவரல்

நயந்தவர்க்கு நல்காமை நேர்ந்தேன் பசந்தஎன்
பண்புயார்க்கு உரைக்கோ பிற. 1181

அவர்தந்தார் என்னும் தகையால் இவர்தந்தென்
மேனிமேல் ஊரும் பசப்பு. 1182

சாயலும் நாணும் அவர்கொண்டார் கைம்மாறா
நோயும் பசலையும் தந்து. 1183

உள்ளுவன் மன்யான் உரைப்பது அவர்திறமால்
கள்ளம் பிறவோ பசப்பு. 1184

உவக்காண்எம் காதலர் செல்வார் இவக்காண்என்
மேனி பசப்பூர் வது. 1185

விளக்கற்றம் பார்க்கும் இருளேபோல் கொண்கண்
முயக்கற்றம் பார்க்கும் பசப்பு. 1186

புல்லிக் கிடந்தேன் புடைபெயர்ந்தேன் அவ்வளவில்
அள்ளிக்கொள் வற்றே பசப்பு. 1187

பசந்தாள் இவள்என்பது அல்லால் இவளைத்
துறந்தார் அவர்என்பார் இல். 1188

பசக்கமன் பட்டாங்கென் மேனி நயப்பித்தார்
நன்னிலையர் ஆவர் எனின். 1189

பசப்பெனப் பேர்பெறுதல் நன்றே நயப்பித்தார்
நல்காமை தூற்றார் எனின். 1190

अकेलापन से उत्थित दुख की अधिकता

प्रिय सखी से –

1191. इच्छित पति को प्राप्तकर, लब्धकाम स्त्री-लोग ।
बीज हीन फल हर्ष का, करते हैं उपभोग ।।

1192. जीवराशियों के लिए, ज्यों हो वृष्टि सहाय ।
त्यों प्यारी पर नाथ का, प्यार दिखाया जाय ।।

1193. पतिसनेहयुत विरहिनी, सहती है सुवियोग ।
पुनर्मिलन के गर्व से, यह भीं है शुभ-योग ।।

1194. जो नारी पति-नेह का, यदि न पात्र बन जाय ।
तो वह नारी पातकी, जग में समझी जाय ।।

1195. वांछित प्रियने दार पर, यदि न दिखाया नेह ।
तो प्रिय से क्या हो भला, चाहें दार सनेह ।।

1196. एक पक्ष का प्रेम ही, दुखदायक ठहराय ।
तुला भारसम आपसी, प्रेम सुखद ठहराय ।।

1197. एक तरफ में ही खडे, मन्मथ रणनिष्णात ।
ना जानें मेरी व्यथा, तथा रोग की बात ।।

1198. पति के मीठे वचन सुख, अलब्ध नारिसमान ।
धैर्यवान संसार में, नहि है कोई आन ।।

1199. मेरा प्रियतम यदि नहीं, दयासहित रह जाय ।
सुनना उसके शील तो, श्रुति-सुखकर हो जाय ।।

प्रिया मनसे—

1200. रे मन ! निदर्य यार से क्यों कहता निज क्लेश ।
त्यों कहना बेकार हो ज्यों शोषित रतनेश ।।

120. PANGS OF SEPARATION FROM THE LOVER

120. தனிப்படர் மிகுதி

தாம்வீழ்வார் தம்வீழப் பெற்றவர் பெற்றாரே
காமத்துக் காழில் கனி. 1191

வாழ்வார்க்கு வானம் பயந்தற்றால் வீழ்வார்க்கு
வீழ்வார் அளிக்கும் அளி. 1192

வீழுநர் வீழப் படுவார்க்கு அமையுமே
வாழுநம் என்னும் செருக்கு. 1193

வீழப் படுவார் கெழீஇயிலர் தாம்வீழ்வார்
வீழப் படாஅர் எனின். 1194

நாம்காதல் கொண்டார் நமக்கெவன் செய்பவோ
தாம்காதல் கொள்ளாக் கடை 1195

ஒருதலையான் இன்னாது காமம்காப் போல
இருதலை யானும் இனிது. 1196

பருவரலும் பைதலும் காணான்கொல் காமன்
ஒருவர்கண் நின்றொழுகு வான். 1197

வீழ்வாரின் இன்சொல் பெறாஅது உலகத்து
வாழ்வாரின் வன்கணார் இல். 1198

நசைஇயார் நல்கார் எனினும் அவர்மாட்டு
இசையும் இனிய செவிக்கு. 1199

உறாஅர்க்கு உறுநோய் உரைப்பாய் கடலைச்
செறாஅஅய் வாழிய நெஞ்சு. 1200

अनुभूत सुख यादकर रोना
प्रेमी के विरह सोचकर दुखी होना

प्रियासखी से —

1201. स्मृति करने से प्रेम की, होता अनंत हर्ष ।
सुरा-पान से प्रेम का, है सुखकर उत्कर्ष ।।

प्रियासखी से—

1202. वांछित स्त्री के स्मरण से, कोई नहि है कलेश ।
कितनी भी हो प्रीति विभु, वह सुखकर अक्लेश ।।

1203. मुँह से निर्गत छींक ज्यों विघ्नसदृश रुक जाय ।
त्यों प्रिय से मम याद का कपट किया ही जाय ।।

1204. प्रिय के दिल में मैं प्रिया, करती हूँ चिर वास ।
मेरे दिल में प्रिय सदा, करता है स्थिर वास ।।

1205. प्रिय निज दिल में नहि मुझे, देता रहता स्थान ।
पर मम दिल में शरम बिनु, वह क्यों गहता स्थान ।।

1206. प्रिययुतदिन का स्मरण कर, जीना है आसान ।
मेरा जीना अन्यथा, कभी नहीं आसान ।।

1207. प्रिययुतसुख भूली नहीं, विरहताप से तप्त ।
मैं प्रिय की विस्मृति करूँ, तो जीवन संतप्त ।।

1208. चाहे जितना यार का, स्मरण किया ही जाय ।
रिसै ना प्रिय को स्मरण से, उसका यही सहाय ।।

1209. प्रिय बोला मुझसे कभी, "हम दोनों नहि भिन्न" ।
पर अब उसकी विरति को, प्राण जानकर खिन्न ।।

प्रिया चंद्र से—

1210. मत छिप जा तू सोम हे, जीवित रह चिरकाल ।
बिछुडे प्रिय को देखने, लीलुप मम दृग-जाल ।।

121. நினைந்தவர் புலம்பல்

உள்ளினும் தீராப் பெருமகிழ் செய்தலால்
கள்ளினும் காமம் இனிது. 1201

எனைத்தொன்று இனிதேகாண் காமம்தாம் வீழ்வார்
நினைப்ப வருவதொன்று இல். 1202

நினைப்பவர் போன்று நினையார்கொல் தும்மல்
சினைப்பது போன்று கெடும். 1203

யாமும் உளேங்கொல் அவர்நெஞ்சத்து எம்நெஞ்சத்து
ஓஒ உளரே அவர். 1204

தம்நெஞ்சத்து எம்மைக் கடிகொண்டார் நாணார்கொல்
எம்நெஞ்சத்து ஓவா வரல். 1205

மற்றியான் என்னுளேன் மன்னோ அவரொடுயான்
உற்றநாள் உள்ள உளேன். 1206

மறப்பின் எவனாவன் மன்கொல் மறப்பறியேன்
உள்ளினும் உள்ளம் சுடும். 1207

எனைத்து நினைப்பினும் காயார் அனைத்தன்றோ
காதலர் செய்யும் சிறப்பு. 1208

விளியும்என் இன்னுயிர் வேறல்லம் என்பார்
அளியின்மை ஆற்ற நினைந்து. 1209

விடாஅது சென்றாரைக் கண்ணினால் காணப்
படாஅதி வாழி மதி. 1210

स्वप्न - दशा का कथन

प्रिया सखी से—

1211. निद्रा लेते समय मैं, प्रियतम का संदेश ।
वाहक सपने की मदद, क्यों न करूँ सविशेष ॥

1212. मेरी विनती से अगर, झषसमदृग हो सुप्त ।
तो प्रिय से जीवितदशा, बोलूँगी, अतिगुप्त ॥

1213. जो प्रिय मुझ पर जाग में, नहीं दिखाता नेह ।
लखकर उसको स्वप्न में, मैं जिन्दा दृढ-देह ॥

1214. प्रियने मेरी जाग में, नहीं दिखाता प्यार ।
उस पर सुखकर स्वप्न में होता मेरा प्यार ॥

1215. प्रिय को लखकर जो मिला, जागृति में सुखभोग ।
सपने में भी आज के, मिलें वही सुख भोग ॥

1216. जग में यदि जागृति-दशा, सदैव अविद्यमान ।
स्वप्नदृष्ट तो प्रिय नहीं, मुझ से विमुक्तिमान ॥

1217. प्रिय मम निष्ठुर जाग में, कभी न करता प्यार ।
निद्रा में आकर मुझे, देता शोक अपार ॥

1218. मेरा प्रिय सोते समय, कंधों पर आरूढ ।
तथैव जागृति-समय में, मानस पर आरूढ ॥

1219. जागति तथैव स्वप्न में प्रिय यदि है नहि दृष्ट ।
तो नारी से जगत में निंदित हो प्रिय धृष्ट ॥

1220. प्रियतम मुझ को तज चला, यों कहते पुर-लोक ।
पर न जानते स्वप्न में, प्रिय से मम संयोग ॥

122. கனவுநிலை உரைத்தல்

காதலர் தூதொடு வந்த கனவினுக்கு
யாதுசெய் வேன்கொல் விருந்து. 1211

கயலுண்கண் யானிரப்பத் துஞ்சிற் கலந்தார்க்கு
உயலுண்மை சாற்றுவேன் மன். 1212

நனவினால் நல்கா தவரைக் கனவினால்
காண்டலின் உண்டென் உயிர். 1213

கனவினால் உண்டாகும் காமம் நனவினால்
நல்காரை நாடித் தரற்கு. 1214

நனவினால் கண்டதூஉம் ஆங்கே கனவுந்தான்
கண்ட பொழுதே இனிது. 1215

நனவென ஒன்றில்லை யாயின் கனவினால்
காதலர் நீங்கலர் மன். 1216

நனவினால் நல்காக் கொடியார் கனவினால்
என்எம்மைப் பீழிப் பது. 1217

துஞ்சுங்கால் தோள்மேல ராகி விழிக்குங்கால்
நெஞ்சத்தர் ஆவர் விரைந்து. 1218

நனவினால் நல்காரை நோவர் கனவினால்
காதலர்க் காணா தவர். 1219

நனவினால் நம்நீத்தார் என்பர் கனவினால்
காணார்கொல் இவ்வூ ரவர். 1220

सायंकाल के दर्शन से विरह-ताप

प्रिया: शाम से:—

1221. साँझ न तू रे शामहै, जो बिछुड़े परिणीत ।
तू है उनके प्राणहर, ऐसा मुझे प्रतीत ।।

1222. भ्रामक संध्या-काल रे, तू क्यों दुख से दीन ।
प्रियसम तव नाथ भी, बनता दयाविहीन ।।

प्रिया सखी से:—

1223. कंपित सी छवि-हीन सम, संप्रति संध्याकाल ।
मुझे सताता घृणित कर, बिखरा कर दुखजाल ।।

1224. प्रिय जब हाजिर है नहीं, तब यह संध्याकाल ।
वधथल में मारकसदृश, मम घातक विकराल ।।

1225. किया गया है सुबह को, मुझ से क्या उपकार ।
रचा गया है शाम को, मुझ से क्या अपकार ।।

1226. प्रिय के सुयोग-काल में, सुखद रही जो शाम ।
विदित न पहले विरह में, दुखकर हो वह शाम ।।

1227. प्रात-मध्य औ शाम को, कामरोग का फूल ।
कली-पक्व-विकसित-दशा, पाता क्रमानुकूल ।।

1228. गोप-वेणु अब शाम को, शुचि-सम देता ताप ।
और शाम का दूत बन, बनता मारक चाप ।।

1229. चित्त-भ्रमकर शाम को, मेरे सम पुर-लोग ।
विरह-ताप से तप्त हो, पाते हैं दुख-शोक ।।

1230. मेरे अक्षय प्राण अब, विदेश गत धन-हेतु ।
प्रिय की कृति लख शाम ही, बनें मरण के हेतु ।।

123. பொழுதுகண்டு இரங்கல்

மாலையோ அல்லை மணந்தார் உயிருண்ணும்
வேலைநீ வாழி பொழுது. 1221

புன்கண்ணை வாழி மருள்மாலை எம்கேள்போல்
வன்கண்ண தோநின் துணை. 1222

பனிஅரும்பிப் பைதல்கொள் மாலை துனிஅரும்பித்
துன்பம் வளர வரும். 1223

காதலர் இல்வழி மாலை கொலைக்களத்து
ஏதிலர் போல வரும். 1224

காலைக்குச் செய்தநன்று என்கொல் எவன்கொல்யான்
மாலைக்குச் செய்த பகை. 1225

மாலைநோய் செய்தல் மணந்தார் அகலாத
காலை அறிந்தது இலேன். 1226

காலை அரும்பிப் பகலெல்லாம் போதாகி
மாலை மலரும்இந் நோய். 1227

அழல்போலும் மாலைக்குத் தூதாகி ஆயன்
குழல்போலும் கொல்லும் படை 1228

பதிமருண்டு பைதல் உழக்கும் மதிமருண்டு
மாலை படர்தரும் போழ்து. 1229

பொருள்மாலை யாளரை உள்ளி மருள்மாலை
மாயும்என் மாயா உயிர். 1230

अंगों का लावण्य कम होना

सखी प्रिया से

1231. विरह-ताप देकर गया, मेरा नाथ सुदूर ।
उससे दृग अब फूल लख, लज्जा से भरपूर ।।

1232. विवर्ण आंखें अश्रु से, सूचित करती आज ।
हमसे इच्छित नाथ का, निर्दय निष्ठुरकाज ।।

1233. प्रिय के सुयोग समय में, कंधे हुए विशाल ।
सूचित करते वे अभी, कृश हो वियोग-काल ।।

1234. नायक के विश्लेप में, कंधे थे छविहीन ।
हेमवलय गिरने लगे, कृश कर-सम हो क्षीण ।।

1235. च्युतकंगन के साथ ही, कंधे थे गत रूप ।
इंगित करते वे अभी, प्रिय के कठोर-रूप ।।

प्रिया सखी से

1236. च्युतकंगन की बाहें तथा, कंधे तथा न पीन ।
प्रिय को जन कटु बोलते, इससे मैं दुख-दीन ।।

प्रिय मनसे

1237. निर्दय प्रिय से चित्त रे, कह भुज का कृश हाल ।
इससे जो भी श्रेय हो, सो पा तव खुशहाल ।।

प्रिय स्वगत

1238. प्रिय का कर आश्लेष भी, जब थे शिथिलित हाथ ।
वलयधरी का तब बना, पीला तुरन्त माथ ।।

1239. आलिंगन के बीच में, बही हवा जब शीत ।
तब तो पीली हो गयी, स्त्री की आँखें शीत ।।

1240. नारी-रूप-ललाट में, विवर्णता का भेद ।
लखकर दृग को भी मिला, पीलापन का खेद ।।

124. FADING OF BEAUTY

124. உறுப்புநலன் அழிதல்

சிறுமை நமக்கொழியச் சேண்சென்றார் உள்ளி
நறுமலர் நாணின கண். 1231

நயந்தவர் நல்காமை சொல்லுவ போலும்
பசந்து பனிவாரும் கண். 1232

தணந்தமை சால அறிவிப்ப போலும்
மணந்தநாள் வீங்கிய தோள். 1233

பணைநீங்கிப் பைந்தொடி சோரும் துணைநீங்கித்
தொல்கவின் வாடிய தோள். 1234

கொடியார் கொடுமை உரைக்கும் தொடியொடு
தொல்கவின் வாடிய தோள். 1235

தொடியொடு தோள்நெகிழ நோவல் அவரைக்
கொடியர் எனக்கூறல் நொந்து. 1236

பாடு பெறுதியோ நெஞ்சே கொடியார்க்கென்
வாடுதோள் பூசல் உரைத்து. 1237

முயங்கிய கைகளை ஊக்கப் பசந்தது
பைந்தொடிப் பேதை நுதல். 1238

முயக்கிடைத் தண்வளி போழப் பசப்புற்ற
பேதை பெருமழைக் கண். 1239

கண்ணின் பசப்போ பருவரல் எய்தின்றே
ஒண்ணுதல் செய்தது கண்டு. 1240

मन में ही कथन

प्रिया : मन से :

1241. दुखद-मदन के रोग का, यदि है क्या उपचार।
रे मन, मुझ से वह दवा, कह कर सोच-विचार ।।

1242. प्रिय मुझ पर आसक्त नहिं, तो भी चिर रह चित्त।
विषण्ण होना मौढय है प्रिय के विरह निमित्त ।।

1243. रे मन, मुझ में वासकर, क्यों प्रिय में अनुताप।
मुझ पर दुखकर नाथ, को, होता क्या अनुताप ।।

1244. रे दिल, प्रिय को देखने, लोलुप हैं ये नैन।
ले जा इनको साथ ही, ना तो मैं बेचैन ।।

1245. रे मन इच्छित नाथ यदि, नहीं दिखाता प्यार।
तो क्या तजना साध्य है! प्रिय से मेरा प्यार ।।

1246. रे दिल प्रिय यदि दृष्ट हो, तो न दिखाता रोष।
अनुपस्थिति में नाथ की, क्यों करता छल-रोष ।।

1247. शुभ दिल रें, तज कामना अथवा तज लें लाज।
दोनों सहने के लिए, मुझमें नहीं इलाज ।।

1248. मम मन रे आकर यहाँ, प्रिय न दिखाता प्यार।
पर तू चल उसके यहाँ-यह अज्ञान अपार ।।

1249. तेरा प्रिय तुझ में बसें, तो क्यों उसकी खोज।
कर लें जाकर बाह्य में, रे दिल सदैव सोच ।।

1250. प्रिय मुझ को तज कर चला, फिर भी उसकी याद।
करके मन में छविरहित दुबल बना मम गात।

125. COMMUNING WITH THE MIND

125. நெஞ்சொடு கிளத்தல்

நினைத்தொன்று சொல்லாயோ நெஞ்சே எனைத்தொன்றும்
எவ்வநோய் தீர்க்கும் மருந்து. 1241

காதல் அவரில ராகநீ நோவது
பேதைமை வாழிஎன் நெஞ்சு. 1242

இருந்துள்ளி என்பரிதல் நெஞ்சே பரிந்துள்ளல்
பைதல்நோய் செய்தார்கண் இல். 1243

கண்ணும் கொளச்சேறி நெஞ்சே இவையென்னைத்
தின்னும் அவர்காணல் உற்று. 1244

செற்றா ரெனக்கை விடல்உண்டோ நெஞ்சேயாம்
உற்றால் உறாஅ தவர். 1245

கலந்துணர்த்தும் காதலர்க் கண்டால் புலந்துணராய்
பொய்க்காய்வு காய்திஎன் நெஞ்சு. 1246

காமம் விடுஒன்றோ நாண்விடு நன்னெஞ்சே
யானோ பொறேன்இவ் விரண்டு. 1247

பரிந்தவர் நல்காரென்று ஏங்கிப் பிரிந்தவர்
பின்செல்வாய் பேதைஎன் நெஞ்சு. 1248

உள்ளத்தார் காத லவராக உள்ளிநீ
யாருழைச் சேறிஎன் நெஞ்சு. 1249

துன்னாத் துறந்தாரை நெஞ்சத்து உடையேமா
இன்னும் இழத்தும் கவின். 1250

धीरज-खोना

प्रिया : सखी से

1251 लाजमयी अर्गलसहित, धीरजमयी किवाड ।
इच्छा रूपी परशु से, दिया हि जाता फाड ।।

1252. काम नाम का व्यक्ति तो, होकर दयाविहीन ।
निशि में भी मम चित्त को, करता अन्याधीन ।।

1253. काम छिपाने के लिए, मैं हूँ चिन्तनशील ।
अदम्य होकर छींक-सा, वह है प्रकटनशील ।।

1254. मैंने सोचा धैर्य से, काम दबाया जाय ।
बिना छिपे पर काम अब बाह्य प्रकट हो जाय ।।

1255. बिछुडे के अनुगमन बिनु, रहना धृति के साथ ।
कामातुर स्त्री को कभी, नहीं साध्य की बात ।।

1256. मदीय मन्मथ रोग का, कितना भीषण रूप ।
प्रिय गत पथ की चाह हो, जिसके फलस्वरूप ।।

1257. प्रिय यदि इच्छित काम के, काज करे निज साथ ।
लाज नाम की चीज तब, कैसी होगी ज्ञात ।।

1258. स्त्री में थित धृति-दुर्ग का, विनाशकर औजार ।
वंचक पति के विनययुत, वचमय सैन्य अपार ।।

1259. आये प्रिय को छोडकर रिस से चली सुदूर ।
चित्त लग्नता देख मैं बंधनसे भरपूर ।।

1260. अनल तप्त मज्जा सदृश, द्रवित चित्त के लोग ।
किस विधि से सहते रहें, प्रिय का पुनर्वियोग ।।

126. FAILING RESOLVE

126. நிறையழிதல்

காமக் கணிச்சி உடைக்கும் நிறையென்னும்
நாணுத்தாழ் வீழ்த்த கதவு. 1251

காமம் எனவொன்றோ கண்ணின்றென் நெஞ்சத்தை
யாமத்தும் ஆளும் தொழில். 1252

மறைப்பேன்மன் காமத்தை யானோ குறிப்பின்றித்
தும்மல்போல் தோன்றி விடும். 1253

நிறையுடையேன் என்பேன்மன் யானோஎன் காமம்
மறையிறந்து மன்று படும். 1254

செற்றார்பின் செல்லாப் பெருந்தகைமை காமநோய்
உற்றார் அறிவதொன்று அன்று. 1255

செற்றவர் பின்சேறல் வேண்டி அளித்தரோ
எற்றென்னை உற்ற துயர். 1256

நாணென ஒன்றோ அறியலம் காமத்தால்
பேணியார் பெட்ப செயின். 1257

பன்மாயக் கள்வன் பணிமொழி அன்றோநம்
பெண்மை உடைக்கும் படை. 1258

புலப்ப லெனச்சென்றேன் புல்லினேன் நெஞ்சம்
கலத்த லுறுவது கண்டு. 1259

நிணந்தீயில் இட்டன்ன நெஞ்சினார்க்கு உண்டோ
புணர்ந்தூடி நிற்பேம் எனல். 1260

कामुकों का संकट

प्रिया :

1261. लखते प्रिय की राह थक, नयन हुए छविहीन ।
प्रिय-गत-दिन के गणन से, अंगुलियाँ भी क्षीण ।।

1262. रे सखि, यदि मैं आजकल, प्रिय की करूँ न याद।
तो छवि खोकर वलय मम. होगें हो च्युतगात ।।

1263. जिगीषु बन बल धैर्य से, प्रियतम चला विदेश
मैं जीवित इस आश पर, "लौटेगा प्राणेश" ।।

1264. बिछुडा प्रियतम फिर, अभी लौटेगा सहकाम ।
यों विचार कर चित्त मम, पाता है आराम ।।

1265. बिछुडे प्रिय को लौटते यदि फिर देखा जाय ।
विवर्णता मम बाहु की तभी दूर हो जाय ।।

1266. वियुक्त प्रिय यदि एक दिन आते मेरे पास ।
स्मररूज हरने भोग का तो पाती उल्लास ।।

1267. दृगसम मुखिया यार यदि, वापस घर आ जाय ।
तो रूठूं या उर लगूँ, या क्या न किया जाय ।।

प्रिय

1268. राजा लडकर युद्ध में, रिपु विजयी बन जाय ।
हम पत्नीयुत भोज दें, शाम सजायी जाय ।।

1269. प्रोषित के फिर मिलन का दिन विचार करं खिन्न ।
स्त्री को दिन सप्ताह-सम, लम्बा रहें अभिन्न ।।

1270. निराश होकर कामुकी, यदि तज लें निज जान ।
तो फिर उसकी प्राप्ति से. क्या पावें इनसान ।।

127. அவர்வயின் விதும்பல்

வாளற்றுப் புற்கென்ற கண்ணும் அவர்சென்ற
நாளொற்றித் தேய்ந்த விரல். **1261**

இலங்கிழாய் இன்று மறப்பின்என் தோள்மேல்
கலங்கழியும் காரிகை நீத்து. **1262**

உரன்நசைஇ உள்ளம் துணையாகச் சென்றார்
வரல்நசைஇ இன்னும் உளேன். **1263**

கூடிய காமம் பிரிந்தார் வரவுள்ளிக்
கோடுகொ டேறும்என் நெஞ்சு. **1264**

காண்கமன் கொண்கனைக் கண்ணாரக் கண்டபின்
நீங்கும்என் மென்றோள் பசப்பு. **1265**

வருகமன் கொண்கன் ஒருநாள் பருகுவன்
பைதல்நோய் எல்லாம் கெட **1266**

புலப்பேன்கொல் புல்லுவேன் கொல்லோ கலப்பேன்கொல்
கண்அன்ன கேளிர் வரின். **1267**

வினைகலந்து வென்றீக வேந்தன் மனைகலந்து
மாலை அயர்கம் விருந்து. **1268**

ஒருநாள் எழுநாள்போல் செல்லும்சேண் சென்றார்
வருநாள்வைத்து ஏங்கு பவர்க்கு. **1269**

பெறின்என்னாம் பெற்றக்கால் என்னாம் உறின்என்னாம்
உள்ளம் உடைந்துக்கக் கால். **1270**

संकेत प्रकट करना

प्रिय-स्वगत

1271. यद्यपि तुमने विरह-दुख, नहीं किया है व्यक्त ।
पर कर तर कर, नयन तव मतलब करते व्यक्त ।।

1272. रूपलोचनी वंशसम, कंधवती नादान ।
नारी में स्त्रीसुलभ है, ज्यादा ही अज्ञान ।।

1273. मणिमाला के बीच में, सुबद्ध सूत्रसमान ।
प्रिया-कांति के बीच में, दिखती है पहचान ।।

1274. दल-विकसित के पूर्व है यथा कली में बास ।
प्रिया-हास्य के बीच भी, इंगित का आभास ।।

1275. बहुकंगन धर-प्रेयसी, निकली कर संकेत ।
है उस छल-संकेत में औषध सुखद समेत ।।

प्रिया (स्वगत)

1276. पहले प्रेमाधिक्य से, मेल हुआ जी बाद ।
विरह-जनित-रति तजन का, सूचक वह हो ज्ञात ।।

1277. "प्रिय तन से संबन्ध भी, मन से चला सुदूर" ।
पूर्व जानकर यह वलय; कर से गिरते दूर ।।

1278. मुझे छोडकर नाथ मम, चला गया दिन-पूर्व ।
पर तन पर वैवर्ण्य तो, पडा सात-दिन-पूर्व ।।

1279. लखे प्रिया ने पूर्वजो, वलय कंध औ पाद ।
वह भावी विश्लेष का, सूचक होगा ज्ञात ।।

1280. स्मर रूज को प्रकटकर, दृग से कर संकेत ।
अपना अविरह माँगना, स्त्रीत्व शील समवेत ।।

128. குறிப்பறிவுறுத்தல்

கரப்பினுங் கையிகந் தொல்லாநின் உண்கண்
உரைக்க லுறுவதொன்று உண்டு. 1271

கண்நிறைந்த காரிகைக் காம்பேர்தோள் பேதைக்குப்
பெண்நிறைந்த நீர்மை பெரிது. 1272

மணியில் திகழ்தரு நூல்போல் மடந்தை
அணியில் திகழ்வதொன்று உண்டு. 1273

முகைமொக்குள் உள்ளது நாற்றம்போல் பேதை
நகைமொக்குள் உள்ளதொன்று உண்டு. 1274

செறிதொடி செய்திறந்த கள்ளம் உறுதுயர்
தீர்க்கும் மருந்தொன்று உடைத்து. 1275

பெரிதாற்றிப் பெட்பக் கலத்தல் அரிதாற்றி
அன்பின்மை சூழ்வது உடைத்து. 1276

தண்ணந் துறைவன் தணந்தமை நம்மினும்
முன்னம் உணர்ந்த வளை. 1277

நெருநற்றுச் சென்றார்எம் காதலர் யாமும்
எழுநாளேம் மேனி பசந்து. 1278

தொடிநோக்கி மென்றோளும் நோக்கி அடிநோக்கி
அஃதாண்டு அவள்செய் தது. 1279

பெண்ணினால் பெண்மை உடைத்தென்ப கண்ணினால்
காமநோய் சொல்லி இரவு. 1280

मिलन की प्रबल इच्छा

प्रिया :

1281. स्मृति मे मिलता मोद औ, दर्शन से संतोष ।
कामी को, ना मधुप को, स्मरण -दर्श से तोष ॥

1282. तालवृक्ष सम प्रेम यदि, अति वर्धित हो जाय ।
तो प्रेमी से तिल-मात्र भी रिस न दिखाया जाय ॥

1283. पति चाहे इनकार कर, कर लें स्वेच्छाचार ।
तो भी मेरे दृग उसे, लखने नित तैयार ॥

1284. रे सखि मैं करने कलह, चली नाथ के पास ।
कलहभूल, पर मन चला, रख पति-रति की आस ॥

1285. ज्यों दृग कलम न देखते, अंजन लेपन-काल ।
त्यों पति-दोष न देखती, उसके दर्शन-काल ॥

1286. प्रिय जब पडते नजर में, तब न देखती दोष ।
प्रिय जब नहि पडते नजर, तब लखता ही दोष ॥

1287. ज्यो प्रवाह में कूदना, विदित हुए भी वेग ।
प्रिय से करना मान भी, त्यों होगा अविवेक ॥

1288. दुखद समझ भी मधुप का, ज्यों भाता मधु-पान ।
प्रिय तेरे उर पर रे छली, त्यों मैं मुग्ध महान ॥

प्रिय :

1289. मृदुतर होता फूल से, है रति का उपभोग ।
जानबूझकर तत्व यह, फल पाते कुछ लोग ॥

1290. मेरी प्यारी नैन से, करती थी संकेत ।
फिर मुझ से भी दौडकर गले लगी सक्लेद ॥

129. புணர்ச்சி விதும்பல்

உள்ளக் களித்தலும் காண மகிழ்தலும்
கள்ளுக்குஇல் காமத்திற்கு உண்டு. 1281

தினைத்துணையும் ஊடாமை வேண்டும் பனைத்துணையும்
காமம் நிறைய வரின். 1282

பேணாது பெட்பவே செய்யினும் கொண்கனைக்
காணாது அமையல கண். 1283

ஊடற்கண் சென்றேன்மன் தோழி அதுமறந்து
கூடற்கண் சென்றதுஎன் நெஞ்சு. 1284

எழுதுங்கால் கோல்காணாக் கண்ணேபோல் கொண்கன்
பழிகாணேன் கண்ட விடத்து. 1285

காணுங்கால் காணேன் தவறாய காணாக்கால்
காணேன் தவறல் லவை. 1286

உய்த்தல் அறிந்து புனல்பாய் பவரேபோல்
பொய்த்தல் அறிந்தென் புலந்து. 1287

இளித்தக்க இன்னா செயினும் களித்தார்க்குக்
கள்ளற்றே கள்வநின் மார்பு. 1288

மலரினும் மெல்லிது காமம் சிலர்அதன்
செவ்வி தலைப்படு வார். 1289

கண்ணின் துனித்தே கலங்கினாள் புல்லுதல்
என்னினும் தான்விதுப் புற்று. 1290

मन में निर्वेद दिल से रूठना

प्रिया :

1291. मुझे भूलकर नाथ-मन, ठहरा नाथ-सहाय ।
यह लखकर भी चित्त तू, मेरा क्यों न सहाय ॥

1292. पति को निर्दय समझ भी, "वे नहि करें अमर्ष ।
यों विचार कर चित्त क्यों पति-घर चला सहर्ष ॥

1293. मुझे छोडकर चित्त तू जाता प्रिय के पास ।
"आतुर को नहि मित्र हो" शायद तेरी आस ॥

1294. प्रणयकलह बिनु चित्त तू चहता प्रिय का भोग ।
इस में तुझ को कौन दें सलाह का सहयोग ॥

1295. देख न प्रिय को भीति हो, फिर प्रिय वियोग-खेद ।
यों विचार कर चित्त है, पाता सदैव खेद ॥

1296. सोचूँ प्रिय की क्रूरता यदि मम मन एकान्त ।
तो मेरे भक्षक सदृश, दिख पडता दुः खान्त ॥

1297. मन जो प्रिय को भूलने, सदैव अशक्तिमान ।
उस विमूढ मन से सहित, भूली लाज महान ॥

1298. "निंदित करना नाथ को, खुद का है अपमान ।
यों विचार कर चित्त, है करता प्रिय-गुणगान ॥

1299. यदि दुख हरने के लिए, खुद मन नहीं सहाय ।
तो इस विभु संसार में, बनता कौन सहाय ॥

1300. स्वीय चित्त यदि बंधु का, करता नहीं बचाव ।
तो स्वाभाविक और में, बंधु बचाव- अभाव ॥

130. நெஞ்சொடு புலத்தல்

அவர்நெஞ்சு அவர்க்காதல் கண்டும் எவன்நெஞ்சே
நீஎமக்கு ஆகா தது. 1291

உறாஅ தவர்க்கண்ட கண்ணும் அவரைச்
செறாஅரெனச் சேறிஎன் நெஞ்சு. 1292

கெட்டார்க்கு நட்டார்இல் என்பதோ நெஞ்சேநீ
பெட்டாங்கு அவர்பின் செலல். 1293

இனிஅன்ன நின்னொடு சூழ்வார்யார் நெஞ்சே
துனிசெய்து துவ்வாய்காண் மற்று. 1294

பெறாஅமை அஞ்சும் பெறின்பிரிவு அஞ்சும்
அறாஅ இடும்பைத்தென் நெஞ்சு. 1295

தனியே இருந்து நினைத்தக்கால் என்னைத்
தினிய இருந்ததுஎன் நெஞ்சு. 1296

நாணும் மறந்தேன் அவர்மறக் கல்லாஎன்
மாணா மடநெஞ்சிற் பட்டு. 1297

எள்ளின் இளிவாம்என்று எண்ணி அவர்திறம்
உள்ளும் உயிர்க்காதல் நெஞ்சு. 1298

துன்பத்திற்கு யாரே துணையாவார் தாமுடைய
நெஞ்சம் துணையல் வழி. 1299

தஞ்சம் தமரல்லர் ஏதிலார் தாமுடைய
நெஞ்சம் தமரல் வழி. 1300

वियोग

सखी:-

1301. देखें थोड़ी देर तक, प्रिय के दुख का ताप ।
तदर्थ बिन आश्लेष तू, रिसयुत, रह चुपचाप ।।

1302. अमित नमकयुत भोजसम, अमित विरह हो व्यर्थ ।
भोजसदृश मित लवणयुत, मित-वियोग ना व्यर्थ ।।

प्रिया:- (दिल में)

1303. वियुक्त स्त्री का शोक-हर, जो न करें उर-योग ।
शोकी को फिर दुखदसम, उसको समझें लोक ।।

1304. रूठे स्त्री को शांत कर, सुयोग किया न जाय ।
म्लान लता-जड-छेदसम, जग में वह बन जाय ।।

प्रिय:- (दिल में)

1305. कुसुमदृगी स्त्री-चित्त में थित बहु वियोग-बात ।
शुभगुणधारी पुरूष को शोभाकर हो ज्ञात ।।

1306. विरह-रूठ बिन प्रेमरस, तथा नहीं सुस्वाद ।
अपक्व औ अतिपक्व फल, यथा न ही सुस्वाद ।।

1307. "सुरत-हर्ष चिर या नहीं" यों यदि सोचा जाय ।
तो सुखमूलकविरह में, भी इक दुख ठहराय ।।

प्रिय:- (प्रकट)

1308. 'प्रिय मदर्थ होगा व्यथित', यों चिन्तित भी खेद ।
प्रिया न करें तो न नफा कहने से निज खेद ।।

1309. ज्यों शीतल तरू-छाँहमें, मिलता जल सुस्वाद ।
प्रेमी जन का विरह भी, त्यों होता सुस्वाद ।।

प्रिया :

1310. यदपि विरह में नाथ ने, मुझ को तजा सखेद ।
फिर भी उसका मिलन ही चहता मेरा चेत ।।

131. புலவி

புல்லா திராஅப் புலத்தை அவர்உறும்
அல்லல்நோய் காண்கம் சிறிது. 1301

உப்பமைந் தற்றால் புலவி அதுசிறிது
மிக்கற்றால் நீள விடல். 1302

அலந்தாரை அல்லல்நோய் செய்தற்றால் தம்மைப்
புலந்தாரைப் புல்லா விடல். 1303

ஊடி யவரை உணராமை வாடிய
வள்ளி முதலரிந் தற்று. 1304

நலத்தகை நல்லவர்க்கு ஏஎர் புலத்தகை
பூஅன்ன கண்ணா ரகத்து. 1305

துனியும் புலவியும் இல்லாயின் காமம்
கனியும் கருக்காயும் அற்று. 1306

ஊடலின் உண்டாங்கோர் துன்பம் புணர்வது
நீடுவ தன்றுகொல் என்று. 1307

நோதல் எவன்மற்று நொந்தாரென்று அஃதறியும்
காதலர் இல்லா வழி. 1308

நீரும் நிழலது இனிதே புலவியும்
வீழுநர் கண்ணே இனிது. 1309

ஊடல் உணங்க விடுவாரொடு என்நெஞ்சம்
கூடுவேம் என்பது அவா. 1310

वियोग का रहस्य

प्रिया:

1311. दृगसे तव उर-सौख्य हैं पाती समस्त नार ।
इसी लिए उर-सौख्य तव, ना पाऊँगी, जार ।।

1312. मौनी थी, मैं रूठकर, प्रियने देकर छींक ।
मुझ से चिरायु माँगने, यों सोचा हो ठीक ।।

प्रिय :

1313. "दर्शित करने और को रचित मण्डनाकार" ।
यों कह भूषित नाथ से कुपित रही थी दार ।।

1314. "हम सब से प्रिय दम्पती" सुन यह मेरी बात ।
"किससे बढकर प्रिय बता" वह बोली रिस-साथ ।

1315. मैं बोला न हम कभी, बिछुडेंगे आजन्म" ।
स्त्री सुन यह रोने लगी विचार भावी जन्म ।।

1316. "सुमिरण तव करता रही" सुन यह मेरी बात ।
स्त्री बोली तजकर मुझे, "क्यों भूले थे बाद" ।।

1317. मैंने क्षति की, प्रेयसी बोली "जिन्दाबाद" ।
फिर रो बोली छींक की क्यों किस की कर याद ।।

1318. छींक रोकने मैं लगा वियोग से हो भीत ।
स्त्री रो बोली" रोक मत तुझ पर किसका प्रीत ।।

1319. आश्वासन की युक्ति से मेरी प्यारी तुष्ट ।
"औ स्त्री को भी युक्ति यह" बोली होकर रूष्ट ।।

1320. जब मैं लखता दार का अंग-रूप-संस्थान ।
तब वह सकोप बोलती" तुलना का क्या स्थान ।।

132. THE SECRET OF (Temporary) - (TIFF) SEPARATION

132. புலவி நுணுக்கம்

பெண்ணியலார் எல்லாரும் கண்ணின் பொதுஉண்பர்
நண்ணேன் பரத்தநின் மார்பு. **1311**

ஊடி யிருந்தேமாத் தும்மினார் யாம்தம்மை
நீடுவாழ் கென்பாக்கு அறிந்து. **1312**

கோட்டுப்பூச் சூடினும் காயும் ஒருத்தியைக்
காட்டிய சூடினீர் என்று. **1313**

யாரினும் காதலம் என்றேனா ஊடினாள்
யாரினும் யாரினும் என்று. **1314**

இம்மைப் பிறப்பில் பிரியலம் என்றேனாக்
கண்ணிறை நீர்கொண் டனள். **1315**

உள்ளினேன் என்றேன்மற்று என்மறந்தீர் என்றென்னைப்
புல்லாள் புலத்தக் கனள். **1316**

வழுத்தினாள் தும்மினே னாக அழித்தழுதாள்
யாருள்ளித் தும்மினீர் என்று. **1317**

தும்முச் செறுப்ப அழுதாள் நுமர்உள்ளல்
எம்மை மறைத்திரோ என்று. **1318**

தன்னை உணர்த்தினும் காயும் பிறர்க்குநீர்
இந்நீரர் ஆகுதிர் என்று. **1319**

நினைத்திருந்து நோக்கினும் காயும் அனைத்துநீர்
யாருள்ளி நோக்கினீர் என்று. **1320**

मान में हर्ष

प्रिया:

1321. प्रिय की यद्यपि भूल नहि तो भी उन पर मान ।
आपस में अति नेह का प्रेरक है तू जान ।।

1322. लघु दुख उत्थित रूठ से, प्रिय रति-छेदन-मूल ।
यदपि रहें तो भी वही, होगा महत्व-मूल ।।

1323. भू में जल संमिलितसम, प्यारे पति से मान ।
सुखद रहें इससे कभी, है क्या त्रिदिव महान ।।

1324. प्रिय से परिरंभणकर, योग मूल है मान ।
उस में मम मन छेद कर, सैन्य उदित बलवान ।।

प्रिय:-

1325. अदोष बिछुडे नाथ को, कोमल स्त्री का कंध ।
छूने को यदपि न मिलें, तो भी है आनंद ।।

1326. जीर्ण अन्न है अशन से ज्यों देता आनंद ।
मान मिलन से त्यों अधिक देता है आनंद ।।

1327. जो हारा है मान में, वह पाता है जीत ।
मिलन हर्ष में तत्व यह, होगा ही निर्णीत ।।

1328. स्वेदविराजित भालयुत, मिलन मूल जो सौख्य ।
क्या मुझ को फिर मान से, हाजिर हो वह सौख्य ।।

1329. लालसुशोभित प्रेमिका, कर लें अजस्र जान ।
याचन करता मै रहूँ विस्तृतनिशि तुजान् ।।

1330. प्रणयकलह रतिभोग में सुखकर माना जाय ।
मिलन सौख्य से मान ही सुखकर समझा जाय ।।

133. THE JOY OF A TIFF

133. ஊடலுவகை

இல்லை தவறவர்க்கு ஆயினும் ஊடுதல்
வல்லது அவர்அளிக்கு மாறு. 1321

ஊடலில் தோன்றும் சிறுதுனி நல்லளி
வாடினும் பாடு பெறும். 1322

புலத்தலின் புத்தேள்நாடு உண்டோ நிலத்தொடு
நீரியைந் தன்னா ரகத்து. 1323

புல்லி விடாஅப் புலவியுள் தோன்றுமென்
உள்ளம் உடைக்கும் படை. 1324

தவறில ராயினும் தாம்வீழ்வார் மென்றோள்
அகறலி னாங்கொன்று உடைத்து. 1325

உணலினும் உண்டது அறல்இனிது காமம்
புணர்தலின் ஊடல் இனிது. 1326

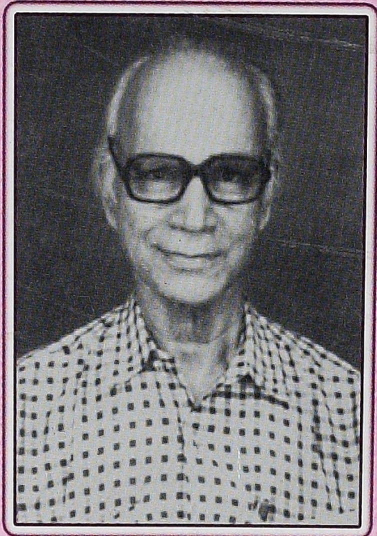
ஊடலில் தோற்றவர் வென்றார் அதுமன்னும்
கூடலில் காணப் படும். 1327

ஊடிப் பெறுகுவங் கொல்லோ நுதல்வெயர்ப்பக்
கூடலில் தோன்றிய உப்பு. 1328

ஊடுக மன்னோ ஒளியிழை யாமிரப்ப
நீடுக மன்னோ இரா. 1329

ஊடுதல் காமத்திற்கு இன்பம் அதற்கின்பம்
கூடி முயங்கப் பெறின். 1330

सूचना:– जिस प्रकार र और ल में भेद नहीं उसी प्रकार व और ब में भेद नहीं । जहाँ बिंदी आवश्यक नहीं वहाँ उसके बिन पढ़ें । जहाँ बिंदी आवश्यक है वहाँ बिंदी के साथ पढ़ें । ईकार चिह्नी ओकर चिह्नी संदर्भ के अनुसार पढ़ने की कृपा करें । ओ और औ में भी भेद नहीं जैसे त्योहार-त्यौहार ।



Other Works by the same Author :

1. Daya Satakam
2. Mukundamala
3. Bhaja Govindam
4. Lagu Ramayanam
5. Naaladiyar
6. Bhagavat Geeta
7. Bhoo Sthuti
8. Godhasthuti
9. Niyasadasakam
10. Kamasikashtakam
11. Sri Sthuti
12. Bharathiyar's Kannan Pattu

VASANTHA BOOK PUBLISHER
1, Hanumantharayan Koil Street,
Triplicane, Chennai - 600 005.
Phone : 28442126